द्वादश चरित्र संग्रह

छत्तीसगढ़ समता प्रचार संघ
कुरुदी, जिला धमतरी (म.प्र.) ४९३७७[illegible]

संकलन
सज्जनसिंह मेहता
संयोजक
समता प्रचार संघ

प्रकाशक
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर-334005

द्वादश चरित्र संग्रह

संकलन :
सज्जन सिंह मेहता
संयोजक, समता प्रचार संघ

प्रथम संस्करण :
2100 प्रतियां
अगस्त १९९९, वि.सं. 2056, वीर संवत् 2525

अर्थ सहयोगी :
1.मूलचन्द, प्रकाशचन्द, सुन्दरलाल सुराणा, नोखागांव
2. शान्तिलाल, राजेन्द्र प्रसाद वैद, नोखामंडी

मूल्य : 22/-
रियायती मूल्य (अर्थ सहयोग पश्चात) : 10/-

प्रकाशक :
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर-334005

मुद्रक :
अमित कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स
बीकानेर दूरभाष : 547073

संग्राहक की कलम से

समता प्रचार संघ गत 21 वर्षों से पर्युषण पर्व के पावन प्रसंग पर भारत के विभिन्न स्थानों पर सुयोग्य स्वाध्यायियों को भेज कर समाज को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। स्वाध्यायी अपनी सेवाएं निःशुल्क प्रदान करते हैं तथा उन्हें आवश्यक साहित्य समता प्रचार संघ द्वारा प्रदान किया जाता है।

पर्युषण पर्व के दौरान स्वाध्यायी प्रार्थना, अन्तगड़ सूत्र का वाचन, व्याख्यान, चरित्र वाचन, कल्पसूत्र वाचन, उभय काल प्रतिक्रमण, प्रश्नोत्तर आदि कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। कथा का व्याख्यान में विशेष महत्त्व है। कथा जब काव्य रूप में संकलित की जाकर गेय-शैली में (गाकर) प्रस्तुत की जाती है तो विशेष आकर्षक एवं प्रभावशाली बन जाती है। इस शैली को चरित्र वाचन या चौपाई वाचन के रूप में जाना जाता है। यह शैली बहुत प्रचलित है, जिसका उपयोग संत मुनिराज-महासतियांजी म.सा. तो करते ही हैं, स्वाध्यायी भी पर्युषण पर्व के अवसर पर इसका उपयोग करते हैं। प्राचीन जैन कथाओं के आधार पर कई कवियों ने समय-समय पर छोटे-बड़े अनेक चरित्रों को काव्य रूप देकर चौपाइयों (चरित्रों) का सृजन किया है।

स्वाध्यायियों की सामान्यतया यह मांग रही है कि पर्युषण पर्व के पावन अवसर पर चरित्र वाचन (चौपाई वाचन) हेतु उपयोगी चरित्रों का संकलन कर एक ही पुस्तक उपलब्ध की जावे। अतः मैंने स्वाध्यायियों के लिए उपयोगी छोटे, मध्यम एवं बड़े आकार के बारह चरित्रों का संकलन तैयार किया है। विद्वान कवि हृदय संतों ने इन चरित्रों की संरचना की है, मैंने तो विभिन्न स्थानों से इन रचनाओं का संकलन मात्र किया है। आशा है यह संकलन स्वाध्यायियों एवं व्याख्यान प्रेमियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

सज्जनसिंह मेहता, संयोजक
समता प्रचार संघ

प्रकाशकीय

प्रस्तुत कृति बारह चौपाईयों का संकलन है, जो पर्युषण पर्वाराधना हेतु अष्ट दिवसीय प्रवचनों के पश्चात् उत्कृष्ट जीवन उन्नायक चरित्रों की प्रस्तुति द्वारा प्रेरणादायक हैं। अतः इसकी समता प्रचार संघ के स्वाध्यायियों हेतु विशेष उपादेयता है।

समता प्रचार संघ के संयोजक श्री सज्जनसिंह जी 'साथी' बड़ीसादड़ी, जो स्वयं भी प्रबुद्ध स्वाध्यायी हैं, ने विभिन्न चौपाईयों में से उत्कृष्ट रचनाओं को संकलित किया है। इन चौपाईयों में उन महानुभावों के जीवन वृतान्त हैं जिन्होंने जीवन की ऊंची नीची अवस्थाओं को समभाव के साथ जीते हुए संयम धारण किया व सिद्ध, बुद्ध हो गये।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ ने इस वर्ष को समता स्वाध्याय वर्ष के रूप में घोषित किया है। आचार्य भगवन् 1008 श्री नानालालजी म.सा., युवाचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. एवं स्थविर प्रमुख विद्वद्वर्य श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. ने अनेक भाई-बहिनों को प्रेरित कर समता प्रचार संघ के तत्त्वावधान में स्वाध्यायी बन कर सेवाएं देने हेतु तैयार किया है। अन्यान्य स्थानों पर भी सन्त मुनिराजों एवं महासतियांजी म.सा. ने अच्छी संख्या में

स्वाध्यायी तैयार किये हैं। सभी स्वाध्यायियों के लिए यह प्रकाशन प्रवचनोपरान्त चरित्र प्रस्तुति में सहायक होगा, यही आशा एवं विश्वास है।

नोखा गांव के सुराणा परिवार एवं नोखामंडी के स्वर्गीय श्री सोहनलालजी बैद के सुपुत्रों के अर्थ सौजन्य से इस कृति का प्रकाशन किया गया है अतः वे साधुवाद के पात्र हैं।

विश्वास है कि इन संकलित चौपाईयों में समाहित कथानकों को आत्मसात कर श्रद्धालुजन, साधकवर्ग व स्वाध्यायी बन्धु आत्म दर्शन, आत्म साक्षात्कार व अन्तरावलोकन के मार्ग में अग्रसर होंगे व भाव शुद्धि कर चेतना का ऊर्ध्वारोहण करने की दिशा में पथारूढ़ होंगे।

भवदीय

गुमानमल चोरड़िया संयोजक	शान्तिलाल सांड अध्यक्ष	सागरमल चपलोत महामंत्री

भंवरलाल कोठारी केशरीचन्द सेठिया मोहनलाल मूथा
धनराज बेताला डा. संजीव भानावत
(सदस्यगण, साहित्य समिति, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

अनुक्रमणिका

१. सुदर्शन चरित्र

धन सेठ सुदर्शन शियल शुद्ध, पाली तारी आतमा। टेक।

सिद्ध साधु को शीष नमा के, एक करूं अरदास।
सुदर्शन की कथा कहूं मैं, पुरो हमारी आस। धन.।१।

चम्पापुरी नगरी अति सुन्दर, दधीवाहन तिंहा राय।
पटरानी अभिया अति प्यारी, रूप कला शोभाय। धन.।२।

तिन पुर सेठ श्रावक दृढ़ धर्मी, यथा नाम जिन दास।
अर्हदासी नारी अति खासी, रूप शील गुण खास। धन.।३।

दास सुभग बालक अति सुन्दर, गौवें चरावन हार।
सेठ प्रेम से रखे नेम से, करे सार संभार। धन.।४।

एक दिन जंगल में मुनि देखे, तन मन उपज्यो प्यार।
खड़ा सामने ध्यान मुनि में, विसर गया संसार। धन. ।५।

गगन गये, मुनिराज मंत्र पढ़, बालक घर को आया।
सेठ पूछते मुनि दर्शन के, सभी हाल सुनाया। धन.।६।

प्रमुदित भावे सेठ कहे धन, मुनि दर्शन ते पाया।
अपूर्ण मंत्र को पूर्ण करके, शुद्ध भाव सिखलाया। धन. ।७।

शिखा मंत्र नवकार बाल जब, मन में करता ध्यान।
ऊठत बैठत सोवत जागत, बस्ती और उद्यान। धन.।८।

एक दिन जंगल से घर को आता, नदिया आई पूर।
परली तीर जाने को बालक, हुआ अति आतुर। धन.।९।

धर के ध्यान नवकार मंत्र का, कूद पड़ा जल धार।
खैर खूंट घुस गया उदर में, पीड़ा हुई अपार। धन.।१०।

छोड़ा नहीं नवकार ध्यान को, तत्क्षण कर गया काल।
जिन दास घर नारी कूंखे, जन्मा सुन्दर लाल। धन.।११।

बालक रखा नाम सुदर्शन, वर्त्या मंगलाचार।
घर–घर रंग बधावनासरे, पुर में जय जयकार। धन.।१२।

पंच धाय हुलसावे लाल को, पाले विविध प्रकार।
चंद्रकला सम बढ़े कुंवरजी, सुन्दर अति सुकुमार। धन.।१३।

कला बहोत्तर अल्प काल में, सीख हुआ विद्वान।
प्रौढ़ पराक्रमी जान पिता ने, किया ब्याह विधि ठान। धन.।१४।

रूप कला यौवन वय सरीखी, सत्यशील धर्मवान।
सुदर्शन और मनोरमा की, जोड़ी जुड़ी महान। धन.।१५।

श्रावक व्रत दोनों ने लीना, पौषध और पचखान।
शुद्ध भाव से धर्म आराधे, अढलक देवे दान। धन.।१६।

किया सेठ ने काल, कुंवर ने, जब पाया अधिकार।
पर उपकारी पर दुःखहारी, निराधार आधार। धन.।१७।

नगर सेठ पद राय प्रजा मिल, दिया गुणोदधि जान।
स्वकुटुम्ब सम सब की रक्षा, करते तज अभिमान। धन.।१८।

कपिल पुरोहित विविध विद्याधर, सुदर्शन से प्रीत।
लोह चुंबक सम मिल्यां परस्पर, सरीखे सरीखी रीत। धन. ।१९।

पुरोहित नारी महा–व्यभिचारी, कपिला कुटिल कठोर।
सेठ कीर्ति सुनसुन्दर तन की, व्याप्यो मन्मथ जोर। धन.।२०।

पति गये परदेश सेठ पै, बोली कपट विशेष।
पति हमारा अति बीमारा, चलो चलो तज शेष। धन.।२१।

प्रीति बंधाना सेठ सियाना, आया कपिला साथ।
अंदर लेकर हावभाव से, बोली मन्मथ बात। धन.।२२।

महिषी सींग में डाँस डंक सम, लगे न इसको बोल।
दाँव उपाय से यहां से निकलूं, करते मन में तोल। धन. ।२३।

अपछर सम तुम नारी प्यारी, मम नव यौवन काय।
कौन चुके ऐसे अवसर को, मिल्यो योग सुखदाय। धन. ।२४।

हतभागी हूं मैं सुन सुभगे, अन्तराय के जोर।
संढपना है मेरे तन में, व्यर्थ मनोरथ तोर। धन.।२५।

हे दुर्भागी ! जा दुर्भागी, धिक् मैं खोई बात।
धिक् मेरे अज्ञान पति को, रहता तेरे साथ। धन.।२६।

देव गुरु की मुझे प्रतिज्ञा, कहूं न तेरी बात।
तुम भी निश्चय नियम करोरी, लाज मेरी तुम हाथ। धन.।२७।

नियम कराया बाहर आया, मन पाया विश्राम।
बाधिन के मुख से मृग बच के, पाया निज आराम। धन.।२८।

लिया नियम पर घर जाने का, जहाँ रहती हो नार।
निज घर रहके धर्म आराधे, शियल शुद्ध आधार. ।धन.।२६।

नृप आदेशे इन्द्र उत्सवे, चले सभी पुर बार।
सज श्रृंगारी चली नृप नारी, कपिला उसकी लार। धन.।३०।

पाँच पुत्र संग मनोरमाजी, चली बैठ रथ मांय।
कपिला निरखी अति मन हर्षी, रानी को बतलाय। धन. ।३१।

सती सावित्री लक्ष्मी गौरी से, अधिकी इनकी काय।
किस घर यह नारी सुखकारी, शोभा वरणी न जाय। धन.। ३२।

राणी कहे सुन पुरोहिताणी, सेठ सुदर्शन नार।
सत्य शियल और नियम धर्म से, इसका शुद्ध आचार। धन. ।३३।

मुंह मचकोड़ी तन को तोड़ी, हंसी कपीला उस बार।
भेद पूछती अति हठ धरती, कहो हंसी प्रकार। धन. ।३४।

नारी नपुंसक की व्यभिचारी, जन्म्या पुत्र इस पांच।
तुम जो बोली शीयलवती है, यही हंसी का सांच। धन. ।३५।

कैसे जाना हाल सुनावो, कही बीतक सब बात।
राणी बोली मतिमन्द तोरी, हारी सुदर्शन साथ। धन. ।३६।

छल से तुझको छली सुघड़ ने, तू नहीं पाया भेद।
त्रियाचरित्र का भेद न समझी, व्यर्थ हुआ तुझ खेद। धन. ।३७।

मुझसे जो नहीं छला जाएगा, वह नर सब से शूर।
सुर असुर नागेन्द्र नारी से, टले न उसका नूर। धन. ।३८।

अरि मूर्खा मत बोलो ऐसी, नारी चरित जो जाने।
सुर असुर योगिन्द्र सिद्ध को, पलक डाल वश आने। धन. ।३९।

व्यर्थ गर्व मत करो रानीजी, मैं सब विधि कर छानी।
सदर्शन नहिं चले शील से, यह बात लो मानी। धन. ।४०।

जो मैं नारी हूं हुशियारी, सुदर्शन वश लाऊं।
नहिं तो व्यर्थ जगत में जीके, तुझे न मुंख दिखलाऊं। धन. ।४१।

सुदर्शन को जो वश लावो, तो तुम रंग चढ़ाऊं।
नारी चरित की पूरी नायिका, कह के मान बढ़ाऊं। धन. ।४२।

करी प्रतिज्ञा हो निर्लजा, क्रीड़ा कर घर आई।
धाय पंडिता से बात सुनाई, लोभ से वह ललचाई। धन. ।४३।

घाट घड़ा नाना विध जब मन, एक उपाय मन आया।
कौमुदी महोत्सव निकट आवे जब, काम करुं मन चाया। धन. ।४४।

काम देव की करी प्रतिमा, महोत्सव खूब मंडाया।
बाहिर जावे अन्दर लावे, सब जन को भरमाया। धन. ।४५।

कार्तिक पूर्णिमा कौमुदी महोत्सव, नृप पुर बाहिर जावे।
सुदर्शनजी नृप आज्ञा से, पौषध व्रत को ठावे। धन. ।४६।

कर प्रपंच अभिया मुर्छाणी, नृप बोले युं वाणी।
कौन उपाधी तुम तन बाधा, कहो कहो महरानी। धन. ।४७।

हुंहुंकार करे नृप नारी, शब्द न एक उचारे।
धाय पंडिता कपट चरित्रा, खोटी जाल पसारे। धन. ।४८।

महाराजा तुम युद्ध सिधाये, राणी देव मनावे।
जो आवे सुख से महाराजा, तो प्रीतीति तुम पावे। धन. ।४६।

कार्तिक पूर्णिमा महोत्सव पूरा, बिन बाहर नहीं जाऊं।
विसर गई ऐ नाथ साथ तुम, ताके फल दर्शाऊं। धन. ।५०।

आप करो अरदास नाथ यों, माफ करो तुम देव।
महारानी को भेजूं महल में, करे तुम्हारी सेव। धन. ।५१।

त्रिया चरित्र वश हो के राजा, हाथ जोड़ सब बोला।
त्रिया चरित्त को देव न जाणे, भेद ग्रन्थ ने खोला। धन. ।५२।

कपट छोड़ रानी जब जागी, दासी बात बनाई।
भूपत को भरमाई महल गई, रानी हर्ष भराई। धन. ।५३।

धन्य पडिता तब चतुराई, अच्छी बात बनाई।
आज महल ले आवो सेठ को, जोग बना सुखदाई। धन. ।५४।

मूर्ति लेकर गई बाहर को, पहरेदार भरमाई।
पौषधशाला सेठ सुदर्शन, मूर्ति फेंक ले आई। धन. ।५५।

पौषध मौन सेठ नहीं बोले, बैठा ध्यान लगाई।
अभिया कर श्रृंगार के, खड़ी सामने आई। धन. ।५६।

हाथ जोड़ अमृत सम मीठा, बोले मुख से बोल।
मैं रानी तुम पुर–जन मानी, सरखे सरीखी जोड़। धन. ।५७।

कल्पवृक्ष सम काया थारी, मैं अमृत की बेली।
मौन खोल निरखो मुझ नयना, ध्यान ढ़ोंग दी मेली। धन. ।५८।

करूं जतन तुम जाव जीव लग, प्राण बरोबर मान।
तन धन जोबन तुम पर अर्पन, अबसे लो यह जान। धन. ।५६।

व्यर्थ जन्म मुझ गया आज लग, खबर न तुमरी पाई।
आज सुदिन यह हुआ सेठजी, धाय पंडित लाई। धन. ।६०।

बोले नहीं जब सेठ रानी ने, लिया नेत्र चढ़ाई।
नयन बान को मारे खेंच के, पाँव घुंघर घमकाई। धन. ।६१।

पहना शील–सनाह सेठ ने, धीरज मन में लाई।
ज्ञान खडग से छेदे बान को, रानी गई मुरझाई। धन. ।६२।

वर्षा ऋतु सम बनी भामिनी, अम्बर बदन बनाई।
हुंकार की ध्वनि गाज सम, तन दामन दमकाई। धन. ।६३।

अमोघ धरा वचन वर्षाती, चाह भूमि भीजोई।
मंग शैल सम सेठ सुदर्शन, भेद न सके जी कोई। धन. ।६४।

करुणा स्वर से रोवे कामिनी, पूरो हमारी आस।
शरणगत मैं आई तम्हारे, मानों मम अरदास। धन. |६५ |

अवसर देख सेठ तब बोला, सुनो सुनो बड़ मात।
पंच मात में तुम अग्रेसर, तज दो खोटी बात। धन. |६६ |

तजदे यह तोफान सुदर्शन, मैं नहीं तेरी मात।
मूर्खा कपिला ते भरमाई, मुझे छला तू चहात। धन. |६७ |

मेरू डगे धरती धूजेस या, सूर्य करे अंधकार।
तो पण शील छोडूं नहीं माता, सच्चा हैं निरधार। धन. |६८ |

सुन कर वचन नयन कर राता, बाघिन जेम बिफराय।
मानो नहीं तुम मेरे वचन को, यमपुर देऊं पहुंचाय। धन. |६९ |

बात हाथ है सुन रे बनिया, अब भी कर तू विचार।
रूठी काल कतरनी हूं मैं, तूठी अमृत धार। धन. |७० |

महा वात से मेरू न कंपे, अभिया सेती सेठ।
ज्ञान वैराग्य आत्मबल बलिया, यह है सबमें जेठ। धन. |७१ |

त्यागा तब श्रृंगार नार ने, विकल करी निज काय।
शोर करी सावन्त को तेड़े, जुल्म महल के मांय। धन. |७२ |

पुर–जन सह नर नाथ बाग में, मुझे अकेली जान।
महा लंपट मुझ तन पर धाया, रखा धर्म अभिमान। धन. |७३ |

पुर मंडन यह सेठ सोभागी, घर अपछर सम नार।
आंबे आक न लागे कदापि, सेठ छोड़े किम कार। धन. |७४ |

सोच करे सरदार रानी तब, बोली कठिन करार।
रे रजपूत रंक होय क्यों, करते ढीलमढ़ाल। धन. |७५ |

सुभट सेठ की देह राय पै, लाये खास हजूर।
देख सेठ की देह राय मन, हो गया चकनाचूर। धन. ।७६।

कंचन ऊपर कीट लगे किम, सूर्य करे अंधकार।
चन्द्र आग वर्षावे तथापि, शेष चले न लिगार। धन. ।७७।

पास बुला यों नरपति पूछे, कहो किम बिगड़ी बात।
अगर सांच मैं बात कहूं तो, होवे मात की घात। धन. ।७८।

पुण्य पाप है किया जो मैंने, वे हैं मेरे साथ।
मौन रहे नहीं बोले सेठजी, नरपति से कुछ बात। धन. ।७६।

बहुत पूछने पर नहीं बोले, तब नृप सांची जानी।
आये महल निज नार देखने, वो सूती खूंटी तानी। धन. ।८०।

बांह पकड़ नृप बैठी कीनी, ते बोली रीस भराय।
धिक है तुमरे राज कोस जहाँ, लंपट वणिक बसाय। धन. ।८१।

देखो यह मम गात वणिक ने, कैसे नाखे हाथ।
शील रख्यो मैं नाथ और तो, बिगड़ी सारी बात। धन. ।८२।

मैं जीवूं या सेठ जियेगा, निश्चय लेवो जान।
सुर नारी के वचन राय के, मन मे आई तान। धन. ।८३।

कोप करी कहे राय सेठ को, देखो शूली चढ़ाय।
धिक् २ नारी जाल कोय कॉइ, नृप को दिया फंसाय। धन. ।८४।

सुभट सेठ को पकड़ शूली का, पहनाया श्रृंगार।
नग़र चोवटे ऊभो करके, बोले यों ललकार। धन. ।८५।

यो सुदर्शन सेठ नगर को, धर्मी नाम धराय।
पर तिरिया के पाप सेस यो, शूली चढ़वा जाय। धन. ।८६।

पड़ी नगर जब खबर लोग मिल, आये राय दरबार।
राख राख महाराय सेठ को, विनवे बारम्बार। धन.।८७।

दातारॉं सिर सहेरो सरे, पुर–जन जीवन सार।
सुदर्शन जो चढ़े शूली तो, जीना हमें धिक्कार। धन.।८८।

व्योम–फूल सम बात बनी यह, सेठ न मूके शील।
नारी वश महाराज आज मत, डालो धर्म को पील। धन. ।८९।

झूठा मूका बेन जगत में , यह सच्चा लो जान।
विध २ से मैं पूछा सेठ को, उखलत नहीं जबान। धन. ।९०।

चार ज्ञान चउदे पूरबधर, मोह उदय गिर जाय।
सेठ बिचारो कौन गिनत में, यों लो चित समझाय। धन.।९१।

तुम ही पूछो सेठ कहे कुछ, उस पर करें विचार।
नहीं बोले तो शूली देने का, सच्चा है निरधार। धन. ।९२।

महा भाग तुम मुखड़े बोलो, जो है सच्ची बात।
बिन बोल्यां से सेठ सुदर्शन, होत धर्म की घात। धन. ।९३।

सत्य धर्म का मर्म जान के, रह्या मौन को धार।
हार खाय जन मनोरमा को, कहा सभी निरधार। धन. ।९४।

सुन मुरझाई मूर्च्छा आई, पड़ी धरणी कुमलाई।
पांचों पुत्र तब माँ–माँ करते, पड़े गोद में आई। धन.।९५।

चेत हुवो चिंते जब मन में, हुई न होवे बात।
शील चुके नहीं पति हमारो, नियम धर्म विख्यात। धन. ।९६।

नहीं निकली घर बाहर सेठानी, धीरज मन में धार।
दियो बोध पांचों पुत्रन को, एक धर्म आधार। धन.।९७।

सत्य न मरता सुनो पुत्र तुम, झूठ न मुझे सुहाय।
आज सेठ शूली से उतरे, तो मैं निरखूं जाय। धन.। ९८।

धर्म रूप पति की पत्नि मैं, उस पर चढ़ा कलंक।
सूर्य ग्रसा है आज राहु ने, जंग में व्यापा पंक। धन. । ९९।

धर्म ध्यान दो दान लालजी, पाप राहु टल जाय।
पिता तुम्हारे सुदर्शनजी, रवि रूप प्रगटाय। धन. ।१००।

माता पुत्र मिल ध्यान लगाया, प्रभु तेरो आधार।
जो बचे आज ये पिता हमारे, होवे जय जयकार। धन. ।१०१।

कोई प्रशंसे कोई निन्दे, सेठ शूली पर जाय।
लाखों नर रहे देख तमाशा, सेठ न मन घबराय। धन. ।१०२।

सागारी अनशन व्रत लीनो, पाप अठारह त्याग।
जीव खमाये शान्ति भाव से, द्वेष न किसमें राग। धर.।१०३।

महा योगेश्वर धरे ध्यान त्यों, जिन मुद्रा को धार।
ध्यान धरे नवकार मन्त्र का, और न कोई विचार। धन.।१०४।

इसी मन्त्र के ध्यान सेठ ने, तजे पूर्व भव प्राण।
डिगेदेव सिंहासन उससे, महिमा मन्त्र की जान। धन.।१०५।

शील सत्य अरु दया साधना, लगी मन्त्र के साथ।
हिए हुलसते देव गगन में, आये जोड़े हाथ। धन.।१०६।

सुभट सेठ को धरे शूली पर, हाहाकार का नाद।
शूली स्थान पै हुआ सिंहासन, बजे दुंदुभी नाद। धन.।१०७।

छत्र धरे और चंवर बींजे, वर्षे कुसुमा धार।
ध्वजा उड़त है विजय जयन्ती, सुर बोले जयकार। धन.।१०८।

मन में सोचे सेठ सुदर्शन, शील गुण सिरताज।
धिक् धिक् है अभिया रानी को, निपट गमाई लाज। धन. ।१०६।

जग जन मुखते करते कीर्ति, गई राय के पास।
दधिवाहन नृप आया दौड़के, धर मन में हुल्लास। धन.।११०।

खमो खमो अपराध हमारा, वार वार महा भाग।
धर्म मर्म नहीं जाना तुम्हारा, नारी चाले लाग। धन.।१११।

सुनी बात जब मनोरमा ने, पुलकित अंगन मांय।
पाँच पुत्र संग पति दर्शन को, शीघ्र चल कर आय। धन.।११२।

राय प्रजा मिल पतिव्रता को, सिंहासन बैठाय।
दम्पति जोड़ा देख देव नर, मन में अति हर्षाय। धन.।११३।

जय जय हो सुदर्शन सेठ को, जयो मनोरमा मात।
धर्म तीर्थ की जुड़ी जातरा, पुर–जन बहु हर्षात। धन.।११४।

शाह धरे सब आये बधाये, मोती चौक पुराय।
देव गये निज स्थान रायजी, बोले मंगल वाय। धन.।११५।

धर्म मंडना पाप खंडना, तुम चरणे सुपशाय।
हुई न होवे इस जग मांहि, सब जन साख पुराय। धन.।११६।

नहीं चीज जग में कोई ऐसी, चरन चढाऊं लाय।
तथापि मुझ पै मेहर करीने, मांगो तुम हुलसाय। धन.।११७।

राय तुम्हारे रहते राज में, मिला धर्म का सहाय।
और कामना मुझे न कुछ भी, माता साता पाय। धन.।११८।

सुनी सेठ के बैन सभी जन, अचरज अधिको पाय।
शत्रु को समभाव दिखाया, महिमा वर्णी न जाय। धन. ।११६।

एक सभासद् कहता सुनिये, सेठ गुणों की खान।
नम्रभाव और दयाभाव से, सबका रखता मान। धन. ।१२०।

जो अपने को लघु समझता, वो ही सब में महान।
गुरुता में अकड़ाई रखता, वो सब में नादान। धन. ।१२१।

स्वारथ रत हो करे नम्रता, यही कुटिल की बान।
बिना स्वार्थ ही करे नम्रता, सज्जन जन गुणवान। धन. ।१२२।

यद्यपि रानी महा अज्ञानी, कीना महा अकाज।
तथापि सेठ तुम्हारे खातिर, अभय देऊंगा आज। धन. ।१२३।

सुनी बात अभिया हुई सभिया, पाप का यह परिणाम।
गले फास ले तजे प्राण को, गमाया अपना नाम। धन. ।१२४।

धाय प्राण ले भगी महल से, पटना पहुंची जाय।
वेश्या घर में नीच भाव से, रह के उदर भराय। धन. ।१२५।

अवसर देख सेठ मन दृढ़ कर, लीनो संयम भार।
उग्र बिहार विचरतां आया, पटना शहर मझार। धन. ।१२६।

देख मुनि को धाय पंडिता, मन में लाई रोष।
हीरनी वेश्या करी समीक्षा, बहकाई भर जोश। धन. ।१२७।

कला-कुशल जब ही तुम जानुं, इनसे विलसो भोग।
ऐसा नर नहीं इस दुनिया में, रूप कला गुन जोग। धन. ।१२८।

बनी कपट श्राविका वेश्या, मुनि भिक्षा को आया।
अन्दर लेके तीन दिवस तक, नाना विध ललचाया। धन. ।१२६।

ध्यान ध्रुव रह्या मुनीश्वर, वेश्या तज अभिमान।
वन्दन कर मुनी को छोड़े, वन में जा धरा ध्यान। धन. ।१३०।

अभिया व्यंतरी आय मुनि को, बहुत किया उपसर्ग।
प्रतिकूल अनुकूल रीति से, अहो कर्म का वर्ग। धन.।१३१।

मुनि रंग में रंगी गणिका, पाई सम्यक् ज्ञान।
शुद्ध हृदय में कृत पापों का, कर पश्चात्ताप महान। धन.।१३२।

धाय पंडिता से कहती वेश्या, मुनि गुण अपरंपार।
दंभ मोह अब हटा है मेरा, पाई तत्त्व का सार। धन.।१३३।

अब ऐसा श्रृंगार सजूंगी, तज आभूषण भार।
सोना चाँदी हीरा मोती का, लूंगी नहीं आधार। धन.।१३४।

कज्जल टीकी पान तजूंगी, मेहंदी प्रेम हटाय।
सत्य प्रेम के रंग में रंगकर, दिल मुनिजी में लगाय। धन.।१३५।

जगतारक जिस पथ से गये हैं, लूंगी धूलि उठाय।
तन पे मलके पावन बनके, सज्ज करुंगी काय। धन.।१३६।

मुनि विरह में आँसु बहाऊं, मानों यह मुक्ताहार।
ऐसी सजीली बन के रंगीली, पाऊं भव–जल पार। धन.।१३७।

सम्यक् सहन किया मुनिजी ने, धरतां शुक्ल ध्यान।
क्षपक–श्रेणी मोह नाश कर, पाया केवल ज्ञान। धन.।१३८।

आये देवता महोत्सव करने, करते जय जयकार।
देवे देशना प्रभु सुदर्शन, भवी जीव हितकार। धन.।१३९।

सुलट गई अभिया व्यंतरी भी, पाई सम्यक् ज्ञान।
छुरी छेदने गई पारस को, कनक रूप हुई जान। धन.।१४०।

हाथ जोड़ वंदन कर बोले, धन्य धर्म अवतार।
खमो–खमो अपराध हमारा, मैं दुर्भागन नार। धन.।१४१।

नीचों में अति नीच कर्म में, कीना पातिक पूर।
दिया दुख मैंने महामुनि को, कर कर कर्म करूंर। धन. ।१४२।

मंगल गावे देवी देवता, मुनि गुण अपरम्पार।
महा पातकी सुधरी व्यंती, पाई समकित सार। धन.।१४३।

ग्राम नगर पुर पाटन विचरत, किया धर्म उद्धार।
भव जीव उद्धार मुनिजी, पहुंचे मोक्ष मझार। धन.।१४४।



२. सती लीलावती चरित्र

अनन्त ज्ञान दर्शनमयि मुनिसुब्रत जिनराज,
सिद्ध बुद्ध तीरथपति तारण तरण जहाह।।१।।

अरहद्वाणी शारदा, सद्गुरु शीश नमाय।
सत्य शील महिमा लिखुं, मंगल तीन मनाय।।२।।

(तर्ज ख्याल की)

शुद्ध शीलवान के, चरणों में नमते देवी देवता।।टेर।।

वित्तभयपुर पाटण नगरी, मानो अमर विमान।
रय्यत सुखी भूपति न्यायी, मंत्री महा विद्वान।।१।।

वसे उसी नगरी के अन्दर, करोड़पति सहुकार।
करोड़ अठारह सोनयों से, भरा हुआ भंडार।।२।।

सुशोभित धनदत्त नाम से, कनकवती घर नार।
नीति कहती गृहस्थी के, सन्नारी घर सिंणगार।।३।।

मर्यादा से करे कमाई, श्रावक व्रत अपनाया।
षड्गुणधारी सेठानी ने, जीवन मधुर बनाया।।४।।

सुख का अनुभव करके दम्पति, प्रसवी कन्या एक।
नाम लीलावती स्थापना कीना, चतुर कला विवेक।।५।।

यहां रही यह बात सुनो अब, आगे का अधिकार।
पुरी कौशम्भी इसी भरत में, नगर एक गुलजार।।६।।

नामी सेठ बसे वहां सागर, धन करोड़ छत्तीस।
है वह श्रमणोपासक श्रावक, गुण भरया इक्वीस।।७।।

सोमश्री सेठानी घर में, जिसके लड़के चार।
धनराज और बच्छराज है, हंस हृदय का हार।।८।।

विवाह कर दिया त्रय पुत्रों का, अब चौथा श्रीराज।
विनयवान सदाचारी है, चारों में सिरताज।।६।।

पुण्य प्रबल है विश्व बीच में, सुनना सब ही लोग।
इच्छा पूरण होवे पुण्य से, सकल मिले संयोग।।१०।।

उसी नगर में रहे दूसरा, श्रवण सेठ गुणवन्त।
गुण श्री भार्या के अंगज का, नाम दिया रतिकन्त।।११।।

वित्तभयपुर पाटण में दूजा, सेठ मुकुन्द धनवान।
उनकी कन्या कनकवती है, गुणवन्ती पुण्यवान।।१२।।

रतिकन्त से करी सगाई, आया परणवा काज।
कई बराती के संग में है, सागरदत्त श्री राज।।१३।।

विवाह रीत सब पूरी कीनी, खरची द्रव्य अपार।
श्रीराज की लख पुण्याई, धनदत्त करे विचार।।१४।।

निज कन्या दूं इसे सेठ–सागर से सलाह मिलाई।
राय मिली दोनों की धनदत्त, लीला को परणाई।।१५।।

करोड़ अठारह का धन दे फिर, कन्या को समझाय।
सासु ससुरा निज प्रियतम की, रहना आज्ञा मांय।।१६।।

सीख लेय कर चले बराती, कौशम्बी में आया।
सुख अनुभव कर रहे दम्पति, स्वकृत शुभ फल पाया।।१७।।

माता मर गई लीलावती की, पिता बने अणगार।
मिली सूचना जब यह उसको, रोई आँसू डार।।१८।।

नहीं पीहर में कोई भाई, कौन ओढ़ावे चीर।
परिजन पुरजन मिलकर के कई, उसे बंधाया धीर।।१६।।

आठ योजन है कौशम्बी से, अटवी एक महान।
रुगा नामक ठग रहता है, पर धन पर नित ध्यान।।२०।।

आया कौमुदी महोत्सव मोटा, भूपति पडह बजाय।
करो प्रेम से राग रंग, नर नारी बाहिर जाय।।२१।।

महीप हुकम से लोग जा रहे, कर–कर सब सिणगार।
अशन पान उत्सव करने को, सारे बाग मुझार।।२२।।

ससुर हुकम से चारों बहुऐं, आई है उद्यान।
रूगा ठग भी आ पहुंचा है, इन चारों पर ध्यान।।२३।।

उत्सव स्थल से सब नर नारी, लौटे संध्याकाल।
डाकू इन चारों के पीछे, चला सभी को टाल।।२४।।

प्रथम बहू कहे मेरे घर पर, सब विधि विलास।
कोई बात की कमी नहीं है, कहाँ तक करूं प्रकाश।।२५।।

ऐसे बहू दूजी तींजी ने, निज निज हाल बताया।
लीलावती लघु लाड़ी का, सुनकर दिल भर आया।।२६।।

सर्व सामग्री थी पीहर में, पर किस्मत की बात।
माता मरी पिता दीक्षा ली, नहीं हुआ कोई भ्रात।।२७।।

एक मामाजी है मोसाल में, वे रहते परदेश।
नहीं देखा जिनदास नाम है, जानुँ यही विशेष।।२८।।

कदाच जीवित होय भाग्यवश, कभी मिलेगा आय।
ठग पीछे आता है इसका, पता किसी को नाय।।२९।।

सुख पूर्वक चारों ही ललना, पहुंच गई निज धाम।
रुगा ठग सुनकर हरषाया, होगा इच्छित काम।।३०।।

नाम ग्राम का पता लगा डाकू, दस दिन पश्चात।
रूप बनाया माना ऐसा, व्यापारी विख्यात।।३१।।

धोती अचकन पहनी पगड़ी, बांधी तल्लादार।
चला सवारी कर घोड़ी की, नौकर लीना लार।।३२।।

रथ सजाकर लाया संग फिर, कौशम्बी में आया।
लीलावती को ठगने के कारण, दंभी दंभ रचाया।।३३।।

पुर में बात करी, परणाई यहां मेरी भाणेज।
सागर सुत श्रीराज जमाई, जिसकी किस्मत तेज।।३४।।

रुकवाया रथ आप आय, फिर ब्याईजी के द्वार।
उतर अश्व से प्रसन्न वदन, सागर से किया जुहार।।३५।।

मम भाणी से मिलने हित मैं, बहुत दूर से आया।
पूछा कुशल क्षेम आपस में, परिवार हरषाया।।३६।।

कहाँ सयानी लीला भाणी, आय नमाया शीश।
सिर कर धर कहे चिरजीव हो, ऐसी दी आशीष।।३७।।

तुझ से मिलने की वर्षों से, थी मेरे मन आश।
देख मुझे आनन्द में इच्छा, पूरी हो गई खास।।३८।।

ताजा सरस बनाकर भोजन, आदर सहित जिमाया।
इस प्रकार उस ठग से कई दिन, रह कर आदर पाया।।३६।।

लीला तू जन्मी जिस अवसर, पट भूषण नहीं लाया।
विवाह हुवा जब था विदेश, मोसारा नहीं पहिनाया।।४०।।

अय लीला ! एकाकी मुझको, है प्राणों से प्यारी।
तेरी मामी कहती निशिदिन, भाणी कहां हमारी।।४१।।

सासु और श्वसुर से लीला, अनुनय अर्ज गुजारी।
मामाजी के घर जाऊँ जो, अनुमति मिले तुम्हारी।।४२।।

जावो भले ही खुशी खुशी पर, पीछी जल्दी आना।
बिठा रथ में लीलावती को, हो गया धूर्त रवाना।।४३।।

उलट पंथ अटवी मे आकर, किया रूप विकराल।
लीलावती भयभीत हो गई, देख दूसरी चाल।।४४।।

विषयांध विह्वल हो कहे अब, किया मैं जो कुछ काम।
मेरी इच्छा पूरण करदे, जो चाहे आराम।।४५।।

मामा होकर बोल रहे हो, तज कुल की मर्याद।
आँख दिखा डाकू कहे सुनले, बन्द करदे बकवास।।४६।।

किससे कर रही बात, कौन मामा, किसकी भाणेज।
बुद्धि बल से लाया तुझको, करण सुन्दरी सेज।।४७।।

वस्त्राभूषण छीन उसे ले चला, विहड़ बन मांय।
रथारुढ़ हुई लीला सोचे, करना कौन उपाय।।४८।।

शील रतन का यत्न करूंगी, चाहे कुछ हो जाय।
संकट शमन इसी से हो, जिनवाणी रही बताय।।४६।।

कई प्रकार का दिया प्रलोभन, कई भांति धमकाया।
सारे मारग में समझाता, उसको निज घर लाया।।५०।।

अय जननी ! तेरी सेवा हित, मैं लाया यह नार।
डोसी खुश हो कहे रहो यह, तेरा ही घर द्वार।।५१।।

सती श्रवण कर सोचे अब तो, करना यही उपाय।
रहे शील मेरा दुष्टों का, फन्दा भी कट जाय।।५२।।

सुन माता मेरी यूं कह रही, सती दिखाकर प्रेम।
एक मास तक शील पालना, ले रक्खा है नेम।।५३।।

नियम सिवा सब कार्य करूं, जो आज्ञा देंगे आप।
डोसी सुन बोली सुत से, बहू मिली पुण्य प्रताप।।५४।।

सुन माता की बात रूगा ठग, बैठा धीरज धार।
लीला दे विश्वास सभी पर, जमा लिया अधिकार।।५५।।

एक समय ठग से यूं बोली, युवक सुनो मुझ बैन।
पीसन काज नहीं घर चक्की, ये खटकत दिन रैन।।५६।।

पर घर जाना योग्य नहीं है, नित्य पीसन के काज।
चक्की लावों मेरे घर से, आप जायकर आज।।५७।।

हे प्यारी ! धर धीरज मन में, नहीं कर फिकर लगार।
वो ही चक्की लाकर दूंगा, करता हूं इकरार।।५८।।

जननी से कहकर कौशम्बी, ठग आया तत्काल।
चक्की लेकर चला वहाँ से, कहूं पीछे का हाल।।५६।।

भोजन तुरत बना कर ताजा, मादक द्रव्य मिलाय।
सती सास को शीघ्र बुला, वही भोजन दिया जिमाय।।६०।।

थौड़ी देर बाद नशे ने, दीना जोर दिखाय।
हुई छकाछक डोसी की सब, शुद्ध बुद्ध गई विहाय।।६१।।

ठग ठग कर किया माल इक्ट्ठा, जगह जगह से लाय।
किया सती ने अपने कब्जे, कुछ भी छोड़ा नाय।।६२।।

उल्टी मुस्की बांध उसे मुख, दीना श्याम बनाय।
मार पीटकर डाल सदन में, ताला दिया लगाय।।६३।।

चली वहाँ से अश्वारूढ़ हो, नर का वेष बनाय।
चक्की सिर पर लीए ठग मिला, उस जंगल के मांय।।६४।।

निज घोड़ी पर देख अन्य नर, ठग मन पड़ा विचार।
अश्व मेरा ले जाता कोई, शूर वीर सरदार।।६५।।

करूं सामना अगर अभी तो, यह नहीं जीता जाय।।
राह छोड़ उन्मार्ग पथ निकाला, जल्दी पाँव बढ़ाय।।६६।।

नगर निकट आ सती शीध्र, निज रूप लिया पलटाय।
दाम देय रथ किया किराये, अनुचर ले संग मांय।।६७।।

कौशम्बी के बाग बीच में, आकर किया मुकाम।
सेवक संग संदेशा भेजा, सुसराजी के धाम।।६८।।

सुनी खबर जब परिवार ने, कई जन सन्मुख आया।
रथ पर बिठा उसे आदर से, अपने घर पर लाया।।६९।।

रक्खा माल श्वसुर के सन्मुख, कही यूं बात बनाय।
आ न सके मामाजी वहां रहे, धन्धे में उलझाय।।७०।।

चक्की लेकर ठग घर आ रहा, होता हुआ खुशाल।
बन्द द्वार पर लगा है ताला, लखकर हुआ मलाल।।७१।।

कहां गई ललना और माता, देती नहीं दिखाय।
इतने शब्द सुना रोने का, बन्द सदन के मांय।।७२।।

ताला तोड़ निकाली उसको, पूछा सारा भेद।
वह दुष्टा सब माल साथ ले, गई कलेजा छेद।।७३।।

कुपित हुवा सुन ठग कहे माता, फिकर करो अब नाय।
उस पापिन को तो बस मैं ही, दूंगा मजा चखाय।।७४।।

रूप बना कर ठग योगी का, कौशम्बी में आया।
कपटी के करणी का अब तक, भेद कोई नहीं पाया।।७५।।

फिरता फिरता गया एक दिन, उसी हवेली पास।
वो ही ललना बैठी हुई है, उसी सदन के ग्वाक्ष।।७६।।

सावधान है पूरी क्योंकि, ठग का किया विरोध।।
जान रही है अवश्य एक दिन, वह लेगा प्रतिशोध।।७७।।

इस प्रकार का निश्चय कर, की सासु से अरदास।
लगे नहीं मन किंचित यहाँ पर, रहता सदा उदास।।७८।।

हुकम होय रहुं उस घर में, जो है बीच बजार।
अवश्य निवास करो वहां जाकर, जो तुमको श्रेयकार।।७६।।

दम्पति रहते एक दिन आया, ठग बन सुवर्णकार।
उसे बुलाया दासी द्वारा, कर रही बात विचार।।८०।।

इत उत धूम रहे किस कारण, कौन नाम क्या ग्राम।
नगीनदास नाम मेरा, सोना घड़ने का काम।।८१।।

फिरता हूं आजीविका हित, कोई काम बतावे।
सती कहे घड़ना जानो तो, काम बहुत मिल जावे।।८२।।

कई अंगुठियें बनवाना, जो यहाँ रह करो घड़ाई।
ठहरा ठग दिन चार बाद, सती अपनी कला चलाई॥८३॥

मादक वस्तु डाल सरस, भोजन कर उसे जिमाई।
बना बेसुध तब पीली पन्नी, सारे तन चिपकाई॥८४॥

कनक पोरषा सदृश करके, गठड़ी बांध उठाया।
वृक्ष तले रक्खा जंगल में, चोर चार चल आया॥८५॥

एक एक गठडी चारों पासे, है चोरी का माल।
तू लाई क्या पास तुम्हारे, पूछा इस विध हाल॥८६॥

कनक पुरुष है मेरे पास जो, पुन्योदय से पाया।
दिन में काटे बढ़े निशि में, गुण इस में बतलाया॥८७॥

जन्म दरिद्र कहे चारों ही, कर दे आज निहाल।
कनक पौरषा दे दे ले ले, सब गांठों का माल॥८८॥

लीलावती दे दिया पौरषा, गांठे ले घर आई।
चारों कनक पुरुष ले चाल्या, बहुत खुशाली छाई॥८९॥

आगे देखा एक जलाशय, शीतल जल गंभीर।
पानी पीने ठहरे चारो, गठड़ी रख रहे तीर॥९०॥

लगा उतरने जोश नशे का, ठग को आया भान।
बोला, देखो भग नहीं जावे, रखना इसका ध्यान॥९१॥

कनक पुरुष तो कभी न बोले, ये क्या, हो गई बात।
वस्त्र हटा देखे अन्दर तो, बंधा मिला निज भ्रात॥९२॥

बंधव हाल तुम्हारा यह क्या, तब बतलाया भेद।
माल हमारा भी सब ले गई, तुम्हें बनाकर कैद॥९३॥

बनी बात को बिसरो अब तो, ऐसा करो उपाय।
अपन सब मिल उस नारी का, बदला लेवें जाय।।९४।।

कुछ दिन के पश्चात चोर सब, मन में साहस धार।
नार हरण करने कौशम्बी, आये निशि मुझार।।९५।।

सती सो रही जिस मकान में, उसके तोड़े द्वार।
पलंग सहित ले चले उठाके, होकर मध्य बजार।।९६।।

भरी आग हांडी में इक नर, आगे रोता जाय।
निकल गये बेधड़क नगर से, खुश होते मन मांय।।९७।।

नींद खुली देखा चौतरफा, जंगल काली रात।
मन में निश्चय किया आज फिर, पड़ी ठगों के हाथ।।९८।।

आतम रक्षा कैसे करना, सोती सोती सोचे।
मस्त नशे में चलते वे सब, बड़ के नीचे पोंचे।।९९।।

वहीं खड़े कुछ देर हो गई, लेने को विश्राम।
डाल पकड़ सती अधर हो गई, ले जिनवर का नाम।।१००।।

निकल गये ठग सती उतर कर, आई अपने स्थान।
पलंग शून्य देख ठग बोले, कर गई फिर हैरान।।१०१।।

अटवी में निज घर पहुंचे सबं, करते पश्चाताप।
सिद्ध मनोरथ होवे कैसे, जिसके उर में पाप।।१०२।।

बुद्धि शालिनी सोचे लीला, आगे की हर बार।
कब आये क्या कर बैठे ठग, रहती आलस टार।।१०३।।

दिन में सोवे रात में जागे, करके भवन प्रकाश।
पांचों ठग फिर आ पहुंचे, दे–दस दिन का अवकाश।।१०४।।

बारी देख खुली एक ने सोचा, होगा मन धारा।
एक दूजे पर चढ़ मुख डाला, सती ने नाक उतारा।।१०५।।

नीचे उतर कहे साथीं से, देखो तो इस ओर।
इस जीवन में अचरज ऐसा, नहीं देखा किस ठोर।।१०६।।

चढ़ा दूसरा ऊपर झटपट, खिड़की में मुख डाला।
उसको भी पहिले के जैसे, नकटा करी निकाला।।१०७।।

क्रमशः हालत उन पांचों की, हो गई एक समान।
नाक बिना होके घर पहुंचे, देख हंसे इन्सान।।१०८।।

जहाँ तहाँ मिलते लोग पूछते, कहाँ कटाया नाक।
बीती बात बता नहीं सकते, रहते हैं मुख ढांक।।१०९।।

अब निश्चय कर लिया सभी ने, चोरी कभी न करना।
पेट भराई करने कारण, खेती में चित धरना।।११०।।

एक बार लड्डू मोदक का, लीलावती बनाया।
ठग–जननी के पास आयके, सादर शीश नवांया।।१११।।

हे माता ! तू भूल गई है, करती कभी न याद।
भ्रात हो गया है निर्मोही, परणायाँ के बाद।।११२।।

इस प्रसंग से उस बुढ्ठी को, हुवा न कुछ भी वहेम।
बेटी अपनी खास मानकर, बहुत बताया प्रेम।।११३।।

रुगा ठग की मां तब बोली, ऐसा कैसे होय।
जन्म देय अपनी बेटी को, कैसे भूले कोय।।११४।।

पुत्री तू निर्मोही हो गई, ली नहीं साल संभाल।
कष्ट समय क्यों बिसर गई, मां बोलो आँसू डाल।।११५।।

कौन बात का दुःख माता जब, हैं यहाँ भ्राता भोजाई।
बेटी ! वह बहु थी महाकपटन, सारी कथा सुनाई।।११६।।

कष्ट तेरे भाई को देकर, ले गई घर का धन।
इस कारण कर बंद ठगाई, भाई बोंवे अन्न।।११७।।

वह तो रहता सदा खेत पर, संध्या प्रातः काल।
वहाँ पहुंचाना पड़ता भोजन, यह हैं घर का हाल।।११८।।

अशुभ कर्म के कारण माता, ऐसा गर हो जाय।
चिन्ता फिर उसकी नहीं करना, रहना समता लाय।।११६।।

यहां चलकर के आई दूर से, फिर भी मिला न भाई।
थी उमंग मिलने की मुझको, भाई हित मोदक लाई।।१२०।।

लड्डू और भोजन ले माता, गई खेत की ओर।
बचा हुवा धन था जो कुछ, लाई लीला निज ठोर।।१२१।।

बेटा ! तू तो यहाँ बैठा घर, आई बहिन तुम्हारी।
लड्डू तेरे खातिर बढ़िया, लाई संग विचारी।।१२२।।

प्रसन्न हुए पांचों मोदक ले, लगे जीमने सारे।
लड्डू एक एक ले फोड़ा, निज निज नाक निहारे।।१२३।।

पड़ी भवानी पीछे सबके, खाना किया हराम।
बुरा किया है इसके छेड़के, बदला लिया तमाम।।१२४।।

क्षमा माँग लें इससे सब मिल, तो है अपनी खेर।
वरना यह कुछ और करेंगी, होती नार दिलेर।।१२५।।

वेष लेय के तस्कर पाँचों, पास सती के आया।
हाथ जोड़ पांवा पड़ बोले, माफ करो महामाया।।१२६।।

चोरी कर्म नहीं करने का, जाव जीव पच्छखान।
निर्भय हमको अब कर दीजे, नहीं भूलें, एहसान।।१२७।।

देकर के उपदेश सभी को, धर्मी किया विशेष।
कर सम्मान माल देके कहा, रहना सुखी हमेश।।१२८।।

सती शील की सुनकर महिमा, सज्जनों ने गुण गाया।
कुछ नर कर रहे इसमें शंका, भेद सती ने पाया।।१२९।।

निज अपवाद निभाने के हित, जपे जिनंद का जाप।
कैसे संकट टले सती का, यह सब अब सुनना आप।।१३०।।

उसी समय वहां के राजा ने, करवाया ऐलान।
उत्सव मनाने जाना सब जन, पुर बाहिर मैदान।।१३१।।

बन ठन पुरजन गये बाग में, आया राजकुमार।
डंसा फणिधर नृप नन्दन को, मच गया हाहाकार।।१३२।।

बुला मंत्रवादी कइयों को, करवाया उपचार।
व्यर्थ उपाय हो गये सारे, बैठे हिम्मत हार।।१३३।।

तभी हुई नभ से सुरवाणी, नृप ! सुन एक उपाय।
कुंभ एक कच्चा लेकर के, कच्चा सूत बंधाय।।१३४।।

नीर निकाले नार कूप से, फिर डाले जल धार।
जहर नष्ट हो जाए सारा, जीवे राजकुमार।।१३५।।

करवाया उद्घोष भूप ने, दो कोई जीवन दान।
उस उपकारिन का जीवन भर, मानूंगा एहसान।।१३६।।

लीलावती आ करी भूप से, नत मस्तक अरदास।
कार्य बनेगा धर्म प्रभावे, है मुझको विश्वास।।१३७।।

जाहिर हो गई बात सभी में, आय डटे नर नारी।
इष्ट देव का सुमिरण करके, काढ्यो कूप से वारि।।१३८।।

अंजली भरके जल छांटा, हो गई निर्विष काया।
राजा रय्यत धन्यकर, उसको घर पहुंचाया।।१३६।।

सुश्रद्धालु बने कई, कई व्रत किये स्वीकार।
मिटा सर्व अपवाद धर्म से, हो गया मंगलाचार।।१४०।।

सुमति श्रमण मुनिश्वर आये, बहुत मुनि परिवार।
श्रद्धा से वन्दन को धाये, नराधींप नर नार।।१४१।।

मुनि बताए भेद धर्म के, आगारी अणगार।
कई जीवों के रूचा हृदय में, कर लीना स्वीकार।।१४२।।

निज निज सुत को सौंप दिया, घर सागर सेठ भूपाल।
बने संयमी मुख पर बाँधी, मुख पति डोरा डाल।।१४३।।

गुरुदेव से ज्ञान सीख, संयम में चित्त रमाया।
क्षपक श्रेणी कर क्षय धनपाती, केवल दर्शन पाया।।१४४।।

भव जीवों के काज जहाज सम, श्री सागर वीतराग।
एक समय विचरत आये हैं, कौशम्बी के बाग।।१४५।

सुना आगमन खुशी हो गया, नर नारियों का वृन्द।
दरशन करके वीतराग का, पाया परमानन्द।।१४६।।

प्राणी मात्र हित बैठ सभा में, अमृत कण बरसाया।
सुलभ बोधि हलुकर्मी का, हृदय कमल विकसाया।।१४७।।

पांचों ही ठग और लीलावती, को आया वैराग।
कर संयम स्वीकार पाप के, धो डाले सब दाग।।१४८।।

कर कर्मों का नाश लीलावती, पाया पद निर्वाण।
पांचों मुनि चारित्र पालकर, पहुंचे अमर विमान।।१४६।।

चरित्र पुरातन देख रची यह, रचना उस अनुसार।
शील रतन की रक्षा करना, होगा जय जयकार।।१५०।।

दशपुर वर्षावास उन्नीसौ, इक्काणु के साल।
चार संत संग रहे प्रेम से, वरत्या मंगल माल।।१५१।।

श्रावण महीना कृष्णपक्ष तिथि, बारस मंगलवार।
गुरु कृपा से मुनि हजारी, किया चरित्र तैयार।।१५२।।

शाँति ! शाँति ! ! शाँति ! ! !



३. सुव्रत सुज्ञानी

केशरिया मुनिवर ज्योति जगाई, केवल ज्ञान की टेर।

कुल ऊंचे में जन्म लिया है, सुव्रत ने हितकार।
अष्ट सिद्धि नव निधि घर में, पाई अपरम्पार हो।१।

षट् रस भोजन राग रागिनी, स्नेह भरा परिवार।
केशरिया मोदक अति प्यारा, हर दम ही तैयार हो।२।

अन्तर शान्ति फिर भी चाहे, करता विविध उपाय।
शुंभकर आचार्य पधारे, दिया स्वरूप बताय हो।३।

जाग उठा वह क्षण के मांही, मोह निद्रा दी त्याग।
वर्ष अट्ठारह भरी जवानी, लगा धर्म अनुराग हो।४।

गुरु चरणों में दीक्षा लेकर, चिन्तन में तत्काल।
बारह [1] भेदे करे तपस्या, जिन आज्ञा अनुसार हो।५।

समता ऋजुता मृदुता धारी, यती [2] धर्म अनुसार।
जिन आगम [3] अभ्यास करे नित प्रतिभा श्रेष्ठ विचार हो।६।

---

१. बारह तपस्या :– १. अनशन २. अवमोदयं ३. भिक्षाचर्या ४. रस परित्याग ५. काय क्लेश ६. प्रति संलीनता ७. प्रायश्चित ८. विनय ६.वैयावृत्य १०.स्वाध्याय ११. ध्यान १२. व्युत्सर्ग।

२. यतिधर्म १० :– १. क्षमा २. मुक्ति ३. आर्जव ४. मार्दव ५. लाघव ६. सत्य ७. संयम ८. तप ६. त्याग १०. ब्रह्मचर्य।

३. जिनागम :– १. आचारांग २. सूत्र कृतांग ३. स्थानांग ४. समवायांग ५. व्याख्या प्रज्ञिप्त (भगवती) ६. ज्ञाताधर्मकथांग ७. उपासकदशांग ८. अन्तकृत दशांग ६. अनुत्तरोपपातिक १०. प्रश्न व्याकरण ११. विपाक और १२. दृष्टिवाद सूत्र

अप्रमत्त साधना लख मुनि की, स्थविर भी चकराय।
योग्य शिष्य को पाकर गुरुवर, मन में अति हर्षाय हो।७।

गणिवर राजगृह में आये, संग शिष्य परिवार।
श्रावक इक भी नहीं पहुंचा, तब मुनिगण करे विचार।८।

राजगृह के संघ के मांही, भक्ति का नहीं पार।
फिर भी अचरज होता अति ही, पहुंचा नहीं इस बार हो।९।

इतने में वहां संघ शिरोमणि, पहुंच पड़े चरणार।
मोदक महोत्सव राजगृही में, घर–घर में तैयार हो।१०।

मोदक महोत्सव के कारण ही, पहुंचे नाथ कृपाल।
क्षमा याचना श्रावक करते, उपदेश सुन निहाल हो।११।

किस वस्तु से मोदक बनते, पूछ रहे मुनिराय।
नाना विध वस्तु से बनते, पोजीशन को पाय हो।१२।

सर्व श्रेष्ठ केशरिया मोदक, सर्व भांति श्रेयकार।
शोभा सुनकर मुनि सुव्रत के, मन में उठे विचार हो।१३।

स्वादपूर्ण गुण सुनते ही मन, जग गई उत्कट चाह।
सास उसास झट–झट ही लेवे, मुंह से निकसी आह हो।१४।

आज दिवस तो गरिष्ट भोजन, राजगृही के मांय।
मुनि सुव्रत को छोड़ सभी ने, व्रत लीने हर्षाय हो।१५।

सुव्रत मुनि मन में यों सोचे, सब ने किया उपवास।
भिक्षा खातिर मैं ही जाऊं, पूर्ण फले मन आश हो।१६।

गणिवर की आज्ञा लेकर के, निकसे भिक्षा काज।
धूप तेज थी धरा गर्म थी, हर्ष हिये महाराज हो।१७।

मोटे–मोटे छाले पड़ गये, हा ! हा ! पांव मंझार।
आशा रूप लता के सहारे, कदम बढ़े उस बार हो।१८।

गर्मी की परवाह नहीं करते, पहुंचे गृहस्थी द्वार।
श्रावक कुनबा पुलकित होता, देख मुनि उस बार हो।१९।

मोदक धामे मुनिवर निरखे, छोड़ देत निरधार।
केशरिया मोदक नहीं पाये, मन में उठे विचार हो।२०।

केशरिया मोदक जो पाये, किसी गेह दरम्यान।
सचित [४] संगठा आदिक कारण छोड़ा घर स्थान हो।२१।

कठोर साधन जैन मुनि का, साधे विरला कोय।
भिक्षाचार के दोष [५] सैंतालीस, जिन आगम लो जोय हो।२२।

---

४. जीवयुक्त हरी वनस्पति अथवा जल आदि किसी पदार्थ से संसर्गित अचित वस्तु भी जैन मुनि के लिए अग्राह्य है।

५. भिक्षाचरी के ४७ दोष–१६ उद्‌गम दोष–ये गृहस्थ के द्वारा लगते हैं १. आधाकर्म २. औद्देशिक ३. पूतिकर्म ४. मिश्र जात ५. स्थापन ६. प्राभृतिका ७. प्रादुष्करण ८. क्रीत ९. प्रामित्य १०. परिवर्तित ११. अभिहृत १२. उद्‌भिन्न १३. मालापहृत १४. आच्छेय १५. अनिसृष्ट १६. अध्यवपूरक।

१६. उत्पाद दोष– ये साधु के द्वारा लगाये जाते हैं १. धात्री २. दूती ३. निमित्त ४. आजीव ५. वनीपक ६. चिकित्सा ७. क्रोध ८. मान ९. माया १०. लोभ। ११. प्राक्पश्चात्संस्तव १२. विद्या १३. मन्त्र १४. चूर्ण १५. योग १६. मूल कर्म।

संकिय आदि १० दोष–ये श्रमण (साधु) व गृहस्थ दोनों के द्वारा लगाये जाते हैं–१. संकिय २. मक्खिय ३. निक्खित्त ४. पिहिय ५. साहरिय ६. दायक ७. उन्मिश्र ८. अपरिणत ९. लित्त १०. छर्दित।

ग्रासैषणा (मांडला) के ५ दोष– ये साधुओं को ही लगते हैं। १. संयोजना २. प्रमाण ३. इंगाल ४. धूम ५. कारण।

छः [6] काया की रक्षा करते, करते पाद विहार।
पंच [7] महाव्रत पालन करते, समिति गुप्ति धार हो ।२३।

घर–घर मांही मुनि पधारे, धामे मोदक सार।
देख–देख छोड़े मुनिवर जी, लेते नहीं आहार हो ।२४।

केशरिया मोदक ही दीखे, अपर गये सब भूल।
पागल जान बाल भी हंसते, बकते उल जलूल हो ।२५।

मोदक धुन में भान भूल गये, हुआ अस्त भी भान।
निज स्थानक नहिं पहुंचे हैं, मोदक का ही ध्यान हो ।२६।

जिन–भद्रजी श्रमणोपासक, दृढ़ श्रद्धा गुणधार।
समकित रत हैं गुरु गम ज्ञानी, विनय विवेकी सार हो ।२७।

केशरिया की ध्वनि सुनी जब, उठ खोले घर द्वार।
सुव्रत मुनि को शीघ्र जानकर, उचित किया सत्कार हो ।२८।

दिन में मोदक प्राशुक नहीं थे, पहुंचे थे महाराज।
रसना के वश में है मुनिवर, देना मुझको साज हो ।२९।

---

६. छः काया– १. पृथ्वीकाय, २. अपकाय, ३. तेउकाय, ४. वायुकाय, ५. वनस्पतिकाय, ६. त्रस काय।

७. महाव्रत ५ :– १. सर्वथा प्राणातिपात विरमण २. सर्वथा मृषावाद का विरमण, ३. सर्वथा अदत्तादान विरमण ४. सर्वथा मैथुन का विरमण ५. सर्वथा परिग्रह का विरमण।

८. पांच समिति :– १. इर्या समिति २. भाषा समिति ३. एषणा समिति ४. आदान भण्डमत्त निक्षेपणा समिति ५. उच्चार प्रसवण खेल जल संघाण परिष्ठापनिका समिति।

९–तीन गुप्ति :–
१. मन गुप्ति २. वचन गुप्ति ३. काय गुप्ति।

भले पधारो कहकर लाये, जहां थे मोदक थाल।
मोदक लख कर आँखे चमकी, मन में अति खुशाल हो।३०।

प्रसन्नता का नहीं ठिकाना, मन में हर्ष अपार।
बड़ा पात्र जो सम्मुख धरते, रसना दोष हजार हो।३१।

पात्र भरा जब मुनिवर लौटे, श्रावक पूछे एम।
समय बतावें मुनिवर अब क्या, क्या साधु का नेम हो।३२।

समय देखने ऊपर झांके, नभ [१०] मण्डल के मांय।
तारा छाई रजनी देखी, मन में अति पछताय हो।३३।

अर्ध निशा का समय आ गया, श्रावक को जित लाय।
धिक्–धिक् मेरी रसना इन्द्रिय, भटक रहा निश माय हो।३४।

ग्लानि भाव से बोल न पाये, आँख अंधेरा छाय।
भाव बदलता लख श्रावक जी, सोचे मन के मांय हो।३५।

गाड़ी पटरी पर अब आई, विनवे बारं–बार।
रात्रि को पौषधशाला में, करते आत्म विचार हो।३६।

गुरु चरणों में–जाना चाहें, पहुंचा दूं इस बार।
निशा काल तो यहीं बितावें, ध्यान यही सुखकार हो।३७।

मोदक पात्र को दूर हटाया, मुनि ने उस बार।
चिन्तन की श्रेणी पर चढ़ गये रसना को धिक्कार हो।३८।

आत्मा का आलोचन करते, श्रेणी शुक्ल ध्यान।
क्षपक श्रेणी से कर्म खपाया, उपजा केवल ज्ञान हो।३९।

---

१०. उस समय घड़ी आदि का साधन नहीं होने से आकाश में सूर्य अथवा तारे आदि की गति देखकर समय जाना जाता था।

ऐसे श्रावक गुणीजन होते, अम्मा पिया समान।
बड़े प्रेम से ध्यान दिलाते, त्रुटि के अनुमान हो।४०।

सन्तों ने भी खोज लगायी, निज मर्यादा मांय।
निशा [११] सन्निकट देख मुनि सब, पहुंचे स्थानक मांय हो।४१।

श्रावक पहुंचा सूचित करने, प्रमुदित भावों के साथ।
सुव्रत मुनिवर केवल पाया, सुनिये स्वामी नाथ हो।४२।

गणिवर दर्शन काज वहां से, पहुंच रहे उस बार।
उधर मुनि जी भी आते हैं, गुरुजी के चरणार हो।४३।

मारग में दोनों ही मिल गये, करते मधुर अलाप।
विनय विवेकी यथा योग्य वे, करते प्रेमालाप हो।४४।

जिन भद्रजी संयम नौका, पार करी निरधार।
गुरु चरणों में दृढ़ भक्ति है, जीवन सफल विचार हो।४५।

बड़े प्रेम से मुझे सुझाया– नाव पड़ी मझधार।
जो मुझसे वे घृणा करते, भमता मैं संसार हो।४६।

जिन शासन के ऐसे श्रावक, करते सत्य प्रचार।
गुण–गण की वे खान मनोहर, कहत न आवे पार हो।४७।

मुनिवर देशान्तर में विचरे, जैन धर्म परचार।
मुनियों की गुण गौरव गाथा, राम मुनि विस्तार हो।४८।

सुव्रत मुनिवर अन्त समय में, पहुंचे मुक्ति–धाम।
आप तिरे और तारे अगणित, अमर हुआ तस नाम हो।४६।

---

११. रात्रि के समय श्रमण अपने स्थान से मर्यादित भूमि से आगे गमनागमन नहीं कर सकते इसलिए सूर्यास्त के पूर्व साथी मुनि को खोजा पर नहीं मिले इसलिए सूर्यास्त के पूर्व ही पुनः अपने स्थान में लौट कर आ गये।

प्रभु वीर के शासन मांही हुक्म [१२] गच्छ श्रेयकार।
शिवलाल, [१३] उदयसागर [१४] जी, चौथमल [१५] हितकार हो।५०।

श्रीलाल [१६] और पूज्य (ज्योत) जवाहर [१७] गुरु गणेशी [१८] पाय।
श्रमण संघ ने नायक माना, घाणेराव [१९] के मांय हो।५१।

मेवाड़ प्रान्त का अद्‌भुत हीरा, समता रस भंडार।
चमक रहा है अष्टम पटपै नाना [२०] गुण आगार हो।५२।

---

१२. पूज्य श्री हुक्मीचन्द जी म.सा. ने क्रियोद्धार किया था इसलिए साधुमार्गी परम्परा हुक्मगच्छ के नाम से प्रचलित हो गयी।

१३. आचार्य श्री शिवलाल जी म.सा.

१४. " " उदयसागर जी म.सा.

१५. " " चौथमल जी म.सा.

१६. " " श्रीलाल जी म.सा.

१७. " " जवाहरलाल जी म.सा.

१८. " " गणेशीलाल जी म.सा.

१९. संवत् २००६ में सादड़ी वृहद् साधु सम्मेलन हुआ था उसमें ज्योतिर्धर युग प्रधान जवाहिराचार्य द्वारा संवत् १९९० के सम्मेलन में दी गई योजना के अनुसार "एक आचार्य के नेतृत्व में शिक्षा–दीक्षा–प्रायश्चित–विहार आदि हो " को उद्देश्य रूप में स्वीकार किया गया और सर्वसम्मति से श्रमण संघ संचालन का भार शान्त क्रांति के अग्रदूत स्व. आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. के कन्धों पर डाल दिया गया।

और सभी प्रतिनिधि मुनिवरों ने अपने प्रतिज्ञापत्र आचार्य श्री के चरणों में समर्पित कर दिये। परन्तु जव श्रमण संघ मे अनुशासनहीनता का दौर बढ़ने लगा और संत स्वच्छन्दता में वहने लगे तो स्व. आचार्य श्री ने अपनी वृद्धावस्था में पद का मोह नहीं करके श्रमण संघ से अपने को पृथक कर लिया अर्थात् स्वच्छन्द सन्त वर्ग से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।

२०. नानागुणों की खान आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.।

पंचाचारी [21] अष्ट [22] सम्पदा, गुण [23] छत्तीसों धार।
चहुं दिश फैला नाम गुरु का महिमा अपरम्पार हो।५३।

समता सागर धर्म उजागर, गुण रत्नों की खान।
जिन शासन की अद्‌भुत ज्योति, मुक्ति मारग यान हो।५४।

विद्या नगरी वर्षा वासा, कांठा प्रान्त मझार।
उपाध्याय और अर्हत् गुण [24] का, सेवत है श्रेयकार हो।५५।

---

२१. ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार।

२२. १. आचार सम्पदा २. श्रुत सम्पदा ३. शरीर सम्पदा ४. वचन सम्पदा ५. वाचना सम्पदा ६. मति सम्पदा ७. प्रयोग मति संपदा ८. संग्रह परिग्रह संपदा।

२३. १ से ५–पांच महाव्रत का पालन करना एवं करवाना
६ से१०–पंचाचार——"————"—————
११ से१५–पांचों इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना।
१६–१६–चार कषाय के त्यागी।
२० से २८–नव बाड़ सहित ब्रह्मचर्य का दृढ़तापूर्वक पालन करना।
२६ से ३३– पांच समिति का शुद्ध पालन।
३४ से ३६–तीन गुप्ति का सम्यगाराधन।

२४. उपाध्याय के २५ गुण अर्हत के १२ गुण।
२५+१२=३७ अर्थात् २०३७ का संवत्।

वीर [२५] संघ और समता [२६] संघ भी करते हैं पुरुषार्थ।
साधना करते धर्म फैलाते, करते जीवन साथ हो।५६।

वासणी ग्रामे चरित बनाया, भव्यों के हितकार।
पढ़े सुने जो दृढ़ श्रद्धा से, पामे भवोदधिपार हो ।५७।

---

२५. युग प्रधान श्रीमज्जवाहिराचार्य द्वारा निर्देशित मध्यम वर्ग की भूमिका अर्थात् देश से जो निवृत्त हो, अपना जीवन साधनामय व्यतीत करते हों जहां सन्त सतीवर्ग नही पहुंच पाये, वहां धर्म का प्रचार करने वाला समूह।

२६. जिन शासन प्रद्योतक समता विभूति आचार्य नानेश द्वारा निर्देशित समता सिद्धांत का प्रचार करने वाला तथा समता समाज की संरचना में तत्पर रहने वाला विभाग–विशेष जानकारी हेतु निम्न ग्रन्थ अवलोकन करें–

१. समता दर्शन और व्यवहार
२. समता दर्शन एक दिग्दर्शन
३. समता जीवन प्रश्नोत्तरी।

४. कर्म का चक्कर

परिहास तजो नर ! कर्म बन्धन का कारण जान के ।।टेर।।

धर्म धरा उज्जयनी नगरी, धर्मी बहुत बसाय।
धनदत्त नामक श्रेष्ठी जहां पर, बसे गुणी मन भाय हो।१।

सत्यभामा है सत्यपरायण, शीलवती गुणवान।
धर्माचरण में आगेवानी, नगरी के दरम्यान हो ।२।

क्रय विक्रय है देश विदेशा, धन से भरे भंडार।
पुत्र रत्न की मन में इच्छा, कुल का हो विस्तार हो।३।

पत्नी बोली चिन्ता त्यागो, धर्म करे हितकार।
उभय दम्पती दत्तचित्त से, देते दान अपार हो।४।

कालान्तर में सत्यभामा ने, स्वप्न लखा सुखकार।
स्वर्ण कलश है अति मनोहर, दीपे ज्योति अपार हो।५।

ठीक समय पर सुत को जन्मा, आनन्द का नहीं पार।
बटे बधाई मंगल गावे, मन में हर्ष अपार हो।६।

मंगलकलश नाम है दीना, रूप मति अनुसार।
बालक क्रीड़ा से मन मोहे, तुतली बोली सार हो।७।

गुरुकुल भेजा कलाचार्य पै, ज्ञान कला अभ्यास।
विनय विवेकी गुण से बालक, सब विषयों में पास हो।८।

नृपति वर सुन्दर शोभे, चंपा नगरी मांय।
त्रिलोकसुन्दर सुता जिन्हो के, यथा नाम गुण पाय हो।९।

तरुण अवस्था देख भूपती, मन में करे विचार।
ऐसे बर को खोज निकालें, रहे सदा हम लार हो।१०।

राजा को निज भाव बताती, सुनिये प्राणाधार।
मन्त्रीसुत से शादी करदें, सफल मनोरथ सार हो।११।

बिरह नहीं कन्या का होगा, सब विध मंगलाचार।
शीघ्र बुलाया मन्त्रीबर को, सम्मुख रखा विचार हो।१२।

आना—कानी करे हां ! देत सभासद जोर।
सुबुद्धि मन्त्री फिर है बोला, आप हुक्म सिरमोर हो।१३।

विषम समस्या सम्मुख आयी, मन्त्री करे विचार।
कुष्ट रोग से पीड़ित लड़का, क्या होगा इस वार हो।१४।

कर उपासना कुलदेवी की, सन्मुख रखा विचार।
पुत्र ठीक नहीं होगा तेरा, कर्म निकाचित लार हो।१५।

अपर कर्म को पुरुषारथ से, बदल सकें हर वार।
कर्म निकाचित हटता नहीं, जिन आगम अनुसार हो।१६।

इस संकट से मुझे उवारे, उलझी को सुलझाय।
दिवस सातवें नगर बाहेरा, खोज करो चितचाय हो।१७।

देखभाल घोड़ों की करता राजपुरुष जिस धाम।
पुरुष रत्न को वहां पर छोड़ूं, कर लेना निज काम हो।१८।

प्रमुख बुलाया अश्वपाल को, कहता स्वकीय विचार।
दिवस सातवें जो नर आवे, पहुंचाना मम द्वार हो।१९।

मंगलकलश को कुलदेवी ने, स्वप्न दिखाया सार।
किराये पर शादी करता, राजकुमारी लार हो।२०।

सपने का फल चिंतन करता, हल नहीं पाता पार।
दिवस सात में संध्या काले, हो गया चमत्कार हो।२१।

गुरुकुल से घर को ही आता, मंगलकलश कुमार।
भयंकर तूफान आ गया, नहीं पहुंचा घर द्वार हो।२२।

पैर उठे नभ में वह उड़ता, पहुंचा चम्पा द्वार।
सर्दी के अतिशय से वहां पर, कांप रहा उस वार हो।२३।

अश्वपाल अग्नि से तापे—पहुंचा उनके पास।
बड़े प्रेम से रात बिताई, हुई सुरक्षा खास हो।२४।

मन्त्री को ले जाकर सौंपा, पूर्व—कथन अनुसार।
मंगलकलश निहारा मन्त्री, मन में खुशी अपार हो।२५।

निज सुत से मिलता जुलता है, कद और रूप तिवार।
प्रेमादर से उसको रखता, अपने महल मझार हो।२६।

नजर कैद मुझको क्यों रखते, कैसा यह सत्कार।
कौन नगर निज परिचय देवो, बतलाओ निरधार हो।२७।

भाग्य तुम्हारे उदय हुए हैं— स्वीकारें मम बात।
प्रधान मन्त्री सुबुद्धि मैं, चम्पापुर विख्यात हो।२८।

कुलदेवी की पूजा करके, बुलवाये इस बार।
त्रिलोकसुन्दरी राजसुता है, रूप कला भंडार हो।२६।

कुष्ट रोग से पीड़ित मम सुत, सगपण साथ तिवार।
विवाह—मण्डप में लग्न करो फिर, कन्या देओ तस लार हो।३०।

बात सुनी मन चिन्तन करता, यह है काम निकाम।
सुन्दर मूर्ति राजसुता की, बिगड़े हाल तमाम हो।३१।

शादी गर मैं उससे करता, होगा मम अधिकार।
मन्त्रीवर की साफ सुनाता, सही न्याय हितकार हो।३२।

दण्ड नीति का सहारा लेकर, धमकाया उस वार।
यमपुरी गर जाना हो, करना फिर इन्कार हो।३३।

सोचे समझे काम करे तो, जग में हो निस्तार।
बुद्धि बल है जग में बढ़कर, कह गये नीतिकार हो।३४।

चिन्तन करके बोला मंगल, मन्त्री से उस वार।
आज्ञा तुमरी शिरोधार्य है, शर्त एक अनुसार हो।३५।

दहेज धन जन राजा देवे, उस पर मम अधिकार।
इसी शर्त पर कन्या छोड़ूं, आप पुत्र के लार हो।३६।

बड़ी खुशी से शर्त मानली, मंत्री ने उस वार।
पुण्योदय से बात मानली, कार्य बना हितकार हो।३७।

राज–दुल्हा बन मंगल जाता, शादी करने काज।
जिसने भी जब उसको देखा, आनन्द सर्व समाज हो।३८।

कई कन्याएं दिल को थामा, मंगल रूप निहार।
राजसुता ने भी जब देखा, हृदय हर्ष अपार हो।३९।

हाथी घोड़े रथ और पैदल, दास्यों का परिवार।
हीरे पन्ने माणिक मोती, वस्त्राभूषण सार हो।४०।

कन्या को भूपति सब देवे, निज जामाता प्यार।
कर–मोचन की शुभ बेला में बोला एम विचार हो।४१।

श्रेष्ठ नस्ल के पांच अश्व मुझे, दे दीजे सरकार।
वाद्य ध्वनि और मंगल गायन, होन लगे वार हो।४२।

जुलूस जब पहुंचा मन्त्री घर, मंगल मन मुरझाय।
मूर्छित चेहरा देख पति का, पत्नी मन घबराय हो।४३।

नम्र भाव से सुन्दर पूछे, निज पति से बात।
किस कारण से छाई उदासी, आज सुहाग है रात हो।४४।

क्षुधा पान गर करना हो तो, मंगवाती पकवान।
बड़े प्रेम से आप अरोगें, फिर लें तांबुल पान।४५।

उज्जयनी की आवहवा हो, षट्रस भोजन सार।
मधुर पेय उसकी तुलना का, नाही चंपा मझार हो।४६।

पति के मुख से उज्जयनी की, शोभा कई प्रकार।
दुलहिन सुनकर मन आलोचे, क्या है सम्बन्ध सार हो।४७।

सचिव इशारे मंगल उठता, शौच बहाना धार।
बाहर आ मन्त्री से मिलता, निज सम्पति के लार हो।४८।

भूपति द्वारा प्राप्त सम्पति, उज्जयनी भिजवाय।
सभी वस्तु ले घुड़असवारी, उज्जयनी चितचाय हो।४९।

इधर हाल अब सुनिये मित्रों ! धनदत्त श्रेष्ठी लार।
गुम हुआ था जिस दिन मंगल, दुःख का नहीं था पार हो।५०।

चप्पा-चप्पा खोज लिया है, नगरी और उद्यान।
मन मुर्झाये दुःख से बीते, केवल सुत का ध्यान हो।५१।

अकस्मात जब मंगल पहुंचा, हर्षा सब परिवार।
राम कहानी सुनके उससे, अचरज हृदय अपार हो।५२।

फोज राजसी ठाठ सभी लख, अश्व पांच श्रेयकार।
सभी व्यवस्था करके श्रेष्ठी, मुदित सभी परिवार हो।५३।

प्रीतम की प्रतीक्षा करती, सुन्दरी चंपा मांय।
अकस्मात कुल दीपक मन्त्री, महलों में झट आय हो।५४।

गिद्ध दृष्टि से उसको देखे, बैठा आसन डार।
आगे हाथ बढ़ाया निर्लज, कुटिलता मन धार हो।५५

शीघ्र दौड़कर ललना जाती, दासी कक्ष मझार।
प्रातःकाल वह राजमहल में, पहुंच गयी निर्धार हो।५६।

गुप्त भेद यह खुल नहीं जावे, मन्त्री मन घबराय।
सूर्योदय के पहले पहुंचा, राजभवन के मांय हो।५७।

रोने का नाटक वह करता, हा ! हा ! स्वार्थ धिक्कार।
भाग्य फूट गया दुःख में डूबा, हर्ष न हिये लिगार हो।५८।

सही बात ही शीघ्र बताओ, उसका करूं उपाय।
भय से कंपित मन्त्री बोला, नयने नीर भराय हो।५६।

मुंह को आता हाय ! कलेजा, घटना है दुखकार।
कितना सुन्दर कुल दीपक था, देख लिया सरकार हो।६०।

राजसुता के स्पर्श मात्र से, हुआ कुष्ट का रोग।
कर्मों से कोई नहीं बचता, करना पड़ता भोग हो।६१।

भूपत सोचे राजसुता है, विषकन्या दुखकार।
मन्त्रीपुत्र इसी कारण से, पीड़ित हुआ अपार हो।६२।

मेरी कन्या जो नहीं ब्याता, नहीं होता यह दुःख।
धैर्य बंधाकर भूपति बोले, मुझको भी नहीं सुख हो।६३।

स्वामी ने सब ठीक किया था, मन्त्री करे उचार।
विचित्र है कर्मों की गति हा ! मत करें राज विचार हो।६४।

कान भर राजा का मन्त्री, सुबुद्धि घर जाय।
राजसुता को राजमहल में, आदर दीना नांय हो ।६५।

रहने हेतु एक कोटड़ी, दे दी थी उस वार।
अपमानित जीवन हा ! होगा, नहीं कल्पना सार हो ।६६।

सामायिक पौषध वह करती, व्रत बारह अपनाय।
कर्म गति दुखदायी जग में, सूत्र ग्रन्थ बतलाय हो ।६७।

आगम का अभ्यास करे नित कुत्सित ध्यान निवार।
दृढ़ निश्चय था मन में उसको, मिलसी प्राणाधार हो ।६८।

राजा–रानी बात सुनन को, भी नहीं हैं तैयार।
मन में इसका गहरा दुःख था, समता ली उर धार हो ।६६।

सामंतसिंह को पास बुलाया, राजसुता इक वार।
राम कहानी उज्जयनी की, कही बात तिवार हो ।७०।

समय देख राजा से करता, सिंह विनय अरदास।
राजसुता है दुःख में डूबी, पूरी करिये आस हो ।७१।

पूर्वकर्म का फल वह भोगे, करना क्या इस बार।
वार्ता उसकी सुन सकता हूं, नहीं मुझे इन्कार हो ।७२।

त्रिलोकसुन्दरी बात बताती, राजा को उस बार।
पुरुष–वेश की आज्ञा देदें, खोजूं प्राणाधार हो ।७३।

सिंह सामंत भी कहता राजन् ! होगा यह श्रेयकार।
पुरा–काल मे कई कन्याएं, ऐसा ही सरकार हो ।७४।

पुरुष–वेश की आज्ञा देता, सिंह सामन्त भी साथ।
धन्य धान्य और अनुचरों की, व्यवस्था तस हाथ हो ।७५।

पुरुष वेश बनाकर निकली, पति खोज के तांय।
मिष्ट नीर केशर को खोजा, उज्जयनी के मांय हो ।।७६।

भव्य भवन ले गोखे बेठी, देखे दृष्टि पसार।
पांचों अश्व उधर से निकले, जल पीने उस बार हो ।।७७

अश्वों को पहिचान खोज हित, अनुचर भेजे लार।
घर–मालिक का पता लगाया, विविध खोज हर वार हो ।।७८।

कलाचार्य पै मंगल पढ़ता, उच्च्य कोटि विज्ञान।
गुरुवर जी के पास पठाया, सिंह सामंत उस स्थान हो ।।७६।

भोजन हेतु करे निमन्त्रण, षटरस भोजन सार।
सादर भोजन शाल ओढानी, देती है सत्कार हो।।८०।

मंगल को दो शाल ओढ़ाये, अपर जनों को एक।
कलाचार्य को बात बताती, यह लड़का है नेक हो।।८१।

चतुर छात्र जो कथा सुनावे, करे निवेदन सार।
मंगल का सत्कार देखकर, करते अन्य विचार हो।।८२।

मंगल स्वागत अधिक देख के, ईर्षित अन्य कुमार।
मंगल कथा सुनावे भारी, ऐसा श्रेष्ठ विचार हो।।८३।

गुरु आज्ञा से मंगल बोला, सुनिये हृदय विचार।
सत्य कहूं या कल्पित बातें, आप कहें निरधार हो।।८४।

कल्पित नहीं तुम सत्य सुनाओ, सत्य सदा हितकार।
मंगल ने स्वर को पहिचाना, मन मे हुआ विचार हो।।८५।

प्रिया के सम स्वर है इसका, सत्य कहा किम जाय।
पहले की घटना सुनवाता, सुन्दरी आनन्द पाय हो।।८६।

कल्पित अभिनय करके उसको, निज कक्ष बुलवाय।
बातूनी यह लड़का नटखट, दण्ड योग्य बतलाय हो।८७।

अन्य छात्र यों मन में सोचे, मजा चखे इस बार।
बड़ी चतुरता सब जितलाना, होनहार निरधार हो।८८।

सिंह सामंत को पास बुलाकर, सुन्दरी एम उचार।
खास·पति को खोज लिया है, सफल हुआ विस्तार हो।८९।

अन्य वस्तुएं जो भी दी थीं, राजा ने उस बार।
उनकी खोज करें इन घर में, संशय मिटे अपार हो।९०।

सेठ पास में सामंत पहुंचा, सब विध पता लगाय।
सही बात का निश्चय करके, मन में हर्ष भराय हो।९१।

त्रैलोकसुन्दर हर्ष भाव का, वर्णन किया न जाय।
परिजन लेकर श्रेष्ठी पहुंचा, निज घर को ले आय हो।९२।

पुरुष वेश सामंत के संग में, भेजा भूपति पास।
सामंत सारी कथा सुनाता, पूर्ण हुई तस आस हो।९३।

राजा रानी हर्षित होते, नयनों नीर बहाय।
राजसुता के बुद्धिबल को, देख सभी चकराय हो।९४।

मंगल राजसुता को लाने, सिंह भेजा उस बार।
नगर सजाया मंगल गाया, किया बहुत सत्कार हो।९५।

पाप घड़ा फूटा है अब तो, मन्त्री का उस वार।
नगर छोड़कर बहिरगमन का, करता सही विचार हो।९६।

राजा ने धर पकड़ मंगाया, धन छीना उस वार।
खर असवारी नगर घुमाया, शूली दण्ड प्रसार हो।९७।

शूली माफ कराता मंगल, देश निकाला देय।
राज्यतिलक मंगल का करके, भूपत संयम लेय हो।९८।

धर्मघोष गति के चरणों में, तप जप संयम सार।
आत्मसाधना करता राजन, रत्नत्रय की सार हो।९९।

बैश्यकुल सुत राजा लख कर, दुश्मन करे चढ़ाई।
छोड़ा रण और पीठ दिखाई, उल्टी मुंह की खाई हो।१००।

दश ही दिशा में फैली शोभा, मंगल की श्रेयकार।
यशशेखर को जन्म दिया फिर, सुन्दर ने सुखकार हो।१०१।

विशिष्ट ज्ञानी मुनि से पूछे, पूर्वजन्म का हाल।
रानी सिर पर कलंक कैसे, क्यों कर शादी जाल हो।१०२।

सोमचन्द नामक कुल पुत्र था, श्रीदेवी तस नार।
सेठ देवदत्त भद्रा भार्या, उस ही नगर मझार हो।१०३।

श्रीदेवी और भद्रा सखियां–उभय प्रेम के साथ।
सेठ देवदत्त कुष्ट रोग से, दुःखी हुआ साक्षात हो।१०४।

निज सखी को दुःख हाल सुनाती, भद्रा दुःख नहीं पार।
परिहास्य में भ्रदा बोली, तूं ही पापिन नार हो।१०५।

तुझे छूने से तेरा स्वामी, कुष्टी कष्ट अपार।
भद्रा मन दुःख नहीं माता, बोल न सकी लिगार हो।१०६।

श्रीदेवी कहे हास्य किया है, मत जाने मम सांच।
धैर्य बंधा भद्रा को इससे, पति सेवा मन सांच हो।१०७।

सोमचन्द्र और श्रीदेवी ने, किया धर्म हितकार।
उससे दोनों सुर देवो बन, लीना शुभ अवतार हो।१०८।

वहां से च्यवकर दोनों आये, मानव भव के मांय।
हास्य वशी हो कलंक लगाया, उस ही का फल पाय हो ।१०९।

बात–बात में मित्रों देखो, संचय हो दुष्कर्म।
आत्मभाव से भूला भटका, नहीं पाता सद्धर्म हो।११०।

महाभारत भी इसी कारणे, द्रोपदी वचन निहार।
हास्य किलोली त्यागो गुणिवर, विकथा को दो टार हो।१११।

विरक्त हो गये राजा रानी, सुन जीवन का हाल।
संयम शिव सुख मग को पाकर, हो गये आप निहाल हो।११२।

यशशेखर अब राज्य करत है, न्याय नीति अनुसार।
राम मुनि ने चरित बनाया, भव्यों के हितकार हो।११३।

हुक्म गच्छ चमके हैं दश दिश, वीर संघ के मांय।
नानागुरु जसवन्त जगत में, मुनि मंडल के मांय हो।११४।

धर्मपाल को बोध दिया है, जिनवाणी अनुसार।
समता का उपदेश सदा है, भविजन तारणहार हो।११५।

सम्वत् सैंतीसे गुरु चरणे, बूसी नगर मझार।
ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया का शुभ दिन, चरित पूर्ण श्रेयकार हो।११६।



५. अष्टाचार्य सौरभ

आचार्य हमारे उज्ज्वल सितारे चमके देश में ।।टेर।।

पांच पद है महामन्त्र के, साधु पद है चार।
सिद्ध प्रभु का पद है दूजा, शेष श्रमण अणगार हो।।१।।

श्रमणों ने जो पंथ बताया, साधुमार्ग कहलाय।
अरिहन्त भी होते हैं साधु, यथाख्यात गुणपाय हो।।२।।

सर्वोत्कृष्ट अरिहन्त कहाते, देते शिव सुख ज्ञान।
गुण निष्पन्न है संघ हमारा, साधु मार्ग प्रधान हो।।३।।

संघ बनाया वीर प्रभु ने, भव्यों के हितकार।
अनुशासक आचार्य बनाये, प्रथम सुधर्मा सार हो।।४।।

सर्व संघ के सत्ताधारी, अष्ट सम्पदा धार।
शासन इससे समुचित चलता, जिन आज्ञानुसार हो।।५।।

अनुशासन को जो भी अराधे, मोक्ष मार्ग अपनाय।
नहीं तो भारभूत है करणी, आत्मिकता नहिं आय हो।।६।।

प्रथम सुधर्मा जम्बू आदिक, पाटानुपाट विराज।
लोंकाशाह की सच्ची क्रान्ति, देख मूढ़ मन लाज हो।।७।।

पाट चहोतर हुक्मी गणिवर, गुरु आज्ञा ले विचरे।
शुद्ध क्रिया है श्रमणचारी, जनमत यही उचरे हो।।८।।

विषय भावना दूर हटाई, समता को अपनाय।
क्रान्तिकारी कदम बढ़ाया, जिनशासन के मायं हो।।६।।

श्रमण शुद्ध मर्यादा खातिर, किया धर्म परचार।
तपस्तज और शुद्ध क्रिया से, बर्ते मंगलाचार हो।।१०।

सहस्र दोय नमोत्थूणं, स्तवन जिनेश्वर सार।
स्वाध्याय में नित रत रहते, विकथा दूर निवार हो।।११।।

वर्ष इकीसे– बेले–बेले, तप कीना स्वीकार।
क्षमाशील और विनय विवेकी, जीवन था साकार हो।।१२।।

तेरह वस्तु रख कर खुल्ली, शेष सभी का त्याग।
आजीवन की करी प्रतिज्ञा, भव्य त्याग अनुराग हो।।१३।।

घोर तपस्वी चरण कमल की , सेवा सुर हर्षाय।
मानव का तो कहना ही क्या, आनन्द अनुपम पाय हो।।१४।।

चमत्कार कई देखे भविजन, सुन–सुन चित चकराय।
प्रवचनों में द्रव्यवृष्टि अहा ! नाथद्वार मांय हो।।१५।।

रामपुरा में हैजा फैला, चरण स्पर्श मिट जाय।
कोढी ने भी पांव छुए तब, रोग हटा सुख पाय हो।।१६।।

भाव बिरागी राजीबाई, अनासक्ति व्यवहार।
माता–पिता ने मोहवश होकर, लोह सांकल [1] गल डार हो।।१७।।

सहज दृष्टि से बन्धन टूटे, गुरु कृपा उर धार।
अन्य अनेकों घटनाएं भी, सुनते हैं हर वार हो।।१८।।

---

१. विरक्त आत्मा साधुसाध्वियों की सेवा में नहीं जा सके इसलिए उनको परिवार वालों ने लोह की सांकल से बांध रखा था।

बीकाणे में आप पधारे, हुए कई उपकार।
पांच सेठ श्रीमुख से कीना–संयम श्रेष्ठ स्वीकार हो।।१६।।

शिष्य बनाना मन नहीं भाया, त्याग किया उस बार।
दीक्षा देकर शिव मुनि जी को, संभलाई तत्काल हो।।२०।।

संयम निष्ठा रग–रग मांही, श्रेष्ठ धर्म अनुराग।
अतिचारादिक का जीवन में, नहीं लगा कुछ दाग हो।।२१।।

शास्त्र ग्रन्थ लिखते हाथों से, सुन्दर लिपी सुहाय।
बहुत प्रेम से साधक जन को, आकर्षण मन भाय हो।।२२।।

आत्मरमण में निश दिन रहते, निन्दा विकथा टार।
पच प्रमादहि दूर हटाया, समरस का नहिं पार हो।।२३।।

पंडित–मरण हुआ शान्ति से, जावद नगर मझार।
सर भव कर अवतार विदेह में, शिव रमणी स्वीकार हो।।२४।।

संघ भार शिवमुनि को सौंपा, बीकानेर मझार।
शान्त स्वभावी दृढ़ व्रत धारी, क्षमा खड़ग उर धार हो।।२५।।

कविता रचने में कोविद थे, अलंकार रस ज्ञान।
आगम की स्वाध्याय निरत गुरु, दीपे तेज महान् हो।।२६।।

ज्ञान धारणा अनुपम इनकी, जागम नय अनुसार।
सूत्रों का सत् रहस्य बताते, महिमा अपरम्पार हो।।२७।।

वर्ष पैंतीस एकान्तर कीना, कर्म निर्जरा कीध।
अपर तपस्या में भी मुनिवर, चित्त निरतर दीध हो।।२८।।

शिष्यों की भी भले भाव से, करते सार संभाल।
ज्ञान ध्यान की समुचित शिक्षा, देकर उन्हें निहाल हो।।२६।।

निज प्रशंसा सुनकर उनको, नहिं आता अहंकार।
विषय कषायों को नित टारे, साधु [1] धर्म स्वीकार हो।।३०।।

शिथिलाचार न भाता मुनि को, संयम गुण अनुराग।
शुद्धाचारी मुनियों से नित, आदर प्रेमाराग हो।।३१।।

जीवन संध्या देख आपने, सोच संघ हितकार।
उदयसागर को योग्य जानकर, सम्भलाया निज भार हो।।३२।।

पंडित–मृत्यु स्वर्ग सिधारे, संघ सकल मुरझाय।
फिर भी आनन्द संघ सवाया, उदय–उदय रवि पाय हो।।३३।

उदयसागर की महिला का तो, नहीं आवे कुछ पार।
अरिष्टनेमि की याद दिलाता, शदी उन्नीसवीं सार हो।।३४।।

नवविवाहिता रमणी त्यागी, विषय वासना त्याग।
माता–पिता के मोह को तज के, शुद्ध संयम अनुराग हो।।३५।।

किंवदन्ती ऐसी चलती, उदयसागर जी लार।
तोरण से ही वापस मुड़कर, लीना संयम भार हो।।३६।।

आप श्री के अनुशासन में, वृद्धि भई अपार।
अनेक भवि जन संयम लेकर, सेवे गुरु चरणार हो।।३७।।

सागर सम गम्भीर मुनीश्वर, थाह नहीं कोई पाय।
चरण शरण में जो भी आते, निज–निज भाग्य सराय हो।।३८।।

स्नेहशील और प्रेममयी थी, अमृत दृष्टि धार।
सभी शिष्य उत्साहित होकर, पाले शुद्धाचार हो।।३९।।

---

१. साधुधर्म अर्थात्– क्षमा मार्दव आदि १० यति धर्म का जीवन में समरस था– धारण कर रखे थे।

वृद्धावस्था लखकर ऋषिवर, संघ हित करे विचार।
चौथमल जो गुण सम्पन्न हैं, नैय्या खेवनहार हो।।४०।।

संघ की सब सत्ता सम्भलाई, पहुंचे स्वर्ग मझार हो।
समाचार दुखदाई सुन संघ, लोगस्स ध्यान उचार हो।।४१।।

अति उत्कट है करणी जिनकी, जाने सब संसार।
आलसपन नहिं पल भी सुहावे, निरमल चरित मझार हो।।४२।।

कालोकाले साधुचरिया, पाले निर–अतिचार।
वृद्धावस्था में पर कुछ भी, नहीं प्रमाद लिगार हो।।४३।।

आवश्यक प्रातः शाम करे नित, विधियुक्त श्रीमान्।
पर दर्द के खातिर सहारा, लेते थे मतिमान हो।।४४।।

एक श्रावक ने की साहस से, अर्ज एक उस बार।
प्रतिक्रमण गुरो बैठे–बैठे, करिये स्वास्थ्य विचार हो।।४५।।

बैठे–बैठे मैं करता, आवश्यक क्रिया सार।
सोये–सोये ही साधकगण, करने लगे हर बार हो।।४६।।

तीन वर्ष लग संघ संभाला, वृद्धावस्था मांय।
स्थिरवासे रतलाम विराजे, श्री संघ अति हर्षाय हो।।४७।।

श्रीलाल को संघ के नायक, फरमाया श्रेयकार।
तीर्थ चार में खुशियां छाई, आनन्द हर्ष अपार हो।।४८।।

श्रीलाल जी अनुपम त्यागी, महिमा का नहिं पार।
बालक वय में भये विरागी, जाना जगत असार हो।।४९।।

मातपिता सब मोह के वश में, सोचे विविध प्रकार।
विवाह रचा घर रमणी लावें, विराग हो बेकार हो।।५०।।

श्री जी फिर भी नहिं हर्षाये, निर्वेदी अवतार।
आतम–चिन्तन ज्ञान ध्यान में, रत रहते हर बार हो।।५१।।

एकान्त वास में आप बिराजे, समझ भई अनुकूल।
माता भगिनीवत् ललना सब, धन सब जाने धूल हो।।५२।।

निज रमणी से बात न करते, मोह पाश का ध्यान।
आप भये अन्तर–वैरागी, तज विषयन का भान हो।।५३।।

ब्रह्मव्रत का पालन करते, तीन योग स्थिर लाय।
रात्रि में स्वाध्याय लीन नित, आत्मभावना भाय हो।।५४।।

परणी आतुर भाव जनाती, नयनां नीर भराय।
श्री जी कूदे तीन मंजिल से[१], घर छोड़ा हर्षाय हो।।५५।।

रातोंरात ब्रह्म व्रत कारण, करके उग्र विहार।
आप पधारे अपर ग्राम में, ब्रह्मचर्य साकार हो।।५६।।

इसी तरह वैराग्यपने की, घटना अनुपम सार।
तो भी अनुमति नहीं दे मोहवश, माता–पिता परिवार हो।।५७।।

मन ही मन अरिहन्त शाख से, कर संयम स्वीकार।
वीर शिरोमणि सहे परिषह, दृढ़ मनोबल धार हो।।५८।।

हैरां सब परिवार हुआ तब, दी आज्ञा हितकार।
फिर तो गुरु आज्ञा उस धारी, विचरे धर्म प्रचार हो।।५९।।

सरल स्वभावी क्षमाशील ये, सौम्यमूर्ति साकार।
मुख मंडल पै शांति सुधा नित, बरस रहा सुखकार हो।।६०।।

---

१. विशेष जानकारी हेतु देखिये– आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. की जीवन वृत्त।

चौथ गणि की रुग्ण अवस्था, सुन सेवा हित आये।
सेवा की उत्कृष्ट भावना, पूज्य श्री मन भाये हो।।६१।।

पूज्य श्री ने जीवन झांकी, लखी गहन गम्भीर।
संघ भार संभलाने खातिर, हो गये पूज्य अधीर हो।।६२।।

तीजै पद को मैं नहीं चाहता, किया साफ इन्कार।
सकल संघ मिल आग्रह कीना, भल–भल करें स्वीकार हो।।६३।।

विनयशील जो साधक होते, संघ सलाह नहीं टाले।
इत्यादिक सब सोचा मुनीश्वर, मौन अवस्था धारे हो।।६४।।

सकल संघ में आनन्द छाया, बोले जय जयकार।
चादर का शुभ महोरत देखा, ओढाई तत्काल हो।।६५।।

हर्षोल्लास सभी के मन में, दर्शक भीड़ अपार।
जय–जयकार गणी की ध्वनि से, नभ गूंजा उस वार हो।।६६।।

ब्रह्मनिष्ठ था जीवन उनका, दीपे तेज अपार।
दूर–दूर प्रान्तों में विचरे, जैन धर्म प्रचार हो।।६७।।

उपदेशामृत सरस मनोहर, वचन मधुर सुखकार।
सहज भाव से जो भी कहते, हो जाता साकार हो।।६८।।

महिमा गणि की सुन लख बोले, श्रावकगण उस बार।
जिनशासन की ज्योति खराखर, चमकी है इस वार हो।।६९।।

अष्टमपाट चमकसी भारी, पूज्य श्री फरमान।
सहज वचन उनके सुन श्रोता, हर्षित हुए अपार हो।।७०।।

जयतारण में स्वर्ग सिधारे, संघ उदासी छाई।
सहज वचन को सुनकर श्रोता, मुदित हुए मन मांही हो।।७१।।

ज्योतिर्धर जवाहर पाया, फली संघ की आश।
भास्कर जेम जवाहर चमके, दशदिश हुआ प्रकाश हो।।७२।।

देश सभी में शोभा फैली, उपदेशामृत चाह।
बड़े–बड़े नेता गण पहुंचे, श्री चरणों के मांह हो।।७३।।

गांधी पटेल सर मन्नु भाई, और अनेक प्रधान।
विशेष वर्णन जीवनी मांहि, पढी गुणो मतिमान हो।।७४।।

दान दया की आगम व्याख्या, फरमाई हितकार।
एकान्त पाप की अशुभ धारणा, कुंठित हुई उस बार हो।।७५।।

अल्पारंभ महारंभ बताया, आगम के अनुसार।
सही शिक्षा दी जैनधर्म की, भव्यों के हितकार हो।।७६।।

'भ्रम विध्वंसन' से भ्रम फैलाया, तेरह पंथ मझार।
जैन जगत में तिमिर छा गया, भटक गये नर नार हो।।७७।।

'सद्धर्म मंडन' की व्याख्या से, समझाया जिन धर्म।
सत्य धर्म रवि तेज प्रभा से, समझ गये जिन मर्म हो।।७८।।

बादिमान का मर्दन होता, जो भी आता पास।
युक्ति–युक्त सिद्धांत श्रवणकर, मन में होत उदास हो।।७६।।

सुजानगढ़ और चूरू मांही, जयतारण में खास।
तेरहपंथ मुनियों से चर्चा, पंथी भये उदास हो।।८०।।

क्रान्ति मचाई जैन जगत में, शुद्ध संयम के साथ।
ग्राम धर्म और राष्ट्र धर्म की, व्याख्या सही अगाध हो।।८१।।

थली प्रान्त मेवाड़ मालवा, महाराष्ट्र हितकार।
गुजरातादिक प्रान्त अनेकों, पावन निज चरणार हो।।८२।।

दूर दिशावर विचरण कीना, जैन धर्म परचार।
बोध प्राप्तकर भव्य अनेकों, लीना संयम भार हो।।८३।।

अनेक राजधानी के नृप भी, सुन वचनामृत बोध।
छूवाछूत का भूत भगाया, दूर हुआ अवरोध हो।।८४।।

उन्नीसे निव्वे के सम्वत, अजमेरा के मांय।
संघ हितैषी पुष्ट योजना, संगठन चितलाय हो।।८५।।

शिक्षा दीक्षा और प्रायश्चित, संयम यात्रा सार।
एक आचार्य ही हो नेता, एकाज्ञा हितकार हो।।८६।।

जाहो जलाली दशों दिशा में, यश फैला श्रेयकार।
सच्ची श्रद्धा ज्ञान समन्वित, पाले दृढ़ाचार हो।।८७।।

वेदनीय कर्मों ने घेरा, बीमारी दुःखदाय।
प्रसन्न शान्ति मुख मुद्रा नित, दुःख सहते हर्षाय हो।।८८।।

क्रान्तिकारी कदम उठाया, नांहि शिष्यों का मोह।
अनुशासन का भंग देख झट, करते आप विछोह हो।।८९।।

प्रखर प्रवक्ता सब गुण संपन्न, दिव्य दृष्टि मतिमान।
शिष्य गणेशीलाल चमकता, जिनशासन की शान हो।।९०।।

जौहरी जवाहर ने है परखा, युवाचार्य अनुरूप।
संघ सामने पद संभलाया, जावद शहर स्वरूप हो।।९१।।

भीनासर में आप विराजे, बन गया तीरथ स्थान।
त्रिवेणी [१] गम कहलाया, दीपे अनुपम शान हो।।९२।।

---

१. बीकानेर, गंगाशहर, भीनासर ये तीनों सन्निकट होने से यह क्षेत्र त्रिवेणी कहलाया।

गणपत गण के ईश बने हैं, हर्षे सब नर नार।
संचालक सुयोग्य मिले हैं, संघ में खुशी अपार हो।।६३।।

उदयपुर में जन्मे गुरुवर, गोत्र मारू सुखदाय।
सायबलाल जी इन्द्रादेवी, मातपिता शोभाय हो।।६४।।

बाल्यकाल में मातपिता संग, धर्म स्थान में आते।
जिनवाणी सुन गुरु–चरणों में, जीवन अर्पण लाते हो।।६५।।

आचार्य श्री श्रीलाल पधारे, चातुर्मास के तांय।
बालक गणपत ज्ञान पिपासा, लखकर मन हर्षाय हो।।६६।।

सायबलाल से बोले श्री जी, बालक है हुशियार।
दीक्षा में अन्तराय न देना, चमके ज्योति अपार हो।।६७।।

भविष्य वाणी निज बालक की, सुनकर पितु हर्षाय।
कालान्तर में जवाहर गणि का, वर्षावास सुखदाय हो।।६८।।

प्लेग व्याधि का तांडव नृत्य हा ! दीख रहा उस वार।
श्री चरणों के स्पर्श मात्र से, शान्ति हुई सुखकार हो।।६६।।

गणेशलाल जी दर्शन करने, पहुंचे स्थानक मांय।
साधारण परिचय पा मन में, परखा हर्ष भराय हो।।१००।।

एक दिवस उपदेशामृत में, नश्वरता बतलाई।
क्षणभंगुर यह मानव तन है, गतिविधि सब दर्शाई हो।।१०१।।

मन गमती जब बात सुनी तब, दिल में हर्ष अपार।
सुषुप्ति जागृत हुई पल में, संयम लीना धार हो।।१०२।।

अध्ययन गुरु सेवा में करते, सेवा गुण भंडार।
गुरु आज्ञा में तत्पर रहते, रात्रि दिवस मझार हो।।१०३।।

तर्क शैली थी अद्‌भुत जिनकी, गहन शास्त्र अभ्यास।
गुरु आज्ञा ही मुख्य समझते, जीवन मांहि प्रकाश हो।।१०४।।

सार्थक नाम गणेश सर्वथा, सफल हुआ उस बार।
हुक्म गच्छ की दोनों धारा, अजयनगर मझार हो।।१०५।।

युवाचार्य पद सब मिल सौंपा, सम्मेलन के मांय।
संघ हुआ हर्षित सब विधि से, गौरव गाथा गाय हो।।१०६।।

थली प्रान्त में सहे परिषह, किया धर्म उद्योत।
गणेशनारायण आप कहाये, जिनशासन की ज्योत हो।।१०७।।

देश देशान्तर विचरण करते, नित उठ धर्म प्रचार।
संयमयात्रा देख गुणीजन, नमते बारम्बार हो।।१०८।।

सादड़ी में सन्त सम्मेलन, दो हजार नव मांय।
आप श्री की अध्यक्षता में, सभा भरी हितलाय हो।।१०६।।

जैन जवाहर के भावों को, स्वीकारा तत्काल।
एक आचार्य का नेतृत्व, पा हुए निहाल हो।।११०।।

सत्ता सब कुछ सौंपी इनको, अनुशासक पद दीनो का।
सर्व सम्मति से संगठन का, आनंदामृत पीनो हो।।१११।।

अनुशासन की देख हीनता, किये विविध उपचार।
स्वछन्दवृत्ति का लख पोषण, समझाइश हर वार हो।।११२।।

सम्बन्ध हटाया लाचारी से, वृद्धावस्था मांय।
संयम मर्यादा रहे सुरक्षित, यही भाव मनमांय हो।।११३।।

कदम बढ़ाया शान्त क्रांति का, फैला यश संसार।
स्वच्छन्दी निज चेलों का भी, कर दीना परिहार हो।।११४।।

जोर जयाता कम वेदनी, समतारस भंडार।
औषधविद भी चकित भये, महाशक्तिपुंज निहार हो।।११५।।

युवाचार्यपद सौंपा गुरु ने, नाना नाम रसाल।
सूर्य झरोखे राजमहल में, चादर तन पर डाल हो।।११६।।

पंडित मृत्यु स्वर्ग सिधारे, यश फैला संसार।
नानेशगणि को पाकर श्रीसंघ, हर्षित है हर बार हो।।११७।।

वीर प्रभु की शुभवाणी पर, दृढ श्रद्धा अपार।
"समयं गोयम मा पमायए" कर जीवन साकार हो।।११८।।

ज्योंहि पाट विराजे गुरुवर, दीक्षा खूब प्रसार।
दीक्षा हुई दनादन भारी, श्रद्धा का विस्तार हो।।११९।।

मालव प्रान्ते आप पधारे, हुआ बहुत उपकार।
व्यसनी के बहु व्यसन छुड़ाये, धर्मपाल हितकार हो।।१२०।।

जूवा मांस शराब ही जिनका, था जीवन व्यवहार।
मुस्लिम और ईसाई बनने, को थे वे तैयार हो।।१२१।।

आपश्री ने बोध दिया था, शुद्ध समकित दर्शाय।
प्रेमभाव से हृदय पलटा, शुद्धाचार पलाय हो।।१२२।।

शत सहस्राधिक संख्या उनकी, नीति धर्म प्रचार।
वर्तमान में और अनेकों, सज्जन होते तैयार हो।।१२३।।

समता का सत्मर्म बताया, भव्यों को हितकार।
समता से ही सम्भव जग में, जनता का उद्धार हो।।१२४।।

समता ही सामायिक सच्ची, जैनागम अनुसार।
सभी मतान्तर भी यही माने, नहिं कोई इन्कार हो।।१२५।।

मेवाड़ मालवा और उड़ीसा, छत्तीसगढ़ निरधार।
महाराष्ट्र और थली प्रान्त में, गुरु विचरे सुखकार हो।।१२६।।

एक साथ में १५ दीक्षा श्री चरणे चित लाय।
और अनेकों भव्य साथ में, दीक्षाहित ललचाय हो।।१२७।।

सुरपति भी सेवा में रहते, साक्षात सच्ची बात।
काव्यकार को अनुभव सच्चा, झूठ नहीं तिल मात हो।।१२८।।

अंधों को दृष्टि मिल जाती, संकट दूर पलाय।
टी.बी. कुष्ट असाध्य रोग भी, पल में ही विरलाय हो।।१२६।।

जैन जैनेतर को है श्रद्धा, श्री चरणों के मांय।
रत्नत्रयी इनके जीवन में, सम्यक रहा समाय हो।।१३०।।

भूले भटके को भी गुरुवर, सच्ची राह दिखाय।
अष्ट सिद्धि नवनिधियां रहती, गुरु चरणे लिपटाय हो।।१३१।।

दिव्य तेज चरणों की रज को, जनता रही ललचाय।
दर्शन पाकर हर्षित होती, बोले जय हर्षाय हो।।१३२।।

ईति भीति सब भागे झट ही, चरण शरण परताप।
युवाजन को सही राह भी, दिखा मिटा संताप हो।।१३३।।

दृढ़ भूमिका शुद्धाचारी, का नित ही प्रसार।
वीतराग के मारग का नित, करते प्रचुर प्रचार हो।।१३४।।

संघर्षों से ही उन्नति, विनय भाव के साथ।
गुण छत्तीसों ही प्रगटाये, सनवाड़े साक्षात हो।।१३५।।

निन्दा स्तुति की नांही परवाह, मानामान समान।
निस्पृह जीवन अद्भुत तेरा, भव्य करे गुणगान।।१३६।।

गुरुवर श्री श्रीलाल गणी की, बाचा फली रसाल।
दश ही दिश में यश की सौरभ, फैल ही सुखमाल हो।।१३७।।

शिक्षा दीक्षा प्रायश्चित सब ही, एक आज्ञा धार।
सन्त–सती सब अनुशासित हैं, श्री चरणों में सार हो।।१३८।।

पुण्यवानी है गजब आपकी, माने सब संसार।
दुर्जन भी सज्जन बन जाते, लेते हृदय सुधार हो।।१३९।।

चरण शरण ली राममुनि भी, करता निज उत्थान।
वरद हस्त है नानागुरु का, पाता अनुपम ज्ञान हो।।१४०।।

विद्या [१] नगरी वर्षा वासे–खेती से सुखकार।
अमृतवाणी अद्भुत वर्षी, संघ मांहि सुखकार हो।।१४१।।

---

१. राणावास

६.दामनखा चरित्र

दोहा :— कर्म शत्रु दल जीतकर, पाया शिवपुर वास।
अनन्त सिद्ध भगवन्त का, जाप जपो हर श्वास।।१।।

कर्म शुभाशुभ जीव के, उदय होत जब आय।
बिन भुगते फिर ना टले, गुरु प्राज्ञ फरमाय।।२।।

(तर्ज :— एवन्ता मुनिवर, नाव तिराई बहता नीर में)

श्रोतागण सुनिये, रेखा कर्मों की टाली ना टले।।टेर।।

ाम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, बसंतपुर एक शहर।
ाजा राज्य करे "जितशत्रु", रखे प्रजा पर महर जी।।१।।

टराणी गुणखानी स्याणी, "कमला" षट्गुण धार।
ास दासी परिवारजनों की, करती सार सम्भार जी।।२।।

ाणी बद्ध बाजार भवन लख, सुरनर का मन मोहे।
ाग बगीचे कूप वापिका, सर सुन्दर कर सोहे जी।।३।।

ड़े—२ धनधारी वहां पर, रहते हैं व्यापारी।
ाभी दिशा से आकर बिकती, चीजें यहां पर सारी जी।।४।।

ोठ "धनावा" धन से भरिया, धनपति सा भण्डार।
ोठाणी "रूपा" घर माँही, लक्ष्मी का अवतार जी।।५।।

पति आज्ञा अनुसार चले नित, पतिव्रत धर्म निभावे।
घर आया कोई भी याचक, कभी न खाली जावे जी।।६।।

सभी तरह का आनन्द घर में, किन्तु नहीं संतान।
इसीलिए दम्पति के दिल में, रहता आर्तध्यान जी।।७।।

कई उपाय किए पर संतति, एक न घर में आई।
हो हताश सोचे यों मन में, नहीं करी पुन्याई जी।।८।।

अन्तराय के उदय हमारे, नहीं जन्मा कोई बाल।
अतः बुढ़ापे में फिर अपना, कैसा होगा हाल जी।।६।।

निद्रा में एक दिन रूपा ने, स्वप्ना ऐसा पाया।
पुत्र जन्म तो हुआ परन्तु, घर का धन विरलाया जी।।१०।।

सेठाणी ने सेठ के सामने, कहां स्वप्न का हाल।
घर धन सारा चला जाएगा, जन्मेगा जब बाल जी।।११।।

सेठ कहे संतान चाहिये, सम्पत्ति फिर हो जाय।
सुत मुख देखे दुःख मिटेगा, आशा भी पूराय जी।।१२।।

सेठाणी के उदर एक दिन, आया कोई जीव।
उसी दिवस से धन जाने की, लग गई उसके नींव जी।।१३।।

बड़े–२ व्यापार सेठ के, हो गये सारे बन्द।
चारों तरफ से रही हानि, भाग्य दशा हुई मन्द जी।।१४।।

पुत्र जन्मने से पहले ही, हाट हवेली सारे।
बिके कोड़ियों में जर जेवर, रहा न कुछ भी लारे जी।।१५।।

नव महीने पूरण होने पर, हुआ सेठ घर बाल।
अर्थ व्यवस्था सारी बिगड़ी, हुए हाल बेहाल जी।।१६।।

शुष्क खुशी हुई मात तात को, देख कूंख में लाल।
मोद विनोद करे अब किससे, रहा न कुछ भी माल जी।।१७।।

बहन भाई भाणेज बहुत पर, कौन बधाई लावे।
देने को नहीं पास रहे तब, सब दूरा हो जावे जी।।१८।।

खाने का राशन भी जिनके, रहा न घर के मांय।
तब माता के लिए सुवावड़, कहौ कहाँ से लाय जी।।१९।।

रहने को नहीं रहा पास में, जिनके एक मकान।
बना झोंपड़ी रहे जंगल में, देखो विधि विधान जी।।२०।।

दिया पुत्र का नाम 'दामनखा' आशा दिल में धार।
बड़ा होयगा, योग्य बनेगा, लेगा सार सम्भार जी।।२१।।

जैसे तैसे संकट मांही, सुत का पालन करते।
सर्दी गर्मी सहन करे सब, कठिन पेट को भरते जी।।२२।।

पांच बरस का हुआ लाल तब, दम्पति कीना काल।
कर्मों की गति कोई न जाने, बाल हुआ बेहाल जी।।२३।।

रहा अकेला दामनखा अब, कोई न पूछे आय।
दुःख की विरिया सगे सम्बन्धी, सब दूरे हो जायजी।।२४।।

भाग्यहीन जन्मा यह बालक, हो गया बंटाढार।
सम्बन्धी जन कहे यों मुख से, नहीं ले सार सम्भारजी।।२५।।

भूख समय पर खूब सताती, कौन रोटियां लावे।
दामनखा घर द्वारे जा, भीख मांग कर खावे।।२६।।

ऐसे करते समय निकलता, बालक का उसवार।
भावी को कोई नहीं जाणे, क्या–क्या लिखा लिलारजी।।२७।।

उसी नगर में नगर सेठ एक, 'लक्ष्मीधर' धनवान।
लक्ष्मी सम 'लक्ष्मी' सेठानी, सभी गुणों की खान जी।।२८।।

मदन पुत्र पितु आज्ञा पालक, विनयवान विद्वान।
विषा नाम की पुत्री सेठ के, रंभा रूप समान जी।।२९।।

एक दिवस गुरु शिष्य आहार को, आए सेठ घर मांय।
नानाविध सामग्री लाकर, भक्ति से बहराय जी।।३०।।

उसी समय आ गया दामनखा, कहे सेठ घर द्वार।
लूखा सूखा देओ टूका, भूखा हूं इसवार जी।।३१।।

रोटी बिन सब अस्थि–पंजर, सूख रहे दातार।
देदो रोटी भला होयगा, बालक रहा पुकार जी।।३२।।

किन्तु सेठ नहीं देकर कुछ भी, कहता जा कंगाल।
मुफ्त पड़ा है यहां क्या तेरा, बाप दादों का माल जी।।३३।।

बार–बार कर रहा आरजू, दामनखा नादान।
किन्तु रहे दुत्कार सेठजी, बना हृदय पाषाण जी।।३४।।

एक पेट भर माल उड़ाता, नहीं दूजे को टूका।
दृश्य देख रोमांचित हो, पर सेठ हृदय नहीं दूखा जी।।३५।।

शिष्य कहे गुरुदेव देखिये, कब से मांगत बाल।
किन्तु सेठ का दिल नहीं पिघला, देवे टुकड़ा डाल जी।।३६।।

अहो शिष्य ! कुछ समय बाद में, सुन लेना तू हाल।
सच कहता हूं इस घर का यह, स्वामी होगा बाल जी।।३७।।

सुनकर गुरु की बात सेठजी, चमक गए दिल मांय।
मेरे घर का स्वामी कैसे, होवे कंगला आय जी।।३८।।

गुरुदेव ज्ञानी है पूरे, झूंठ नहीं फरमाय।
अतः शिष्य के सम्मुख सारी, दीनी है दरसाय जी।।३६।।

मैं भी इसका निर्णय लेलूं, इन्हें पूछ इस बार।
फिर सोचे क्या पूछे इनको, नहीं कुछ भी सार जी।।४०।।

जो जो बातें कही गुरु ने, शायद हो निस्सार।
फिर भी सावधान ही रहना, कहते नीतिकार जी।।४१।।

ऐसा काम करूं मैं जिससे, रहे न जिन्दा बाल।
कैसे घर का मालिक होगा, कांटा देऊं निकाल जी।।४२।।

चाण्डालों को बुला पास में, कह दीना सब हाल।
दामनखे को मार सको तो, दूंगा गहरा माल जी।।४३।।

नहीं किसी को मालूम होवे, ले जाओ एकान्त।
गुप्त तरीके से कर डालो, इसका तुम प्राणांत जी।।४४।।

बध ककहे यह काम हमारा, करके अभी दिखावे।
किन्तु पहले धरो मोहरें, जितनी देना चावें जी।।४५।।

दीनारें ला दीनी जल्दी, बधक हुआ दिल राजी।
कई दिनों की हुई कमाई, जम गई अपनी बाजी जी।।४६।।

कन्दोई से एक सेर वह, दूध पेड़ा झट लाया।
मांगत आया दामनखा तब, दिखा उसे ललचाया जी।।४७।।

पेड़ा एक दिया कर मांही, फिर बोला चाण्डाल।
चल मेरे संग अन्दर तुझको, देऊं सब ही माल जी।।४८।।

बाल भाव से हुआ संग में, कीना नहीं विचार।
लालच वश नटुऐ ने जैसे, फन्दा लीना डार जी।।४६।।

ले जाकर एकान्त स्थान में, की नंगी करवाल।
देख चमकती खड्ग हाथ में, कांप गया वह बाल जी।।५०।।

मत मारो मैं दुखी जीव हूं, शरण तुम्हारी आया।
गद्गद् स्वर से रोता बोले, मैं दुःख से घबराया जी।।५१।।

सुन उसकी तुतलाती भाषा, बधक हृदय भर आया।
कितना भोला है यह बालक, कैसे सेठ मरवाया जी।।५२।।

मारक के दिल दया आ गई, नहीं मारूंगा बाल।
सेठ करे विश्वास मेरे पर, ऐसी चालू चाल जी।।५३।।

दी अंगुली को काट जरासी, दीना उसे भाग।
पीछे आया सिर काटेंगे, दीना यों धमकाय जी।।५४।।

रोता रोता भाग रहा है, नहीं पीछे कोई आय।
भय वश थर थर कांपत–कांपत, आगे–आगे जाय जी।।५५।।

प्रातः समय एक गांव आ गया, भागे रोता बाल।
एक चौधरी देख निकट मैं, आया है तत्काल जी।।५६।।

बड़े प्यार से उसे बुलावे, पर वह दूरा जाय।
मत मारो, मत मारो मुझको, मुख से रहा सुनाय जी।।५७।।

कहे चौधरी नहीं मारूंगा, आ आ मेरे पास।
दामनखा तब ठहर गया वहां, कर मन में विश्वास जी।।५८।।

समझा करके लाया घर पर, खूब बंधाई धीर।
कहे नार से यह ले बेटा, हरना इसकी पीर जी।।५६।।

है कुदरत का खेल अनोखा, हमें पुत्र की चाय।
सफल हो गई मनोभावना, घर बैठे ही आय जी।।६०।।

दूध दही घी घर में निपजे, मांगे सो तैयार।
दम्पति दिल से करे हमेशा, पूरी सार सम्भार जी।।६१।।

उधर सेठ के पास बधक ने, दिये चिन्ह दिखलाय।
मार दिया है बालक हमने, सुनी सेठ हरषाय जी।।६२।।

अब देखें कैसे हो सच्ची, जो गुरु ने फरमाई।
कैसे बजे बांसुरी जब कि, दीना बांस कटाई जी।।६३।।

कैसे हो मुझ घर का स्वामी, वह बाल कंगाल।
मिथ्या होगा गुरु कथन सब, सफल हुई मम चाल जी।।६४।।

सेठ हुआ निशंक जगत में, रहा न कंटक मेरा।
खुशियां खूब मनाता मन में, नित उठ सांझ सवेरा जी।।६५।।

उधर दामनखा मौज मनाता, नित जंगल में जावे।
गायें भैंसे चरा शाम को, वापिस घर पर आवे जी।।६६।।

काम देख खुश हुए दम्पति, मन में ऐसी लाय।
दत्तक पुत्र कर सब पंचों में, दीना घर सम्भलाय जी।।६७।।

उधर सेठ लक्ष्मीधर कन्या, विषा हुई है स्याणी।
यौवन वय को पाकर के भी, धैर्यवती गुणखानी जी।।६८।।

नित उठ कर सेठाणी कहती, पतिदेव सुन लीजे।
विवाह योग्य हो गई पुत्रिका, ध्यान शीघ्र अब दीजे जी।।६६।।

मात–पिता भाई सब रहते, इसी फिकर के मांय।
अच्छा घर वर जो मिल जावे, दे कन्या परणाय जी।।७०।।

सेठ कहे मैं खोज करूंगा, चिन्ता दो तुम टार।
हिसाब करने जहां जाऊंगा देखूंगा घर बार जी।।७१।।

कई दिनों के बाद सेठ ले, वाहन अपने लार।
हिसाब कराने को चल आया, इसी चौधरी द्वार जी।।७२।।

सेठ साहब का स्वागत करता, खूब चौधरी भाई।
माल पूवे और खीर जिमावे, प्रेम सहित घर लाई जी।।७३।।

दामनखे को देख वहां पर, शंका दिल में आयी।
यह छौरा तो वह है जिसको, मैंने दिया मराई जी।।७४।।

कैसा आया इस घर मांही, पूछ करूं निरधार।
दरवाजे में खाट बिछा कर, बैठे सेठ धर प्यार जी।।७५।।

कहे चौधरी से तेरा यह, लड़का है हुशियार।
भाग्यवन्त है पूरा इसका, चमक रहा लिलार जी।।७६।।

कितने बच्चे हैं और तेरे, कितना है परिवार।
कई दिनों से आया हूं सो, मुझको हुआ विचार जी।।७७।।

कहे चौधरी सुनों सेठ जी, हुई न मम सन्तान।
यह भी चलता मिला कहीं से, रक्खा कर सन्तान जी।।७८।।

सेठ तुरन्त सुन समझ गया दिल, वही यही कंगाल।
मैंने तो मरवाया कैसे, छोड़ गये चाण्डाल जी।।७६।।

किया मेरे से धोखा उन्होंने, इसको क्यों नहीं मारा।
अब भी ऐसा काम करूं जो, होवे मन का धारा जी।।८०।।

कहे चौधरी हिसाब करलो, जो हो लेना देना।
जो–जो आई होवे चीजें, उसका ही धन लेना जी।।८१।।

बस्ता खोल कपट कर बोला, सेठ चौधरी तांई।
जल्दी के आने में मुझसे, भूल हो गई भाई जी।।८२।।

बहियों में वह बही न मिलती, जिसमें है तुझ लेख।
अतः कभी मैं फिर आऊंगा, दूंगा सब कुछ देख जी।।८३।।

कहे चौधरी भेजूं पुत्र को, वही लेय आ जाय।
लिख दो कागज अभी पुत्र को, सभी काम हो जाय जी।।८४।।

सोचे मन में काम बना मुझ, लिखूं पुत्र को पत्र।
किसी तरह कर उपाय करके, खत्म करेगा तत्र जी।।८५।।

पहले तो बच गया अब न बचेगा, ऐसा करूं उपाय।
पत्र पुत्र को लिखने बैठा, दिल में भाव जमाय जी।।८६।।

जिसको तेरे पास भेज रहा, पत्र मुआफिक करना।
किसी प्रकार का किंचित् भी भय, मन में तू मत रखना जी।।८७।।

मेरे आने की भी प्रिय सुत ! इन्तजार मत करना।
सोच समझ लिख रहा तुझे मैं, पत्र पास में रखना जी।।८८।।

नहीं किसी से सलाह पूछना, भेद न किसको देना।
योग्य समझ कर पत्र लिखा है, वही कर लेना जी।।८६।।

पत्र द्वारा संदेश

" प्रिय पुत्र तुझ पास लेय, यह आ रहा पाती।
विष दे देना जिससे हो, मम शीतल छाती।।
भेद न कोई पाय, पूछना मत कोई जाती।
बन जावे सब काम, बुझेगी दुःख की वाती।।

पत्र बन्द कर दिया हाथ में, जल्दी जाकर देना।
जो तुझको दे चीज उसे झट, मना किये बिना लेना जी।।६०।।

अपने सुत से कहे चौधरी, जाना सेठ के द्वार।
जो कुछ देवे ले लेना तू, मत करना इन्कार जी।।९१।।

दामनखा ने लड्डु हाथ में, नई अंगरखी पहन।
बांध पत्र को कस के जल्दी, लांघ गया बन गहन जी।।९२।।

चलते–चलते शहर के पास के, बाग बीच में आय।
ठडी देख आम्र की छाय, सोने को चित लाय जी।।९३।।

सोते ही निद्रावश हो गया, दामनखा उसवार।
अब यहां पर क्या होता है सो, सुनिये सब नरनारजी।।९४।।

भाग्योदय का समय हुआ, अब कटा पाप का बंध।
'सोहन मुनि' कहे इस चरित्र का, आधा हुआ संबंधजी।।९५।।

उसी समय वहां सेठ कुमारी, आई सखियां साथ।
रंग बिरंगे फूल देख कर, करे परस्पर बात जी।।९६।।

तरह तरह के खिले हुए हैं, कितने सुन्दर फूल।
सबकी सौरभ अलग–अलग है, यह कुदरत का खेल जी।।९७।।

सेठ कुमारी आम्र वृक्ष तल, देखे भव्य कुमार।
कामदेव सा रूप अनुपम, और वर्ण दीदार जी।।९८।।

सबसे आंख बचाकर कंवरी, कुंवर पास में आयी।
पिता हाथ का पत्र देखकर, लेने को ललचाई जी।।९९।।

खोल पत्र को पढ़ कर कन्या, मन में अति हरसाई।
पूज्य पिता ने लिख भेजा है, मुझ शादी के तांई जी।।१००।।

किन्तु भूल से विषा स्थान पर, विष देदे लिख दिना।
भूल कितनी होती है, कैसा अनरथ कीना जी।।१०१।।

पढ़ कर पत्र पिता हुक्म से, भ्राता यदि विष देगा।
मानव हिंसा का अध कितना, शिर {पर ले लेगा जी।।१०२।।

आंख के अंजन से भर कर, एक सलाका लीनी।
विष की जगह विषा लिख करके, पुनः चिट्ठी कस दीनीजी।।१०३।।

सखियों में आ वापिस मिल गई, नहीं खुशी पार।
कहती सखियां आज विषा का, खिल रहा है दीदार जी।।१०४।।

मालूम होता आज हृदय के फले मनोरथ माल।
नहीं बताती समझ गई हम, तेरी गुप्त सब चाल जी।।१०५।।

रंग रंगीली बातें करती, आई सब घर चाल।
विषा हृदय में बांध रही पुल, भविष्य का सब हाल जी।।१०६।।

खुली नींद झट उठा दामनखा, आया सेठ के द्वार।
सेठ कंवर के हाथ पत्र देकर, लीना नमस्कार जी।।१०७।।

अच्छे आसन पर बैठा कर, लिया पत्र को बांच।
सुन्दर स्वस्थ देखकर भेजा, करके पूरी जांच जी।।१०८।।

मदन विचारे कई दिनों से, थी चर्चा घर मांय।
विषा हो रही है बड़ी किसी को, निद्रा भी नहीं आयजी।।१०९।।

ठीक किया यह अभी बुलाकर, पूछूं जोशी तांय।
जोशी कहे जो आज लग्न है, ऐसा कभी न आय जी।।११०।।

बड़े ठाठ से विवाह विधि की, खर्चा खूब लगाया।
लोक सभी मिल करे प्रशंसा, बाई भाग्य सवाया जी।।१११।।

सेठ साहब ने अच्छा वर लख, भेज दिया निज द्वार।
कारणवश आ सके नहीं वे, है यह दिन शुभकार जी।।११२।।

दामनखा कहे मुझको, सीख देवें बक्षाय।
इन्तजार करते होंगे वहां, वापिस क्यों नहीं आयजी।।११३।।

जब तक पूज्य पिता नहीं आवे, तब तक तो ठहरावें।
वे ही देंगे सीख आपको, मदन अरज सुनावे जी।।११४।।

सेठ विचारे मम आज्ञा से, पुत्र ! लिखा सो कीना।
दामनखे को मार उन्होंने, अच्छा काम कर दीना जी।।११५।।

जिन्दा होता तो आ जाता, नहीं लगाता बार।
कहके चौधरी को अब यहां से, जाऊं मैं तत्काल जी।।११६।।

सुनो चौधरी ! मेरे भी वहां, काम पड़ा है सारा।
आया नहीं वह फिर आऊंगा, हिसाब करने थांरा जी।।११७।।

कहे चौधरी वह नहीं आया, जिसकी चिन्ता भारी।
काम छोड़कर यहां से मेरा, जाना है दुष्कारी जी।।११८।।

अतः वहां जाकर के उसको, जल्दी करें रवाना।
मौज मजे में मस्त हुआ वह, कैसा बना दीवाना जी।।११६।।

सेठ वहां से चलकर आया, बसन्तपुर के मांय।
जो भी मिले वहीं कर मुजरा, ऐसी बात सुनाय जी।।१२०।।

भला किया सब काम आपने, सुन्दर कंवर भिजाय।
आज्ञा पालक पुत्र आपका, कीना काम सवाय जी।।१२१।।

ये सब कहते मुझे व्यंग में, करता सेठ विचार।
जन–जन को मालूम हो गई है, दीना काम बिगार जी।।१२२।।

निज घर को आकर जो देखा, काम और दिखलाय।
रंग ढंग सब शादी का वहां, तौरण रहा बताय जी।।१२३।।

इते मदन पद वन्दन कर कहे, अच्छा कीना काम।
योग्य कंवर लख भेजा आपने, कह दी बात तमाम जी।।१२४।।

कौन कंवर किसकी हुई शादी, कैसा कीना काम।
पुत्र कहे यह पुत्र आपका, हुक्म मुजब हुआ काम जी।।१२५।।

पत्र देख लक्ष्मीधर सोचे, मैंने भूल की भारी।
विष के स्थान विषा लिखा दिना, अब क्या लागे कारी जी।।१२६।।

जो होना सो हुआ परन्तु, अब भी करूं उपाय।
चाहे कन्या विधवा होवे, इसको दूं मरवाय जी।।१२७।।

दुष्ट भाव रख सेठ सोचता, जल्दी काम बनाऊं।
तभी होय सन्तोष मेरे दिल, जब इसको मरवाऊं जी।।१२८।।

चाण्डालों को बुला उसी क्षण, कह दीनी सब बात।
मेरे संग में धोखा कीना, उसकी नहीं की घात जी।।१२६।।

बधक कहे लख बाल भाव मम, दिल में दया समाई।
इसीलिए तज दीना उसको, सच्ची दी दरसाई जी।।१३०।।

अब भेजूं देवी मन्दिर में, कर देना तुम घात।
पहले छोड़ दिया है वैसे, अब नहीं छोड़ें भ्रात जी।।१३१।।

भूल हुई सो माफ करें अब, करके काम दिखावें।
देवी मन्दिर जो आवेगा, वह जिन्दा नहीं जावे जी।।१३२।।

अभी जा रहे देवी मन्दिर, सुन लेना सब हाल।
जिसको भेजेंगे उसका ही, समझो आया काल जी।।१३३।।

बुला जवांई को सुसरे ने, ऐसी बात सुनाई।
देवी पूजे बिन घर रह गये, भारी गलती खाई जी।।१३४।।

आज सभी पूजा सामग्री, लेय रात को जावे।
करके पूजा नम्र भाव से, वापिस घर को आवें जी।।१३५।।

रात हुई ले थाल चला वह, जाते मारग मांय।
बहनोई को जाते देखकर, साला दौड़ा आय जी।।१३६।।

कहां पधारो ऐसे वक्त में, रात अंधेरी छाय।
दामनखा कहे देवी स्थान जा, आऊं थाल चढ़ाय जी।।१३७।।

आप न जाणों देवी स्थान को, अतः अरज करवाऊं।
पूजा थाल मुझको दे देवें, अभी चढाकर आऊं जी।।१३८।।

थाल दे दिया मदन हाथ में, बहनोई घर आया।
देवी पूजा हो जावेगी, जैसे सेठ फरमाया जी।।१३९।।

अति उमंग धर गया मदनजी, देवी मन्दिर मांय।
पूजा थाल रख भूमि ऊपर, नीचा शीश झुकाया जी।।१४०।।

उसी समय वहां छिपे बधक ने, दीनी खड्ग चलाय।
उड़ा शीश मदन का जल्दी, सीधे निज घर जाय जी।।१४१।।

निद्रा से उठ सेठ विचारे, हो गई मन की धारी।
अभी सुनूंगा निज कानों से, दुश्मन गया है मारी जी।।१४२।।

प्रातःकाल जब देखी पुत्री, तन श्रृंगार सजाही।
पिता विचारे अभी रोयगी, बैठी कोने मांही जी।।१४३।।

थोड़ी देर ही चटक–मटक है, जब तक खबर न आय।
फिर तो सारे स्वयं हाथ से, देगी वस्त्र हटाय जी।।१४४।।

इतने में आ गये जवांई, देख सेठ विस्माया।
कैसे जिंदा छोड़ दिया फिर, मन में अति दुःख पाया जी।।१४५।।

रिश्वत लेकर छोड़ गया है, वह पापी चाण्डाल।
कैसे बच कर आये घर पर, पूछूं सब ही हाल जी।।१४६।।

बुला जवांई को यों बोला, गये न देवी स्थान।
देवी रूष्ट होवेगी गहरी, दोषी तुमको जान जी।।१४७।।

किस कारण से रुके यहां पर, कहदो बात तमाम।
कुल देवी नाराज हुई तो, बिगड़ जाय सब काम जी।।१४८।।

कहे जवांई पूजा थाल ले, जाते मारग मांय।
सालाजी मिल गये बीच में, लीना थाल छिनाय जी।।१४६।।

आप न जानो देवी स्थान को, मैं पूजा कर आऊं।
रात अंधेरी विकट मार्ग है, इसीलिए मैं जाऊं जी।।१५०।।

वे थाली ले गये और मैं सोया भवन मंझार।
सुनी सेठ थर्राया दिल पर, छाया घोर अंधार जी।।१५१।।

उसी समय आवाज लगाई, राज सन्तरी आकर।
क्या घटना हुई देवी स्थान पर, देखो सेठजी जाकर जी।।१५२।।

जा कर देखा पुत्र मरा है, पड़ा सेठ घस खाय।
बुरा किये का बुरा नतीजा, कहता प्राण गंवाय जी।।१५३।।

मर कर दुर्गति माहीं पहुंचा, कर कर खोटे काम।
कभी किसी का बुरा करो मत, चाहो सद्गति धाम जी।।१५४।।

राजा कर इन्साफ कंवर को, गृह जवांई कीना।
करके अति सम्मान सेठ को, नगर सेठ पद दीना जी।।१५५।।

सुख सम्पति आनन्द भोग रहा, दामनखा मन चाया।
कुछ भी कमी नहीं घर अन्दर, पूर्व पुण्य पसाया जी।।१५६।।

गए चौधरी से मिलने हित, लेकर निज परिवार।
जाकर गिरे चरण में दम्पति, छाए हर्ष अपार जी।।१५७।।

दामनखा को उठा चौधरी, लीना कंठ लगाय।
दीने आशीर्वाद अनेकों, शिर पर हाथ धराय जी।।१५८।।

बेटे बहू को देख पटेलण, फूली नहीं समाय।
कैसा सुन्दर योग मिला है, वर जोड़ी सुखदाय जी।।१५९।।

दामनखा कहे कृपा आपकी, जो कुछ रहा दिखाय।
ले आशीष गया मैं यहां से, फल उसी का पायजी।।१६०।।

मुझ पर जो हुई कृपा, आपकी भूलू नहीं उपकार।
पालन पोषण करके मेरी, कीनी खूब संभार जी।।१६१।।

अब चल करके रहो पिताजी, अपने ही घर बार।
कहे चौधरी इस घर से अब, कैसे हो छटकार जी।।१६२।।

अवसर देख कभी आऊंगा, रहो मौज के मांय।
भोजन करवा कर बेटे को, विदा किया समझाय जी।।१६३।।

वापिस आकर निज पेढ़ी का, लीना काम संभाल।
लोगों में अब जाहिर हो गई, यह तो वह है बाल जी।।१६४।।

सेठ धनावा का है लड़का, आज हुआ धनवान।
सगे सम्बन्धी आ आ करके, देते निज पहचान जी।।१६५।।

सोचे दामनखा सब स्वार्थी, करे स्वार्थ की बात।
ये भी वही और मैं भी वही हूं, क्या अंतर दिखलातजी।।१६६।।

गुप्तदान शालाएं खोली, चाहे सो ले जाय।
दीन अनाथ अपंग हजारों, मन चाहा वहां पाय जी।।१६७।।

हुआ सेठ के घर जन्म पुत्र का, खुशियां खूब मनाई।
मुक्त हाथ से दान दिया जो, मांगें याचक आई जी।।१६८।।

दिया पुत्र का नाम गुणाकर, करके जीमणवार।
बड़ा हुआ पढ़ने को भेजा, आया हो हुशियार जी।।१६९।।

इधर विचरते वहां पर आये, ज्ञानी गुरु अणगार।
फैली वार्त्ता शहर में, आए हैं नरनार जी।।१७०।।

वन्दन कर जम गई परखदा, देवे गुरु उपदेश।
सुख दुःख पूरब कृत कर्मों से, भोगे जीव हमेश जी।।१७१।।

वाणी सुनकर दामनखे ने, कीनी यों अरदास।
किस कारण से मैंने गुरुवर, भोगी दुःख की रासजी।।१७२।।

गुरुदेव कहे पूरव भव में, था तू मच्छीमार।
पकड़ पकड़ मच्छी को अपना, जीवन रहा गुजार जी।।१७३।।

सन्त देशना सुनकर तूने, करी प्रतीज्ञा एक।
पहली मच्छी नहीं मारूंगा, रक्खू पूर्ण विवेक जी।।१७४।।

लेकर जाल गया उस ऊपर, दिया जाल फैलाय।
मोटी मच्छी आई जाल में, तब सोचा दिल मांय जी।।१७५।।

इसे छोड़ कर फिर फैलाऊं, पुनः वही आजाय।
तब तो मेरा नियम भंग हो, कैसे करूं उपाय जी।।१७६।।

थोड़ा पंख काट कर उसको, दीना जाल में डाल।
तीन वक्त मच्छी वह आयी, दिया फैंक तब जाल जी।।१७७।

कुछ भी राशन नहीं मिला, स्त्री ने कलह मचाया।
निकल गया घर छोड़ उसी क्षण, सन्त चरण में आयाजी।।१७८।।

दया प्रभावे शुद्ध भाव रख, किया वहां से काल।
गया स्वर्ग में आयु भोग कर, आया यहां पर चाल जी।।१७९।।

हिंसक वृत्ति से दुःख पाया, बालपने के मांय।
तीन वक्त की रक्षा जिससे, तीनों घात टलाय जी।।१८०।।

फिर नहीं करना जीवन घात यह, करुणा घट में आयी।
इसीलिए ही तूने यहाँ पर, इतनी सम्पत्ति पाई जी।।१८१।।

सुनकर के उपदेश उसी क्षण, चढ़ा रंग संवेग।
तज करके निस्सार सम्पत्ति, लेलूं संयम वेग जी।।१८२।।

वंदन करके अर्ज किया यो, सत्य आप फरमान।
अब मैं जल्दी दीक्षा लेकर, करूं आत्म कल्याण जी।।१८३।।

घर आकर के बुला पुत्र को, दिया सभी सम्भलाय।
बड़े ठाठ से दीक्षा लेकर, रहे गुरु संग मांय जी।।१८४।।

जप तप करणी करके पहुंचे, अमर गति दरम्यान।
वहां से आयु भोग विदेह में, पासी शिवपुर स्थान जी।।१८५।।

जैसी देखी वैसी मैंने, कथा जोड़ बनाई।
कम ज्यादा का मिथ्या दुष्कृत, देता हूं मैं भाई जी।।१८६।।

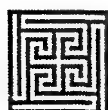
प्राज्ञ प्रसादे "सोहन मुनि" कहे, अनुकम्पा दिल धारो।
प्राणी मात्र को समझो, निज सम हो जावे भव पारो जी।।१८७।।

दो हजार उन्नीस मसूदा, वर्षावास सुखकार।
गुरु कृपा से ठाणा पांच के, वरत्या मंगलाचार जी।।१८८।।

उपवास वेला तेला अठाइयां, नवरंगी हुई खास।
घणी उमंग से श्रावक श्राविका, सफल किया चउमास जी।।१८६।।

सब श्रोतागण बड़े प्रेम से, निज दिल के पट खोलो।
पूज्य "प्राज्ञ" गुरुदेव सिरि की, एक साथ जय बोलो जी।।१६०।।

।। दामनखा चरित्र सम्पूर्णम्।।



७. चम्पक चरित्र

।।मंगलाचरण।।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतम प्रभु।
मंगलं स्थुलिभद्राद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

—दोहा—

वर्द्धमान शासन—पति, तारण—तिरण—जहाज।
नमन करी ने विनवूं, दीजो शिवपुर राज।१।

गौतम—गणधर सेवता, सकल—विघ्न टल जाय।
अष्ट सिद्धि—नवनिधि मिले, पग—पग सुख प्रगटाय।२।

उपकारी सद्गुरु भला, तीनों लोक महान।
आतम—परमातम करे, यह गुरु महात्म्य जान।३।

शारदमाता प्रणमूं, मांगू बुद्धि विशाल।
अभय—दान पर कथन यह, उत्तम बने रसाल।४।

चम्पक नामा सेठजी, दीना निर्भय दान।
सुख—सम्पति वांछित मिली, मिला राज—सम्मान।५।

तर्ज : मुक्ति जाने की डिग्री दीजिए।

करुणा दिलधारी, पूरण उपकारी चम्पक सेठजी ।टेर।

देश मनोहर मालवो सरे, नगरी बड़ी उज्जैन।
राजा राज करे जहां विक्रम, प्रजा में सुख चैन हो।१।

बावन भैरूं, चोसठ योगिनी, सफरा नदी के तीर।
महाकाल गणपति हर सिद्धि, सहायक आग्यो वीर हो।२।

उसी नगर में जीवो सेठ रहे, धन भरिया भण्डार।
मुल्का में दुकानां उसकी, बड़ा है नामूनदार हो।३।

सेठानी है धारिणी सरे, पतिव्रता सुकमाल।
चम्पक कुँवर है विद्या सागर, शशि सम शोभे भाल हो।४।

एकाकी पुत्र सेठ के, पूरण आज्ञाकारी।
दातारां शिर शेयरों सरे, मात गिने परनारी हो।५।

गजगमनी–मनहरणी रमणी, अप्सरा के अनुहार।
धर्मवती है ऐसी ललना, कुँवर के सुखकार हो।६।

उसी समय में कहूं जिकर, तुम सुणजो भव्य फिलहाल।
हंसा केरा देश में सरे, पड़्यो अति दुष्काल हो।७।

शतहंसों का उड़ा यूथ चल, सफरा तट प आई।
सुन्दर वृक्ष अविलोकी बैठा, विराम लेने के तांई हो।८।

वृद्ध हंस कहे यहां मत बैठो, नगरी आ गई पास।
अन्य स्थान विलोकी ठेरों, जहां है निर्भय वास हो।९।

नवयुवक कहे अणी वृद्ध की, कभी न माने बात।
इच्छा हो सो कीजिए सरे, मैं भी तुम्हारे साथ हो।१०।

आया शिकारी उसी रैन में, गया जाल वो डारी।
पूछा वृद्ध से राह बतावो, कष्ट पड़ा अति भारी हो।११।

वृद्ध कहे वचने की युक्ति, कहूं ध्यान में लीजो।
आता देख शिकारी ने सब, मृत्युवत् वन जाओ हो।१२।

यूं व्यवस्था वधिक देख ने, देगा भूमि डाली।
सौ ठपके होने पै उड़जो, ऐसी चलजो चाली हो।१३।

आया हिंसक प्रातःकाल में, देखी वह पछताया।
ये सुकमाल समुद्र का वासी, तड़फी प्राण गमाया हो।१४।

चढ़ा तरु पे डाला जमीं पे, एक–एक ने देखी।
सौवां ठपका हुआ छुरी का, उड़े हंस रहा एकी हो।१५।

है यह विविध गति कर्मों की, वृद्ध हंस रहा पास।
हिंसक कह थे खोई कमाई, तुंही है कपटी खास हो।१६।

तीक्ष्ण कीनी शीघ्र छुरी ने, मारन हुआ तैयार।
हंस कहे दूं बदलो सबको, जो मुझे देवे उबार हो।१७।

मान शिकारी डाल पिंजरे, आयो उज्जैनी चाल।
तीन रोज तक फिरा शहर में, मिला न कोई दयाल हो।१८।

कियो कोप हंस पे हिंसक, काढी छुरी बातवे।
खा गयो खरच गांठ को सारो, अब क्यों दुःखी बतावे हो।१६।

मारी चीरू हंस ने ऐसी, चम्पक सुनके आया।
लिया पींजरा छीन हाथ से, उसको खूब दबाया हो।२०।

कहे हंस अय कुँवर दयालु, जो तूं बड़ा दयाल।
दस सहस्त्र दे रुपये छुड़ाले, करदे इसे निहाल हो।२१।

ले पींजरा संग शिकारी, कुंवर दुकानें आया।
दस हजार रुपए दो मुनीमजी, मैंने इसे बचाया हो।२२।

सुनो कुँवर यूं धर्म कमासो, तो होसी नुकसान।
और बात मत करो मुनीमजी, नाणो दो झठ आन हो।२३।

व्याध रुपये ले कहे कुंवर से, रखो ब्याजुणा मांही।
हिंसायुक्त कार्य को तज कर, भरूं पेट इण मांही हो।२४।

कुंवर–हंस का गुण गाता वो, पुरुष गया निज स्थान।
मुक्ता चुगावे कुंवर हंस को, आगे सुनों धर ध्यान हो।२५।

मुनीम सेठ पै चुगली खाई, कीनों कुंवर अकाज।
दस सहस्र में हंस खरीदा, नहीं मानी मुझ आज हो।२६।

दया–धर्म का काम किया है, बेटा है बुद्धिमान।
सच्चा मोती सदा चुगावे, यह भी सुन लो कान हो।२७।

दया करी तो पूर्ण करनी, यही इसी का सार।
मुनीम विचारे सेठ न मानी, जाग्यो द्वेष अपार हो।२८।

वनिक निन्यानवें की सिखलाई, लायो करी तैयार।
बैठा सेठ था "जुंवार" करीने, बोले इस प्रकार हो।२९।

लक्ष–लक्ष दो रुपये उधारे, म्हांने सहायता दीजे।
परदेशां में जावा कमांवा, इतनो सुयश लीजे हो।३०।

आप तणां सुत ने संग दीजे, यह भी कमाई लावे।
इन्हीं की कृपा से हम सब, साता वहां पर पावें हो।३१।

एकाकी है लाल मुनीमजी, भेजां बड़ो विचार।
सो कहे बिना गया परदेसां, नहीं होवे होशियार हो।३२।

उलट–पुलट कही सेठ ने, सरे दीनी बात चलाई।
बुला पुत्र ने सेठ कहे यूं, लायो परदेशां कमाई हो।३३।

हाथ जोड़ ने कहे कुंवर यूं, हाजिर हुक्म के मांई।
लाख २ की हुन्डी मुनीम से, सबको दीनी लिखाई हो।३४।

खोटी हुन्डी लिखी कुंवर ने, लेली गफलत मांई।
घर आकर विनम्र मात से, दी सब बात सुनाई हो।३५।

माता कहे परदेश जाने की, मत काढ़ो मुख बात।
तुम बिन नहीं सुहावे क्षणभर, किम काटूं दिन–रात हो।३६।

हुक्म पिता का कभी न लोपूं, जाऊं देसावर खास।
लक्ष रुपये की हुन्डी है संग, और हंस है पास हो।३७।

हंस चुगावा ने बेठाजी, ले मोतियां की रास।
मंजूर करी ले आज्ञा माता की, आया नारी आवास हो।३८।

प्यारी मैं परदेश सिधाऊं, सेवा ससुर की कीजो।
स्वयं चतुर कहां तक कहूं, हुक्म सास के रीजो हो।३९।

तन छाया जुं नार रहे संग, सदा पति के लार।
दुःख–सुख में रही रामचन्द्र संग, जैसे सीता नार हो।४०।

नहीं राम मैं, नहीं तू सीता, नहीं ले जाऊं साथ।
पग–बन्धन परदेश पुरुष के, है नारी की जात हो।४१।

नहीं माने पे कहे कुशल रहो, बेगा राज पधारो।
रुखमण सारे सदा श्याम ने, ऐसे हृदय हमारे हो।४२।

शुभ मुहूर्त देखी ने चाल्या, वनिक साथ में सारा।
समुद्र किनारे आया जहाज में, भरा माल तिणवारा हो।४३।

कर हुंशियारी सारे बैठे, चला जहाज उसवार।
कई योजन गया नीर उलंघी, रत्नागर मंझार हो।४४।

सारे सोते रैन में सरे, हुई नभ से वाण।
पुरुष मिले इस समय नार से, होय पुत्र पुन्यवान हो।४५।

सवा लक्ष की लाल उगले, नित्य प्रति जरा न झूंठ।
हंस जगावे तुरन्त कुंवर ने, ऊठ २ झठ ऊठ हो।४६।

कुंवर बात सुन कहे हंस ने, कैसे जाना होय।
बैठ पीठ पर मेरे जल्दी, रखूं लेजा के तोय हो।४७।

बैठा पीठ पै हंस कुंवर को, दीना घरे उतारी।
खोल किंवार प्यारी मैं चम्पक, आया हूं इणवारी हो।४८।

पति गया परदेश कमावा, तू है कोई व्यभिचारी।
कहूं अभी मैं सास-ससुर से, तेरी होय ख्वारी हो।४६।

हंस कहे यह कंथ तुम्हारा, फिर तो लिया पिछानी।
खोल किंवार दोई मिले प्रेम से, हुई बात मनमानी हो।५०।

मैं जाऊंगा अभी नार कहे, कैसे रहसी आब।
सासु पूछे बात उदर की, जिसका क्या जवाब हो।५१।

लेलो मुद्रिका-हार हमारा, पक्का यहीं निशान।
यही अन्जना सती बताया, नहीं मानी सुलतान हो।५२।

मेरी सास से मिले आप, जब माता को बुलवाई।
दी भोलावन खूब आप गया, फिर जहाज के माई हो।५३।

सर्व प्रमादी उठे नींद से, भेद कोई नहीं पाया।
जहाज आय ठेरा बन्दर में, डेरा वहीं लगाया हो।५४।

बसन्तपुर में गये सकल मिल, देखी छटा बजार।
निन्यानवे की हुण्डी बिक गई, बाकी रहा कुंवार हो।५५।

वनिक कहे ले नाणा हमसे, करो आप रुजगार।
लेना नहीं दाम किसी से, नहीं करना कोई कार हो।५६।

हंस कहे मैं जाऊ भ्राता, देश हमारा पास।
बहुत वर्ष पूर्ण हुआ सरे, कुटुम्ब मिलन की आस हो।५७।

कुंवर कहे इस मौके पै भला, तूं भी छे दिखलावे।
उंपकार किया मेरे पै दूना, रक्खा भी किम जावे हो।५८।

हंस कहे मिलूंगा आकर, ऐसी कही सिधाया।
मिला कुटुम्ब से जाकर जल्दी, सब वृत्तांत सुनाया हो।५६।

उपकारी का दृश्य दिखा दो, चलो हंस इस बार।
मुक्ता-फल भर लिया चोंच में, आए हंस सब लार हो।६०।

चम्पक कुंवर को देखने सरे, सबका मन हुलसाया।
भेंट करी मुक्ता यूं बोले, नहीं जावे गुण गाया हो।६१।

तीजे-चौथे दिन सब आसां, मोती भेंट में लासां।
जहां तक ठेरो आप यहां पै, सेवा यही बजासां हो।६२।

ऐसे कहीं हंस गए स्थानक, चम्पक करे विचार।
ग्वालन से गोबर मंगवावे, देई टका दो-चार हो।६३।

मोती मिला उपल खुद थेपे, कोई भेद नहीं पावे।
बिन मोती का संग थेपे, अलग-अलग जमावे हो।६४।

अब पीछे की सुनो बात, सासु ने बहू चेतावे।
कहो हाल सुसराजी से तुम, अहोनिश बीती जावे हो।६५।

सो कहे कहूं-कहूं यूं कहती, गई पियर के मांई।
किसी कार्य में ऐसी बिलमी, कई मास नहीं आई हो।६६।

एक समय मुनीमजी सरे, आया हवेली मांय।
गर्भवती देखी लाडी ने, कहे सेठ से जाय हो।६७।

इज्जत मिट्टी में मिली सरे, बुरी हुई या सेठ।
कुंवर गया परदेश कभी का, किम रहा बहू के पेट हो।६८।

सुसरो सुनके कोपियो सरे, सीधो हवेली आयो।
कुल–हीनी तू पापनी सरे, सारो वंश लजायो हो।६९।

बहू कहे ऐसे किम बोलो, पूछो सास से जाई।
सत्यासत्य को निरणे करलो, देर लगे नहीं कांई हो।७०।

झूंठो कलंक दिया से सेठां, मोटो लागे पाप।
चुगलखोर की केण न माने, बानीशमन्द हो आप हो।७१।

सेठ आया दुकान पे सरे, कहे मुनीम के तांई।
चम्पक की माता सब जाने, उसको लेवो बुलाई हो।७२।

त्रियां–चरित्र नहीं जानो सेठां, करी जाल भरमाया।
सोनारण ससुर–देवर छल, सबको सांच बताया हो।७३।

पाताल–सुन्दरी पति सामने, गई सेठ के लार।
अभियादे–सुदर्शन सिर पे, झूंठा दीना आल हो।७४।

मारी केन मानो तो इणने, वन–खण्ड में छिटकावो।
या दिलावो जहर अणीने, जो थें इज्जत चावो हो।७५।

वृद्ध जान ली मान केन, फिर सेठ हुक्म फरमाई।
इच्छा हो सो करो मुनीमजी, म्हारी नहीं मनाई हो।७६।

बुला सारथी ने कहे बहू को, छोड़ो विपिन के बीच।
तड़फ–तड़फ कर मर जावेगी, या खावे सिंह–रीछ हो।७७।

रथ के बीच बैठाय के सरे, पियर मिस ठहराई।
लायो वन में तुरत उसे वो, उपट–पंथ के मांई हो।७८।

धर्मवती कहे असे सारथी, मुझे कहां ले जावे।
नयनाश्रुत हो उसी मुनीम की, सारी बात सुनावे।७६।

श्रवण कर मूर्छा गई सरे, रहा जरा नहीं तोल।
शीतल वायु से हुई सचेतन, बोलीं ऐसा बोल हो।८०।

अय सास अच्छी करी सरे, नैना बरसे नीर।
बिना चेताया सुसराजी ने, कैसे गई तूं पीर हो।८१।

हे निर्दय निष्ठुर ससुर थने, जरा दया नहीं आई।
निर्णय करतो, बात पूछ तो, क्यों वनवास पठाई हो।८२।

अय मात मैं पूर्व–जन्म में, कैसा पाप कमाया।
वीतराग के धर्म का मैं, मिथ्या औगुण गाया हो।८३।

चोरी करी, शिकारां खेली, सुखिया ने दुःखी बनाया।
परपुरुष की करी मैं वांछा, न पति का हुक्म उठाया हो।८४।

कपट करी, प्रतिज्ञा तोड़ी, पर पै दोष लगाया।
माता पुत्र की करी जुदाई, नर–नारी भेद पड़ाया हो।८५।

कूड़ा तोला, कूड़ा मापा, सुलिया नाज पिसाया।
झूंठा लेख, रखा धर्मादा, हरिया वृक्ष कटाया हो।८६।

मदिरा–मांस का आहार किया था, करुणा दिल नहीं आनी।
कैसा कर्म अनिष्ट किया या, फेरी–फिराई घाणी हो।८७।

रात्रि–भोजन कन्द मूल का, आहार प्रसन्न हो कीना।
नास्तिक बन उपदेश दिया, फिर अनगल पानी पीना हो।८८।

नहीं किसी का दोष सारथी, कर्मों की तकसीर।
दुःख–सुख म्हारा में भोगूंगी, जाओ निज घर वीर हो।८९।

हंसी–हंसी ने करे पाप, किम छूटे बिना चुकाया।
आर्त तज अरिहंत–सिद्ध में, शुद्ध–मन ध्यान लगाया हो।९०।

रथ पलटा के गयो सारथी, सती से चला न जावे।
ग्रीष्म तपे, हुए पग छाले, कहो कुण धैर्य बन्धावे हो।९१।

सहस्त्र–किरण भी अस्त हुआ है, तरुतल बैठी आय।
वनचर देखी भय पामतो, जपे परमेष्ठी जाप हो।९२।

दिनकर जब प्रकट हुआ सरे, उठ चली तिणवारी।
कुन्दनपुर आया रस्ता मैं, दुखिया ने सुखकारी हो।९३।

दरवाजे प्रवेश करी ने, नीम तरु तले आई।
बैठ गई उसकी छाया में, जीव रहा घबराई हो।९४।

परोपकारिणी ब्राह्मणी सरे, रहती थी वह पास।
देख सती ने आके पूछे, देकर अति विश्वास हो।९५।

बड़ा घरां की दीखे जाई, सूरत क्यों कुमलाई।
तूं बेटी मैं मात हूं थारी, सुखे रहे अब याँई हो।९६।

सती सुख–दुख की बात सुणी ने, रोई ब्राह्मणी भारी।
बिना समझ की सासू थारी, सुसरा ने धिक्कारी हो।९७।

पकड़ हाथ निज घर के मांई, ले गई उसे उठाई।
आनन्द से भोजन करवाया, सो बिरला जग मांई हो।९८।

आगा–पीछा कुछ नहीं सोचा, कीना काम निकाम।
सुखे–२ यहां रहो रात–दिन, है थारो धन–धाम हो।९९।

धर्म–ध्यान करे नित्य वहां पर, दुःख गया सब दूर।
गर्भ स्थिति पूर्ण होने पर, जन्मा पुत्र सनूर हो।१००।

सवा लक्ष दीनार की सरे, लाल उगले लाल।
सुनी लोग आश्चर्य हुए सरे, ब्राह्मणी हुई खुशाल हो।१०१।

निरख २ ने सूरत लाल की, माता मन हुलसाये।
स्नान करा–भूषण पहनावे, प्रेम धरी रमावे हो।१०२।

सोनी एक वहां रहे पड़ोसी, दंभवती तस नार।
रजनी में आपस में मांई, कीना बुरा विचार हो।१०३।

इस बालक को प्रच्छन उठा, ले चला देशावर मांई।
सवा लक्ष की लाल मिले नित्य, कमी रहेगी नांई हो।१०४।

मारकूट ने निज नारी को, काढ़ी घर के बाहरे।
जाय ब्राह्मणी पास कहे यूं, आई शरण में थारे हो।१०५।

म्हारो पति है खोड़लो सरे, नित्य की देवे मार।
काम करूं घर थारे रहकर, नहीं जाऊं पतिद्वार हो।१०६।

सरल स्वभावी ब्राह्मणी सरे, राखी दया विचारी।
भेद न जाना इसके मन का, है या कपटन नारी हो।१०७।

सोनारण रमावे कुंवर ने, पूर्ण प्रतीत जनावे।
ले लाल और निज खाविंद ने, चुपके परदेश सिधावे हो।१०८।

कई ग्राम उलन्धी आया, चम्पापुर तिणवार।
वीरसेन नृप राज्य करे जहां, प्रेमवती पटनार हो।१०९।

तस कुक्षी से ऊपनी सरे, इन्द्राणी अनुहार।
मदनमंजरी नाम उसी का, रूप कला गुणधार हो।११०।

उसी शहर में रहती गणिका, कामध्वजा है नाम।
कामसेना तस कन्या कुंवारी, जैसे भलके दाम हो।१११।

लिया प्रण उसने मन मांही, जो खेले मुझ लार।
चौथी वक्त में जीते शतरंज, बनुं उसी की नारी हो।११२।

जो नहीं जीते मुझ सेती, तो डालूं कारागार।
जब तक ब्याह हुवे नहीं मेरा, नहीं निकालूं बाहर हो।११३।

सप्तखण्ड आवास उसी में, भूल–भटक कोई आवे।
बिन खेले नहीं जाने देवे, ज्यूं मकड़ी जाल फंसावे हो।११४।

पाल रक्खी बिल्ली एक उसने, उस सिर दीपक मेल।
रैन बीच में कपट–युक्त वह, आप रचावे खेल हो।११५।

खेलत चौथी बाजी में, वैश्या की हार हो जावे।
शीश धुणे मंजारी, गणिका, झट पासा पलटावे हो।११६।

दीपक झाले खावे उसमें, कोई भेद नहीं पावे।
चतुर चित्त को चोर पापिनी, अपनी जीत बतावे हो।११७।

राजा का आदेश उसी को, ऐसी है बलवान।
राजा, राजकुंवर सेठां ने, डाले जेल दरम्यान हो।११८।

अब सोनी भी लाल भेंट कर, ले लीना आदेश।
सप्तखण्ड आवास बनाई, उसमें रहे हमेश हो।११९।

कनक झूल मखमल की गद्दी, अन्दर आप बिछाई।
बीच बिठाई लाल ने सरे, प्रेम से रह्यो झुलाई हो।१२०।

एक २ लाल नित्य ही उगले, बात हुई या जारी।
लगी यात्रा देखन के हित, आवे कई नर–नारी हो।१२१।

अब तामा की सुनो वार्ता, लाल नजर नहीं आया।
सुध–बुध को गई भूल तुरन्त, धरनी पै मुर्छा खाया हो।१२२।

थोड़ी देर में होय सचेतन, ऐसी की किलकारी।
कांप गये हृदय कइयों के, छूंटी आंसू धारी हो।१२३।

हे हत्यारन पापिनी सरे, म्हारो ले गई लाल।
रुदन मचावे ब्रह्माणी सरे, कर गई राण्ड कमाल हो।१२४।

अर्ज करी राजा को तब नृप, ऐसा हुक्म लगावे।
पतो लगावे कोई लाल को, इनाम अति ही पावे हो।१२५।

पता लगा नहीं जब वह माता, जावे ढूंढन काज।
जो पुण्य होसी पादरा सरे, तो सुधरे सब काज हो।१२६।

लीनी लाल साथ में केई, कुछ दी माता तांई।
चार लाल दीजो प्रियतम ने, जो निकले यहां आई हो।१२७।

लियो हुक्म राजा को संग में, परवानो लिखवाई।
जहां मिले तुझ लाल वहां पै, दीजे तूं बतलाई हो।१२८।

ले परवाना चली वहां से, कर मरदाना भेष।
कई ग्राम कई नगर ढूंढती, फिरती देश–विदेश हो।१२६।

पुण्य योग चम्पकपुर आई, पंथी बात सुनाई।
खुश–खबरी में एक लाल दी, प्रसन्न हुई मन मांई हो।१३०।

चम्पकपुर नृप के आगे वो, लाल भेंट कर दीनी।
परवानो रख सामने सरे, सर्व हकीकत वरनी हो।१३१।

लाल म्हेल कुंवर के तांई, फौरन उसे दिलाया।
सोनी और सुनारण तांई, देश बाहर कढ़ाया हो।१३२।

कुंवर जान पुन्यवानं नृप, रानी से सलाह मिलाई।
निज कन्या की तुरत उसी संग, कीनी आप सगाई हो।१३३।

धर्मवती करे धर्म–ध्यान और, रहे आनन्द के मांई।
अब सारथी आय सेठ से, वहां की बात सुनाई हो।१३४।

कालान्तर पियर थकी सरे, आई आप सेठानी।
निज वधू को नहीं देखने सरे, बोलो यूं सेठानी हो।१३५।

कहां गई वह धर्मवती मम, कही सेठ ने सारी।
तड़फ पड़ी भूमि पै सासू, छूटी आँसू धारी हो।१३६।

मैं तो थी जो पियर में सरे, लेता मने पुछाई।
बड़ी भूल हुई भारी मुझ से, नहीं गई चेताई हो।१३७।

विदुषी सिर दोष दिया है, यह अकाज कर डाला।
कौन जनम का बदला लीना, पापी मुनीम हत्यारा हो।१३८।

खबर करो सारथी ले संग, किस वन बीच पठाई।
शोध करी पता नहीं पाया, बैठ रह्या पछताई हो।१३९।

सेठानी मन चिंतवे सरे, पंच परमेष्ठी सार।
इन शरणां के योगसुं सरे, होसी जय जय कार हो।१४०।

अब चम्पक की सूनो वार्ता, हंसा किया निहाल।
मुक्ता का कर दिया ढेर यह, पुण्य–तणां परताप हो।१४१।

वनिक निवाण्ड पुण्य–योग से, करली खूब कमाई।
अब तो देश में चालनो सरे, सब मिल सलाह मिलाई हो।१४२।

ले सामान समुद्र पै आया, भरा जहाज में माल।
कहे चम्पक से करो तैयारी, बीता यहां बहुकाल हो।१४३।

कहे हंस से कुंवर यहाँ से, होगा हमको जाना।
तुझसा सज्जन छूटे दिल में, इसका है पछताना हो।१४४।

हंस कहे उपकारी तूंने, मेरा प्राण बचाया।
मैं उत्रृण नहीं हो सकता हूं, कह कर हंस सिधाया हो।१४५।

उपल जहाज में डाले चम्पक, मुक्ता युक्त के ढेर।
वनिक कहे नहीं कमी देश में, क्यों याने लो लेर हो।१४६।

चम्पक कहे यही धन म्हारे, फेर न किया सवाल।
चला जहाज सर बीच में सरे, होकर सभी खुशाल हो।१४७।

इन्धन बीत गयो तब बनिया, चम्पक से तिणवार।
कहे मोल से उपला दे दो, या दे दो उधार हो।१४८।

नहीं दिया जब उपल कुंवर ने, बहुत करी नरमाई।
जैसा दू–वैसा कर लेना, कागज लिया लिखाई हो।१४६।

माल लेजावा पीछे देसुं, पहला उपल मंगाई।
कौस करो गिनती कर दीना, वाहन किनारे आई हो।१५०।

लेई किराना चले वहां से, आय उज्जैनी शहर।
ठहर गया है बाग में सरे, खबर गांव में फेर हो।१५१।

पिता और भी मिले सेठ आ, चम्पक से हुलसाई।
उपल मंगाय वनिक सब देवे, सो कहे ये वो नांई हो।१५२।

गोबर का लीना सो देवां, थे मोत्यां के नांई।
अति ताण मत करो कुंवरजी, लोग रह्या समझाई हो।१५३।

जल के कुण्डां बीच में सरे, उपल दिया एक डाली।
सब लोगों के सामने सरे, मोती दिया निकाली हो।१५४।

वनिक देख घबरा कुंवर के, पावां लागे आय।
दया करो दो माफी म्हाने, तो इज्जत रह जाय हो।१५५।

धर्म जान दिया छोड़ उन्हें, गुण गाते घरे सिधाया।
प्रशंसा करे लोग कुंवर की, अखूट लक्ष्मी लाया हो।१५६।

कुटिल मुनीम सेठ के तांई, ऐसी आन भिड़ाई।
सीधो माल उठाई लाया, कर किसी संग ठगाई हो।१५७।

ऐसा है कमाउ कुंवरजी, मैं जाऊं इण लारी।
कैसे उपाय करे द्रव्य को, देखु मैं हुशियारी हो।१५८।

कहे कुंवरजी फिर पितासे, मैं जाऊं इण लार।
उपल जमाजो निज घर मांई, मति लगाजो वार हो।१५९।

ढाई लक्ष की हुण्डी लीनीं, दोनों चले तिंवार।
झन्ना–पन्ना का देश में सरे, आये हैं उसवार हो।१६०।

ठहरे बीच सराय के आई, कन्चनपुर के बार।
जौहरी सुत एक हीरालाल से, हो गया मित्राचार हो।१६१।

मंत्री बोले कहो कुंवरजी, यो कुण थारे लार।
यह मुनीम है जुना सज्जन, करे दुकान का कार हो।१६२।

मुनीम इसको मत ना समझो, पक्को शत्रु थांरो।
होशियार रहीजो, मति ठगाजो, यो ही केन हमारो हो।१६३।

उसी शहर का भूपति देवे, भूमि बीघा चार।
जवाहरात निकले सो उसका, ले पच्चीस हजार हो।१६४।

दस बीघा भूमि दिलवाई, कुछ नहीं निकला सार।
ढाई लक्ष पूर्ण हुआ छिन में, मंत्री करे विचार हो।१६५।

मिला नृप से जाय जौहरी, कही हकीकत सारी।
दीनी भूमि नृप फिर भी तो, अब पुन्याई थारी।१६६।

पारस निकला खोदता सरे गयो दरिद्र दूर।
चंपक कुंवर और हीरालाल के, आयो मुख पर नूर हो।१६७।

सौ मन लोह सुवर्ण कियो सरे, पारस गुण प्रधान।
पचास मण कुंवर ने सोना, कर दिया पुण्य दान हो।१६८।

महिमा फैली नगर में सरे, नृप भी आदर दीनो।
पारस रख पेटी के भीतर, पूरो जापतो कीनो हो।१६६।

वैसा ही पाषाण मगाई, दिया मुनीम के तांई।
खूब जतन से रखजो इसको, मंत्री या जितलाइ हो।१७०।

चम्पक यूं कहे मंत्री ने सरे, जावां हम निज देश।
माता–पिता लाल नार को, खबर नहीं लवलेश हो।१७१।

कुछ ·दिन रोके प्रेम धरी ने, करी खूब मनवार।
नृप से छात्र–चंवर दिलकाया, और जापता लार हो।१७२।

कितनी दूर पहुंचावन आया, मित्र–२ के साथ।
कृपा कीजो फेर आवजो, कहे यूं जोड़ी हाथ हो।१७३।

मिली प्रेम से पीछा फिरिया, जौहरी सुत तिणवार।
चम्पक कुंवर की चली सवारी, बाजा के झनकार हो।१७४।

अब मुनीम मन खोटी धारी, करना कुंवर विनाश।
ज्युं–त्युं सेठ ने समझा दूंगा, रहसी पारस पास हो।१७५।

कांदा, कंपी, बिच्छु तीसरो, निज स्वभाव ना मूके।
इसी तरह से दुश्मन चौथा, दांव पड़े नहीं चूके हो।१७६।

रसोईदार ने बस करी सरे, विष–मिश्रित कियो आहार।
पुण्य योग्य से पड़ गई भ्रांति, जीमा नहीं कुंवार हो।१७७।

करी चिकित्सा जानली सरे, मुनीम यही बेईमान।
पीटा खूब पिंजरे डाल्यो, बांधा संकट के तान हो।१७८।

बुरा किया है–बुरा उसी का, भले–भलाई पावे।
जैसा बोया बीज खेत में, वैसा ही फल पावे हो।१७६।

मार्ग बीज बसन्तपुरा आया, अरिमर्दन जहां राज।
चपक कुंवर की असवारी के, सुने जोर के बाज हो।१८०।

सेना अपनी सज्ज करी सरे, दुश्मन आया जान।
भेद लेन के कारण सन्मुख, आयो साख दीवान हो।१८१।

चपक कुंवर से करी बातचीत, जान्यो विक्रम राय।
निज नृप ने लायो सामने, दीना पांव लगाय हो।१८२।

जीवा सेठ सुत हूं मैं राजा, रहूं उज्जैनी मांई।
सत्य पे प्रसन्न हो गया राजा, ले गया आप बधाई हो।१८३।

लौटा दी पीछी फौजां ने, जो पहले संग आई।
छत्र–चवर, गज, निज सेना दे, दीना ठेठ पहुंचाई हो।१८४।

पिता प्रसन्न होके मिल्या सरे, आया फेर दुकान।
लोग प्रशंसा कर रहे सरे, पुत्र बड़ा पुन्यवान हो।१८५।

वृत्तांत सुनाया मुनीम का, जब सेठ क्रोध में छाया।
सजा दिलाऊं इस पापी ने, फिर भी कुंवर बचाया हो।१८६।

कर सम्मान विदा कर सेना, पारस सोना ताय।
करी जापते निज माता के, पांव लगा है आय हो।१८७।

देखी मुखड़ो पुत्र को सरे, मन में हर्ष न मावे।
नाना भांत का भोजन करने, प्रेमधरी जीमावे हो।१८८।

बहू लाल को देखण काजे, इत उत रह निहार।
पूछे कहे हाल माता तब, रोई पल्लो डार हो।१८६।

हा मुनीम हत्यारो पापी, कीनो बड़ो अन्याय।
उठा अपूर्ण जीम कुंवर जब, माता–पिता समझाय हो।१६०।

और परणाऊँ पदमनी सरे, गुण रत्नों की खान।
मन की ताप परिहरो सरे, कुंवर धरे नहीं कान हो।१६१।

लेय सारथी उसी वन आया, देखे निगाह पसार।
हां प्यारी तू कहां गई सरे छुटी, आंसु की धार हो।१६२।

चला अकेला फिरता–फिरता, कुन्दनपुर में आया।
भूखा था सो बैठा जाके, उसी नीम की छाया हो।१६३।

स्वागत कीना ब्राह्मणी सरे, अपनो जान जमाई।
चार लाल दी जो दीनी थी, बीतक बात सुनाई हो।१६४।

इस विधि वो चंपापुर आया, पता लगा तिणवार।
गये शहर में भूल कर्म वश, उस वेश्या के द्वार हो।१६५।

बिना इच्छा से चौपड़ खेली, गया कुंवर जब हार।
हथकड़ी डाल कुंवर को भेजा, कारागार मंझार हो।१६६।

कैदी देख कुंवर के तांई, जान लिया पुण्यवान।
इनके साथ सभी मुक्त होंगे, निश्चय लिया जान हो।१६७।

चम्पक का सब काम करें मिल, रक्खे जूं सरदार।
पर मात–पिता निरधार हुआ है, जब से गया कुंवार हो।१६८।

अन्न जल पूर्ण नहीं ले सरे, सुत–सुत रह्या पुकार।
नींद न आवे रैण में सरे, चिन्ता का नहीं पार हो।१६६।

निशि शहर में विक्रम जावे, प्रजा के हित जान।
रुदन सुनी हवेली भीतर, कर गये वहां निशान।२००।

प्रातःकाल निर्णय करी सरे, कहे माता से खास।
चम्पक लेई उज्जैनी आऊं, रख पूरा विश्वास हो।२०१।

राज्य भोलाई निज मंत्री ने, केवल चाल्यो भूपाल।
साहसिक हो वन उलघी, संग आग्यो बेताल हो।२०२।

घूमत–घूमत आवियो सरे, उसी ब्राह्माणी स्थान।
पता लेई वहां से चले सरे, प्रसन्न हो दिल मांय हो।२०३।

वहां से चम्पकपुर विषे सरे, आया है नरनाथ।
आज्ञा सीर से उसी वेश्या की, कुल जिताई बात हो।२०४।

सप्त खंड आवास चढ़ा तब, दे वेश्या सत्कार।
सुखासन बैठाय के सरे, लाई चौपड़–सार हो।२०५

बिल्ली सिर दीपक धरी वो फिर, खेलन लगी तिवार।
तीन बाजी गयो जीत भूपती, फिर डाले चौथीवार हो।२०६।

चूहा रूप बैताल बना के, बिल्ली सामने आया।
दीपक फैंक गई भक्ष लेने को, पासा नृप उठाया हो।२०७।

निज पासा तहां मेलने सरे, अब दे ओलम्भो राय।
दीपक रख पिलसोद में तूं, पशु काम यह नांय हो।२०८।

चौथी बार लगाई बाजी, हुई भूप की जीत।
ब्याह कियो वेश्या के संग में, गया दुखी दुःख बीत हो।२०९।

सब कैदी को काढ़ कैद से, भेजे निज निज स्थान।
हुई प्रशंसा सारे शहर में, लोग करे गुणगान हो।२१०।

चम्पक कुंवर को स्नान, कराके तन पौशाक सजाई।
ग्राम नृप सुन विक्रम को जब, ले गयो महलां बधाई हो।२११।

जीमन का पांत्या लग्या सरे, तब तहां आयो लाल।
चम्पक कहें देख नृप तांई, या सुत मय महिपाल हो।२१२।

लाल जाय यूं कहे मात से, नृप संग जन एक आयो।
जरा नहीं समझे मूर्ख मम, पुत्र कही बतलायो हो।२१३।

माता कहे मत बोलो लाल यूं, इसमें कोई विचार।
यो उज्जैनी भूपति सरे, है अपना सरदार हो।२१४।

काल पामणा हम घर जीमे, सम्बन्धी से कहलाई।
मंजूरी ले करी रसोई, नाना भांत मिठाई हो।२१५।

जीमन आया भूपति सरे, संग में आप कुंवार।
धर्मवती देखी प्रीतम ने, हुलस्यो हियो अपार हो।२१६।

आनन्द से भोजन करी सरे, लाल नृप पग लागे।
पिता चरण छू ले गयो सरे, निज माता के आगे हो।२१७।

कर जोड़ी पांवा पड़ी सरे, हुवे मनोरथ काज।
धन्य घड़ी भाग्य हमारे, दर्शन दीना आज हो।२१८।

हर्षानन्द वर्ती रह्यो सरे, लोग अचंभा पाया।
विक्रम नृप को रोक भूपने, फौरन ब्याव रचाया हो।२१९।

लाल कुंवर बनड़ो बन आयो, बाजा की झनकार।
विक्रम नृप सा बने बराती, शोभा को नहीं पार हो।२२०।

तोरण काज करी चंवरी है, फेरा फिरे तिंवार।
लाखों को दियो दायजो सरे, गज चाकर तुखार हो।२२१।

ब्याव करीवे निज घर आया, बीन्द–बीन्दनी लार।
उज्जैनी की करी तैयारी, रखे करी मनवार हो।२२२।

मैं पामणा कितना दिन का, राजा करे विचार।
पहुंचावाने आये दूर तक, लारे ले परिवार हो।२२३।

पीछा आजो, रीजो खुशी में, यूं कहीं लौटा नरेश।
चली सवारी आगे को जब, देखत देश विदेश हो।२२४।

कुन्दनपुर आया रस्ता में, मिल ब्राह्मणी तांई।
हृदय लगा बेटी को मां ने, नैनोदक नवराई हो।२२५।

वेष दियो सुता के तांई, हर्षित हो मन मांई।
स्वागत कीना भूपति सरे, गयो आय पहुंचाई हो।२२६।

आये उज्जैनी बाग में सरे, डेरा दिया लगाई।
सेठ–सेठानी आये सामने, खबर भूप की पाई हो।२२७।

हजारों नर–नारी आये, देखन नृप दीदार।
राज्य कर्मचारी करे सेवा, बोले जय–जयकार हो।२२८।

बेटा, बहु, लाल को राजा, दिये सेठ को सौंप।
शाह कहे इस कृत्य से उरण, कैसे होउ भूप हो।२२६।

पर दुख भंजन राजवी सरे, कीनो बड़ो उपकार।
महिमा फैली विश्व में सरे, है कलयुग अवतार हो।२३०।

सेठ–सेठानी के पग छुए, तीनों ही जब आन।
गोद बैठाई खुशी हुआ जूं, निर्धन बने धनवान हो।२३१।

अति ठाठ से चली सवारी, आई मध्य बाजार।
चम्पक को पहुंचाय भूप गयो, निज महलां मंझार हो।२३२।

स्वजन–परजन का कारज सारे, रहे सुखे महाराय।
न्यायवंत भूपाल का सरे, रही प्रजा गुण गाय हो।२३३।

अब चम्पक से मिलवा हेतु, आवे कई साहुकार।
अभयदान का योग सुं सरे, बरते मंगलाचार हो।२३४।

कहे कुंवर यूं माता–पिता से, करो सदा धर्म–ध्यान।
जग का धंधा झूंठा फंदा, है नर्कों की खान हो।२३५।

मान पुत्र की केन पिता, माता करे धर्म कमाई।
संवर धार तार निज आतम, सद्गत दोनों पाई हो।२३६।

चम्पक सेठ श्रावक–व्रत पाले, पक्खी पौषध ठावे।
चतुर्दश विध देवे दान शुद्ध, पापारंभ घटावे हो।२३७।

उज्जैनी के बाग में सरे, उसी समय उस बार।
धर्मघोष आचरज आया, बहु मुनि परिवार हो।२३८।

खबर पाय आये सब जन मिल, वन्दन को उसवार।
धन्य भाग्य धन्य घड़ी पधारे, सतगुरु तारणहार हो।२३९।

चम्पक सेठ ले पत्नि को संग, रथ पर हो असवार।
आय अभिगमन पांच सांचवी, बैठे कर नमस्कार हो।२४०।

अब मुनिवरजी देवे देशना, यो संसार असार।
तन–धन यौवन में मत राचो, बिज्जू को झलकार हो।२४१।

जन्मे सो निश्चय मरे सरे, कौन अमर हो आया।
छत्रपति कई राजा राणा, बादल जूं विरलाया हो।२४२।

जिनसे हंस–हंस बोलते सरे, दिन में सौ–सौ बार।
काल पकड़ ले गया उसी को, भूल गये उनिहार हो।२४३।

आना–जाना लगा साँस का, इसका क्या विश्वास।
एक दिन ऐसा आने वाला, जंगल होगा वास हो।२४४।

भूषण–मणि–मोती को तन से, लेना सभी उतार।
तज मसान में कुटुम्ब फिरेगा, करके तेरी छार हो।२४५।

होसी परभव में सुन प्राणी, केवल धर्म आधार।
ऐसी जान ज्ञान धर हृदय, चेतन चेत इणवार हो।२४६।

चम्पक सुन मुनिवर की वाणी, मन में अति हर्षायो।
हाथ जोड़ विनय कर बोला, भला आप फरमायो हो।२४७।

श्रद्धा प्रतीति रुची जिन वाणी, लेसु संयम भार।
धर्मवती कहे बनूं साध्वी, कंथ तुम्हारे लार हो।२४८।

आय शहर में निज नन्दन को, गृह दीनों सब सौंप।
समझावे मिल सेठ को सरे, साहुकार अरु भुप हो।२४६।

कौन बात की कमी तुम्हारे, सो हमको दर्शावो।
कहे सेठ दूं मेट कर्म फंद, इस कारण यह भाव हो।२५०।

लोम–विलोम कुटुम्बी सारा, विविध भांति समझाया।
नहीं मानी एक बात सेठ तब, बोले पुरजनराया हो।२५१।

धन–२ चम्पक सेठ ने सरे, छोड़ छतो धन–भोग।
शुद्ध भावों से संयम लेवे, है प्रशंसा योग हो।२५२।

लाल कुंवर ने मात–पिता का, महोत्सव कर श्रेकार।
आया मुनिवर सामने कांई, देख रहा नर नार हो।२५३।

ईशाण कोण में जायने सरे, गेंणा वस्त्र उतार।
मूंड बाँधी मुख वस्त्री का, संयम लीनो धार हो।२५४।

धर्मवती भी लीनी दिक्षा, सुव्रता सती के पास।
संयम ले बनी साध्वी सरे, करती ज्ञान अभ्यास।२५५।

चंपक मुनि सत गरु समीपे, हुवे जैनागम जान।
उपकार करी मही बीच में सरे, पहुंचे अमर विमान।२५६।

धर्मवती शुद्ध करनी करके, गई स्वर्ग मंझार।
दोनों सुख वहां भोग वे सरे, आगे मोक्ष तैयार हो।२५७।

ऐसी जान सुनो भव्य जीवा, दीजो अभय दान।
चम्पक सेठ की तरह आपको, मिले सुख प्रधान हो।२५८।

चम्पक सेठ का चरित्र बनाया, लिखित कथा अनुसार।
न्यूनाधिक जो इसमें होवे, लीजो चतुर सुधार हो।२५६।

गणनायक हुक्मीचन्द मुनीश्वर, कीर्ति जग में जारी।
बेले–बेले किया पारना, शूरवीर आचारी हो।२६०।

तस पट्टानपट्टे शोभता, तीजे पद गुणधारी।
मन्नालालजी नाम आपका, शीतल शशी अनुहारी।२६१।

तस आज्ञा पालक गुरुवर्य मम, हीरालाल जी गुण कीना।
हुई महेर माता केशर की, तब गुरु संयम दीना हो।२६२।

साल इक्यासी साल सादड़ी, मारवाड़ के मांई।
चौथमल ने जोड़ ढाल यह, श्रावण मास में गाई हो।२६३।



८. सती कनकसुन्दरी चरित्र

मंगलाचरण

तीर्थंकर जिन सोलहवाँ, चक्री पंचम जान।
मिथ्या तम मेटन प्रभु, जग में प्रगटे भान।।१।।

सर्वार्थ सिद्ध विमान से, "अचला" कूंखे आय।
मृगी मार प्रचण्ड को, दीनी नाथ मिटाय।।२।।

इस कारण प्रभु का दिया, "शान्ति" नाम सुखकार।
विघ्नहरण मंगल करण, सुमरण जस अवधार।।३।।

दानादिक चहुँ धर्म में, शील श्रेष्ठ पहिचान।
तन–मन से पालन किया, उनका करूं बयान।।४।।

तर्ज :- ख्याल की

शील सुरंगी ओढ़ी चूनड़ी, सती कनकसुन्दरी।टेर।

जम्बु द्वीप का भरत क्षेत्र के, दक्षिण का मध्य खण्ड।
नगर "अयोध्या" "अरिमर्दन", राजा रयणकरण्ड।।१।।

"धनदत्त" सेठ बसे उस नगरी, गुण ग्राही दातार।
पतिव्रता सुन्दर सुखमाला, "भद्रा" तस घर नार।।२।।

देव–गुरु–सुधर्म तत्त्व, तीनों की है पहिचान।
दम्पति के सुखमय जीवन में, एक हुई सन्तान।।३।।

"मदन" नाम स्थापित कीना, लाड़ –प्यार के साथ।
गिरि गुफा की लता बढ़े यूं, नन्दन हाथों हाथ।।४।।

अति लाड़ होने के कारण, कुछ नहीं करी पढ़ाई।
बालपन व्यतीत हुआ अब, युवा अवस्था आई।।५।।

वैभव घर में बहुत और फिर, बना जवानी अन्ध।
मात–पिता की कहन न माने, फिर सदा स्वच्छन्द।।६।।

काम विडम्बना बहुत बुरी है जिनवर ने फरमाया।
तन–मन इज्जत इस भव हारे, परभव कष्ट सवाया।।७।।

"कामलता" वेश्या रहती वहाँ, रूप–कला की आब।
उसके कन्या जन्मी जिसका, रखा नाम "गुलाब"।।८।।

यौवन वय में आई बाला, हुई कला में दक्ष।
हाव–भाव करके मोह लेना, ऐसा जिसका लक्ष।।६।।

गवाक्ष बीच बैठी गणिका ने, देखा मदन कुमार।
काम कटाक्ष बाण नयनों का, दिया खेंच के मार।।१०।।

मदन मोहाया उस कन्या के, बंधा प्रेम की पाश।
मात–पिता की परवाह नहीं कुछ, कर दिया वहीं निवास।।११।।

बिन अंकुश के हस्ति–औरत, शिष्य और संतान।
ये चारों निश्चय करते हैं, स्व–पर का नुकसान।।१२।।

निरंकुश बन गया मदन, कर दी मर्यादा भंग।
धन देकर अपयश लेता है, दुर्व्यसनों के संग।।१३।।

"अंग" देश के अन्दर "चम्पा", नगरी है गुलजार।
राज–कार्य करे नीति से, "पृथ्वीसिंह" सरकार।।१४।।

उस नगरी में रहे व्यापारी, श्रावक "जिनदत्त" नाम।
"कनक सेना" उसके घर नारी, लज्जालु गुण–धाम।।१५।।

कंचन वरणी तस कन्या है, "कनकसुन्दरी" एक।
द्रव्य–भाव शिक्षा के संग में, श्रद्धा–शील विवेक।।१६।।

वरयोगी होगई कन्या जब, दम्पति करे विचार।
करी सलाह फिर निज मुनीम को, बुलवाया उस वार।।१७।।

"देश–विदेश में विचरन करके घर–वर श्रेष्ठ निहार।
करो सगाई मम कन्या की, देर न करो लगार"।।१८।।

सेठ साहब की आज्ञा शिर धर, मुनीम मन हर्षाय।
ग्राम–नगर अवलोकत आये, नगर "अयोध्या" मांय।।१९।।

यशो–कीर्ति सुन धनदत्त की, सीधा वहीं पर आया।
देखा वहां जब मदनलाल को, फूला नहीं समाया।।२०।।

बात चलाई सगपण की, कन्या का चित्र बताया।
नारियल–रुपया झेलाकर, मुनीमजी पलटाया।।२१।।

चम्पापुर आकर मालिक को, कहा सारा अहवाल।
लगन निकाल सूचना करदी, दो–घर मंगल–माल।।२२।।

मदनकुमार चित्र लेकर अब, आया गणिका पास।
छवि देख कन्या की, वेश्या मन में रही विमास।।२३।।

विवाह अगर इसका हो जावे, इस बाला के साथ।
तो कुमार मेरे से हरगिज, कभी करे नहीं बात।।२४।।

चित्र देखने का बहाना कर, उसकी निगाह बचाय।
कज्जल बिन्दु चित्र नैत्र, बाँये पर दिया लगाय।।२५।।

चित्र वापस देकर बोली, मुख पर ला मुस्कान।
"पक्के परीक्षक तुम जैसे कहीं, मिले भाग्य परमाण।।२६।।

धन्य ! विवाह करने जाते हो, काणी कन्या संग"।
सुना वचन वेश्या का ऐसा, मदन हो गया दंग।।२७।।

गणिका के घर से कुमार, उठ आया निज आवास।
मात-पिता के सन्मुख आके, की ऐसी अरदास।।२८।।

"लिया बखेड़ा मोल आपने, करके यह सगाई।
मुझे ब्याह करना नहीं उससे, दीनी साफ सुनाई।।२६।।

"कहो बेटा ! क्या बात हुई अब, कैसे पलटा जाय ?
जिस किसने बहकाया तुझको; तू भी रहा बहकाय।।३०।।

पाँव लगादे बहु को लाकर, जो तू मम संतान"।
ज्यों-त्यों उसे मना कर लाये, संबंध सजा कर जान।।३१।।

वेश्या के वश बना हुआ नेह, निज नारी से तोड़।
सूरत भी नहीं देखे उसकी, रहे सदा मुख मोड़।।३२।।

कनकसुन्दरी सोच रही है, पड़ा कौन सा पेच।
प्राणनाथ शुरू से क्यों ? रहे मेरे से मन खेंच।।३३।।

राग-रंग और खान-पान फिर, स्नानादि सिणगार।
सभी अलूणा जगत् बीच में, बिना प्रेम भरतार।।३४।।

इसमें नहीं है दोष किसी का, निज कर्मों की बाँक।
धर्म ध्यान से सुखी बनेंगे, जिन वचनों की साख।।३५।।

होनहार होकर के रहती, ऋतु बसंत की आई।
त्यौहार तीज का छैल-छबीला, मानव के मन भाई।।३६।।

भूप हुकम से अनुचरों ने, पुर बाहिर का स्थान।
कूड़ा–कर्कट काढ़ छाँट जल, स्वच्छ किया मैदान।।३७।।

अलग–अलग फिर हक रक्खा है, नर–नारियों के काज।
व्यवस्था हित दासी दास फिर, नियुक्त किये महाराज।।३८।।

शस्त्रों से सज्जित सुभटों का, पहरा दिया लगाय।
नारी वृन्द केन्द्र क्रीड़ांगण, नर नहीं जाने पाय।।३६।।

महोत्सव में सजधज के पहुंचे, नगरी के नर–नार।
कहे पड़ोसिन कनकसती से, "हो जाओ तैयार"।।४०।।

"प्राणेश्वर के प्रेम बिना सब; सूना है त्यौहार"।
पहन ओढ़कर हो गई संग, जब बहुत करी मनुहार।।४१।।

सखियों के संग रही खेलती; करती रही नृत्य गान।
पड़ा कान का भूषण कहाँ–कब, रहा न उसका ध्यान।।४२।।

कर्णफूल का पता पड़ा है, घर आने पश्चात्।
सासु–सुसरा जानेगें तो; सुनना पड़सी डाँट।।४३।।

गुप–चुप सर्व उतार आभूषण, पेटी में धर दीना।
कर्णफूल खोने का इसने, जिकर जरा नहीं कीना।।४४।।

क्रीड़ा स्थल वह कर्णफूल, दासी के नजरे आया।
यह न पचेगा इस कारण, राजा को जाय बताया।।४५।।

पूछे भूप किसका आभूषण, सो कहे मालूम नाय।
तलाश कराई पता न पाया, दूती को बुलवाय।।४६।।

गुपचुप खोज करी कई भाँति, रंच पता नहीं पाया।
ऐसे करते वर्ष बाद त्यौहार, तीज का आया।।४७।।

कनक सुन्दरी के घर दूती, पहुँच गई अकस्मात्।
"चलो तीज त्यौहार मनाने; करी स्वाभाविक बात"।।४८।।

राय अन्तेपुर श्रेष्ठ कुलों की, ललनाऐं आयेंगी।
होगा मन बहलाव; और सखियाँ हर्षायेंगी।।४६।।

"इस महोत्सव के अंदर मेरा; बहिन न आना होय।
पहिले भी तो कर्णफूल एक, वहाँ दिया था खोय"।।५०।।

दूती मन आनन्द मनाती, गई भूप के पास।
सर्व हकीकत सुन कर उससे, नृप डाला निःसास।।५१।।

मन धारा सारा हो आए, जो वह यहाँ आ जाय।
कर विचार यूं कहा दूती से, " ला तू उसे बुलाय"।।५२।।

दूती जाय कहा ललना से, "मत ना बनो निराश"।
कर्णाभूषण रखा हुआ है, सुरक्षित नृप पास।।५३।।

दूजा कर्णफूल लेकर के, आओ मेरे साथ।
"कर कोशीश दिला दूं तुझको", सुन बोली वह बात।।५४।।

"प्रगट पने जाऊं नहीं हरगिज, जो नृप मुझे बुलायें।
तो महल से इस मकान तक, सुरंग एक बनवायें"।।५५।।

सुन प्रसन्न हो गया भूपति, कारीगर बुलवाया।
सुरंग बनाते लगे मास छः, फिर उसको कहलाया।।५६।।

सुसज्जित होकर भूपति अब; निशा बीच राह जोवे।
कनकसुन्दरी कब आवे कब, इच्छा पूरण होवे।।५७।।

वस्त्र अनुपम तन पर सजकर, गुप्त मार्ग से आई।
थाल भरा मुक्ता अणविंधा, अपने संग में लाई।।५८।।

अद्‌भुत रूप छटा अवलोकी, भूला भूप विवेक।
"समय मिला मुश्किल से कैसा, लिखा विधाता लेख"।।५६।।

मम इच्छा को पूरण करके, कर्ण फूल ले जाय।
सती विचारे काम अन्ध ये, यूं समझेगा नाय।।६०।।

मंद–मंद मुस्काकर बोली, अर्ज ध्यान में लाओ।
इन मुक्ता की माला करके, निज कर से पहिनाओ।।६१।।

माला करने बैठा राजन्, चढ़ा नशे का जोश।
शय्या बीच पड़ा आखिर वह, होकर के बेहोश।।६२।।

कर्णाभूषण ले सब मोती, आई निज आवास।
तुरंत गुफा का करवाया है, उसने बन्द निकास।।६३।।

रात गई नृप हुआ सचेतन, देख रहा चहुँ ओर।
मायाविनी माया बतलाकर, भाग गई चित चोर।।६४।।

बैठ सभा में अनुचर भेजा, धनदत्त को बुलवाया।
हर्ष हीये धर राज सभा में, सेठ साहब चल आया।।६५।।

"सेठ ! मेरे प्रश्नों का उत्तर, देना सोच–विचार।
सात दिनों में दिया न उत्तर, लूंगा वस्तु सार"।।६६।।

अवधि लेकर घर आया पर, चित नहीं लागे रंच।
परिवार पूछे बतलाया, भूपति का परपंच।।६७।।

"जाय बताओ धराधीश को, जो पूछेंगे आप।
पुत्र वधू मम कनकसुन्दरी, देगी उत्तर साफ"।।६८।।

वचन सेठ का सुनकर राजा, खुशी हुआ मन मांय।
आदर सहित बुलाई उसको, सन्मुख उभी आय।।६६।।

"दाड़म पाकी दाखें पाकी, मन माने जब खाई।
इसका उत्तर क्या है असली, मुझको दे समझाई"।।७०।।

"छः महिने में सुरंग बनाई, माँडया दादर–मोर।
हार पिरोते निन्द्रा आई, थें कब चाखी चोर।।७१।।

यह पाठ बताया स्वामिन् ! उत्तर इसका खास।
आप कहो तो राज सभा में, चौड़े करूं प्रकाश।।७२।।

सती मुख सुनकर हो गया लज्जित, बोला भूप विचार।
उत्तम शिक्षा देय अधमको, बहुत किया उपकार।।७३।।

बहिन धर्म की उसे बना घर, आदर से पहुँचाई।
सासु–सुसरे हर्षित हो गये, बोले स्नेह दिखाई।।७४।।

"महिपति को समझाया किन्तु, प्राणेश्वर वश नाई।
वहाँ बताई कला यहाँ पर, कहाँ गई चतुराई"।।७५।।

"आज्ञा होवे अगर आपकी, तो मैं करूं उपाय"।
अनुमति पाकर कनकसुन्दरी, आई पीहर मांय।।७६।।

मात–पिता के आगे सारी, घटना कह बतलाई।
नयन नीर से मात–पिता ने, पुत्री को नवराई।।७७।।

"प्रेम मिले सत्कार मिलेगा; और फलेगी आशा।
श्रेष्ठ देख घर–वर परणाई, आशा हुई निराशा।।७८।।

कार्य कोई हो मेरे लायक, बिन संकोच बताय।
"द्रव्य मिले जो मुझे पति को, लाऊं मारग मांय।।७९।।

"जितना चाहे उतना ले–ले, किसने करी मनाई।
बुद्धि बल से काम करे अब, कैसे कर चतुराई"।।८०।।

]

राजकुमार बन आई अयोध्या, मिली भूप से जाय।
"कंचनपुर से आया घूमने", दीना यूं बतलाय।।८१।।

"महल बनाने की इच्छा यहाँ, जो आज्ञा फरमाये"।
'बहुत खुशी जहां जंचे, वहीं इच्छानुसार बनायें"।।८२।।

बहुत विशाल मकान बनाया; हिस्से कीने चार।
एक–एक रंग के साधन से, भर दीना भण्डार।।८३।।

मोती महल में सभी श्वेत है, लाल महल में लाल।
कनक महल में पीली वस्तु, पन्ना में हरियाल।।८४।।

रिक्त स्थान में वृक्ष लगाये, नानाविध फलदार।
प्रीत बढ़ाई मदनलाल से; इतने समय मुझार।।८५।।

कनकसेन चाभी महलों की, रक्खी इनके पास।
कर मुजरा ले सीख भूप से, आया निज आवास।।८६।।

अब आई सती कनक सासरे, एक दिन अवसर पाय।
कहे सासु से लालादेवी, आयेगी निशि मांय।।८७।।

इच्छा हो रही देखूं उसको, दीनी अनुमति सास।
मदन विचारे इस काणी ने, किम पाया आभास।।८८।।

मदन मात से लेकर चाभी, लाल महल में आया।
द्वार खोलते ही लालादेवी के, दर्शन पाया।।८९।।

बैठ हिंडोले झूल रही है; ले सारंगी हाथ।
स्वर ताल युत राग–रागनी, गाय रही कई भाँत।।९०।।

दिव्य रूप अवलोकन कर रहा, अनिमेष मदनेश।
शनैः शनैः नजदीक गया, देवी नहीं देखे लेश।।९१।।

अमरी सम तुझ रूप मनोहर; जनमन मोहन गारी।
लाल महल में उषाकाल सी, तूने लालीमा डारी।।९२।।

मकरंदों का प्रेमी मधुकर, शीघ्र पुष्प पे आये।
अधर बैठ कर रस आस्वादन, प्रेम मगन हो जाये।।९३।।

त्यूं तुझ रूप दिव्य; प्रिय गायन, पर मम मन ललचाया।
बोलो ! मुख से मत तरसाओ, सेवक सन्मुख आया।।९४।।

कौन ग्राम की रहने वाली, मात–पिता है कौन ?
लाल महल में कैसे आई, अब क्यों हो गई मौन।।९५।।

बोल–बोल ! पट खोल हृदय का, मुझ से मत सकुचाये।
गुप्त भेद के कहे बिना कहो, कैसे जाना जाये।।९६।।

समय देखकर देवी बोली:"भो ! प्रियवर सुखमाल।
बैताड गिरी से सैर करन को, निकली संध्याकाल।।९७।।

खेचर 'सुमतिचन्द्र' तात है, 'भाग्यवती' मुझ मात।
दिल मेरा है इसी महल में, बिलकुल सच्ची बात।।९८।।

मदन–मृग मन बिंध लिया है, इसमें संशय नाय।
सूरत देख सुहानी तेरी, मुझ मन रहा लुभाय।।९९।।

ममता मय वाणी देवी की, सुन कुमार हरषाय।
सुख विलसो मेरे संग जोड़ी, मिली पुण्य से आय।।१००।।

सही आपका कहना पहिले, भोजन दो मंगवाय।
क्षुधा वेदनी सता रही है, बोला भी नहीं जाय।।१०१।।

कर लूंगा मंजूर सभी मैं, जो कुछ भी फरमाना।
लाऊं भोजन अभी यहीं, तुम चली कहीं मत जाना।।१०२।।

मदन गया है इधर उधर, वह देवी अन्तर्धान।
लेकर आया भोजन देखा, मिला न कहीं निशान।।१०३।।

विलख वदन होकर उस स्थाने, चिंते मदनकुमार।'
छलनी छलकर मेरे साथ में, गई छोड़ मंझधार'।।१०४।।

द्वार बन्द महल का करके, आया गणिका गेह।
मुख देखा पूछा–"कारण क्या, फीका क्यों है नेह"।।१०५।।

"लाल महल में देवी लाला का मैं दर्शन पाया।
तन सावन बिजली सा सुन्दर, विधाता रूप रचाया"।।१०६।।

इस प्रकार सब बात बताई, वैश्या करे विचार।
"देखी प्रीत तुम्हारी" कहकर दीनी थप्पड़ मार।।१०७।।

"कभी न आना अब मेरे घर", दीना फिर ललकार।
विषयांध वैश्यागामी का, निकलेगा यही सार।।१०८।।

तिरस्कार से त्रासित बनकर, घर आया चुप चाप।
अर्द्धांगिन ने सोचा करना, रास्ता बिल्कुल साफ।।१०९।।

एक दिन बहु ने सासु से, फिर एक बात बताई।
"कंचन देवी के आने की, आज सूचना पाई"।।११०।।

सुना मदन ने निश्चय कीना, जाना आज जरूर।
नियत समय पर पहुँच गया वहाँ, ले भोजन भरपूर।।१११।।

कनक महल के द्वार खोलते, ही देवी दिखलाई।
'इससे प्रीत जुड़े तो समझूं, सफल जिन्दगी पाई'।।११२।।

मदन आय कन्या के पास, वही वात दौहराई।
तब कुंवरी कहे "पहिले भोजन, देओ मुझे जिमाई"।।११३।।

साथ बैठ भोजन कर बोली, "लगी जोर से प्यास।
शीतल जल ला मुझे पिलाओ, जल्दी करो तलास"।।११४।।

इस विधि निज स्वामी को छलके, आई अपने द्वार।
लाया नीर मिली नहीं देवी; करने लगा विचार।।११५।।

दिल बहलाने वेश्या के घर गया, न पाया चैन।
सती समय लख बोली एक दिन, सासुजी से बैन।।११६।।

"पन्ना देवी का पधारना, होगा संध्या आज।
इस कारण से जल्दी करलो, घर का सारा काज"।।११७।।

मदन तैयारी करे सती तन लीले, वस्तर धार।
प्रियतम पहिले पहुँची वहाँ पर, सज सारे सिणगार।।११८।।

गायन मधुर गा रही पहुँचा, मदन लेय कुछ भेंट।
पूछताछ कर कीना दोनों, भोजन संग में बैठ।।११९।।

देवी बोली "इस भोजन में, अवश्य कमी कोई खास।
ऐसा कहकर दिया वमन, खो बैठी होश–हवास।।१२०।।

वैद्य बुलाने गया मदन तब, सती संभल घर आई।
शीघ्र दवा ले पहुँचा पीछा; नारी नहीं दिखाई।।१२१।।

वहाँ से निकल गया गणिका घर; वेश्या दी फटकार।
कामातुर को हित–अहित का, जरा न रहे विचार।।१२२।।

सती ने देखा निज स्वामी के, व्यवहारों में फेर।
इनको सन्मा राग लाने में, अब न लगेगी देर।।१२३।।

कीनी अर्जी सासुजी से, मुक्ता महल मुझार।
मुक्ता देवी आज शाम को, आवे सज सिणगार।।१२४।।

आप पधारें तो अति उत्तम, आज्ञा मुझे दिलाओ।
मेरी कहा मनाई जाओ, अपना जी बहलाओ।।१२५।।

अशनादिक ले साथ मदनजी, पहुँच गये तत्काल।
द्वार खोलते सन्मुख देवी, को लख हुआ निहाल।।१२६।।

वीणा मधुर बजाती गा रही, सर्व मिला स्वर–ताल।
श्रेष्ठी सुत ने पूछ लिया है, पहिले सम सब हाल।।१२७।।

पूर्ण प्रेम से कही सती ने, सारी कल्पित बात।
करके भोजन बाग बगीचे में, घूम रहे दोई साथ।।१२८।।

तोड़ तरु से फल चाकू ले; छिलके रही उतार।
निज अंगुली का काट जरासी, कीना हाहाकार।।१२९।।

नया वस्त्र निज फाड़ मदन, पट्टी बाँधी तत्काल।
फेर गया औषध लेने नहीं; समझा उसी की चाल।।१३०।।

दवा लेय लौटा किन्तु वहाँ, नार नजर नहीं आई।
रात्री में सोया पर दिल में, ललना वही समाई।।१३१।।

डाल–डाल निःसात सती, ठसका करती एक ओर।
मदन कहे चुप पड़ी रहे क्यों; भला मचा रही शोर।।१३२।।

विरह सताता एक तरफ तो, मुक्ता का मुझ आज।
वह छलना छल गई इधर तू भी, नहीं आ रही बाज।।१३३।।

मैं ही मुक्ता, पन्ना, लालाँ, कंचन चारों नार।
अंगुली के पट्टी तुमने ही, बाँधी बाग मुझार।।१३४।।

सत्य हकीकत सुनो प्राणधन ! गणिका कर चतुराई।
यौवन–तन–धन लूटन कारण, उलटी बात जंचाई।।१३५।।

स्वामी ! आपका संशय हरने; इतने किये उपाय।
सारी घटना सुनी पत्नी से, रोम–रोम हरषाय।।१३६।।

"सुन प्यारी ! मैं समझ गया हूं, गणिका दुःख की खान।
सिद्ध साख से जावजीव तक, वैश्या का पच्छक्खान।।१३७।।

सती ! धन्य है पतित पति को, सन्मारग दिखलाया।
श्रीजिन भाषित दया–धर्म; नव तत्वों को समझाया।।१३८।।

सुख पूर्वक रहते थे एक दिन, "धर्मघोष मुनि" आया।
कर–कर दर्शन नर–नारी कई, माने भाग्य सवाया।।१३९।।

पति–पत्नि भी बहुत प्रेम से, दर्शन कर हरषाया।
संयम ले जप–तप करणी कर, अजर अमर पद पाया।।१४०।।

सुगुरु मुनिवर "खूबचन्दजी" धैर्यवान उपकारी।
" केशरीमलजी मुनि" प्रभाविक, गुरु भ्राता गुणधारी।।१४१।।

संवत् उन्नीससो साल निव्यासी, उदयपुर चौमास।
त्रय ठाणे से रहे वहाँ पर, पाया लील–विलास।।१४२।।

ग्यारस भाद्रव शुक्ला की, वार भला शनिवार।
लिखा मुनि "हजारीमल" ने, शील धर्म अधिकार।।१४३।।

ॐ शाँति ! ॐ शाँति !! ॐ शाँति !!!



६.पद्मसेन चरित्र

दोहा

'विमल' विमल बुद्धिकरण, त्रयदशवें जिनराय।
'कीर्ति भानु' नृपति पिता, 'श्यामारानी' मांय।।१।।

कर्म अरिदल हरण हित त्यागन कर संसार।
तपकर केवल–ले लिया–शिवपद सुख भंडार।।२।।

ऐसे प्रभु को नित नमुं, सश्रद्धा त्रिकाल।
सुख संपत्ति साता मिले, होवे मंगल माल।।३।।

पुण्य प्रबल होवे उसे, मिले श्रेष्ठ सुख साज।
उस पर यह रचना रचूं, सुनना सकल समाज।।४।।

(तर्ज ख्याल की)

पूरण होती है इच्छा पुण्य से, श्री पद्मसेन की।टेर।

समृद्ध कलिंग देश के अन्दर; 'कंचनपुर' गुलजार।
महिपती 'पृथ्वीसिंह' करे जहाँ, सुखद् राज्य संचार।।१।।

कनकवती; धनवती तीसरी; रूपवती लासानी।
चौथी पद्मावती चार ये है, राजा के रानी।।२।।

कर अपमानित 'पद्मा' को नृप, रख छोड़ी एकान्त।
निज कर्मों के ही कारण यह, समझ रहे नित शांत।।३।।

इन चारों के हुवे चार सुत, कहूँ सभी के नाम।
कनकसेन, धनकुंवर तीसरा, रूपसेन अभिराम।।४।।

पद्मावती का प्यारा अंगज, पद्मसेन महाभाग।
लेकिन नहीं पिता का उस पर, थोड़ा भी अनुराग।।५।।

विचरत धर्मघोष मुनि आये, गये वन्दन नर नार।
पद्मावती रानी भी पहुँची, ले निज सुत को लार।।६।।

सुना ज्ञान फिर त्याग नियम ले, गई जनता स्व स्थान।
पद्मसेन की तरफ लक्ष कर, बोले गुरु गुणवान।।७।।

कभी सिखावे कोई विद्या, विद्याधर खुश होय।
उसे सीख लेना अवश्य मत, देना अवसर खोय।।८।।

करना सदा पिता–माता को, प्रातः ऊठ प्रणाम।
गुरु शिक्षा धारण कर आये, सुत–जननी स्व–धाम।।९।।

एक समय रजनी में सोया, शयन भवन में भूप।
स्वप्ना देखा अर्ध नींद में; जिसका सुनो स्वरूप।।१०।।

देखा अद्भुत पादप जिसके है, तांबे का मूल।
रजत डाल पत्ते सोने के, मुक्ता के फल–फूल।।११।।

बंधा हुआ हिंगराज एक है, उसी वृक्ष की डाल।
जिस पर बैठी चार युवतिऐं, रूपवान सुखमाल।।१२।।

सुसज्जित वस्त्रा भूषण से, पंखे चारों हाथ।
कर रही पवन गारही गायन, चारों सखियें साथ।।१३।।

जो देखा था स्वप्न भूप ने, सभा बीच बतलाया।
प्रत्यक्ष इसे दिखादे उसको, दूं इनाम मनचाया।।१४।।

करने हित प्रणाम पिता को, आये चारों लाल।
चिंता का कारण पूछा तब, सभी सुनाया हाल।।१५।।

सुन स्वप्ने की बात पिता से, बोले तीनों पूत।
आज्ञा दीजे सफल करेंगे, कर कोई करतूत।।१६।।

पूज्य पिता से पद्मसेन की, हाथ जोड़ अरदास।
जो अनुमति दें आप मुझे, हो–आपकी आश।।१७।।

नरनायक ने सुनी बात पर, दिया न किंचित ध्यान।
देना था सन्मान मगर; कीना उसका अपमान।।१८।।

करके सलाह सचिव से लेकर–जननी की आशीश।
शुभ मोहरत में गमन किया है, कर सुमिरण जगदीश।।१९।।

अश्वारुढ़ हो द्रव्य साथ ले, तीनों राजकुमार।
चले स्वप्न साकार करने को, ले मन उमंग अपार।।२०।।

मिला मार्ग में पद्मसेन, तब पूछे तीनों भ्रात।
'कहां जा रहे हो बंधु !' तब सब कह दी बात।।२१।।

तीनों के मन मैल भराया; सलाह करी चुपचाप।
शामिल आज रात रहे चारों, सुखकर हुआ मिलाप।।२२।।

पद्मसेन है सरल न समझा, उनके मन का भाव।
संध्या किया चारों ने, वन के बीच पड़ाव।।२३।।

शयन किया चारों ने किन्तु, पापी के मन पाप।
पद्मसेन को नीन्द आ गई करते प्रेमालाप।।२४।।

गये छोड़ सोया तज तीनों ले, घोड़ा धन माल।
उसे खबर तो तभी हुई, जब प्रगटा प्रातःकाल।।२५।।

दुर्जन तजे नहीं दुर्जनता; निज स्वभाव के काज।
लेकिन पुण्याई रखती है, पुण्यवान की लाज।।२६।।

द्रव्य अश्व ले गये कपट कर, भ्राता मेरे संग।
चिंता त्याग चला पश्चिम में, ले उत्साह उमंग।।२७।।

अटवी बीच बावड़ी देखी, लिया वहां विश्राम।
दिया दिखाई कुछ दूरी पर, महल एक अभिराम।।२८।।

आगे बढ़ते ही अटवी में, मिले उसे मुनिराज।
सविधि नमस्कार कर बोला, तारण तिरण जहाज।।२६।।

इधर आप किम् आये भगवन्, कहे मुनि भूला पंथ।
तू कैसे आया है पूछा, पद्मसेन से संत।।३०।।

नरभक्षक जीवों का है, इस झाड़ी बीच निवास।
करे न कोई भूल–चूक नर, आने का प्रयास।।३१।।

कृपा आपकी बनी रहे तो सुधरेगा सब काम।
"ॐ उसभ" यह जाप जपे से, पावेगा आराम।।३२।।

श्रद्धा से स्वीकार किया है, फेर नमाया शीश।
आगे गमन किया निर्भय हो, ले गुरु की आशीश।।३३।।

पहुँच गया है पद्मसेन वहां, विस्मित हुआ निहार।
तांबे से निर्मित है सारा, जिसमें कला अपार।।३४।।

कोट बना चौफेर उसी के, ताँबे का मजबूत।
अवलोकत अंदर पहुँचा है, पृथ्वी नृप का पूत।।३५।।

गया सातवें मंजिल पर फिर, देखा दृष्टि पसार।
एक मनोहर युवति बैठी, जिसका दिव्य दीदार।।३६।।

न कोई बस्ती आसपास में, यह जंगल भयकार।
किसने महल बनाया यहाँ पर, अति ऊंचा विस्तार।।३७।।

रंभा जैसी नवयुवति का, कैसे यहां निवास।
स्वयं अकेली भव्य महल में, कोय न इसके पास।।३८।।

निकट गया कन्या के मन का, संशय मेटन काज।
प्रश्न करुं उत्तर पाने हित, मत होना नाराज।।३६।।

एकाकी रहने का कारण, कहो बताओ नाम।
सभी बनी वस्तु ताँबे की पास न कोई ग्राम।।४०।।

कुंवरी कहे आप अपना, पहिले कहिए वृत्तान्त।
कहाँ से आना हुआ नाम क्या, जन्म कौन से प्रांत।।४१।।

कैसे यहां अकेले आये, नहीं कोई क्यों साथ।
पद्मसेन कहे कन्या से, सुनो सुनाऊं बात।।४२।।

कलिंग देश कंचनपुर सुंदर, पृथ्वीसिंह राजान्।
जिनका सुत मैं पद्मसेन हूँ, मां पद्मावती महान।।४३।।

है तांबे का स्कंध वृक्ष का, शाख रजत पहिचान।
कनकमयी है पत्र मनोहर, मणिमुक्ता फलमान।।४४।।

उसी तरु डाली पर झूला, बैठी कन्या चार।
झूल रही गायन करती, पंखे से करे बयार।।४५।।

देखा ऐसा स्वप्न भूप ने; रजनी तीजे याम।
जैसा देखा सुबह सभा में; वर्णन किया तमाम।।४६।।

वीर यहाँ है कोई ऐसा, करे स्वप्न साकार।
उसे मिलेगी मान प्रतिष्ठा, ऊपर से उपहार।।४७।।

सफल मनोरथ पूज्य पिता का, करने का प्रण ठाया।
सहन कष्ट कई करता–करता आज यहां पर आया।।४८।।

मानो मेरी बात कहे कन्या, मैं कहूँ उपाय।
शादी आप करें मेरे से, तो इच्छा फल जाय।।४६।।

तांबावती नाम मेरा मैं वणिक वंश की जाई।
विद्याबल से ताँबे की दूं, वस्तु सभी बनाई।।५०।।

जब ये काम कराना चाहो, करना दंड प्रहार।
यह संकेत आपके मेरे, मध्य रहे हर बार।।५१।।

मान्य किया है उस कन्या; पद्मसेन प्रस्ताव।
दोनों हुवे प्रसन्न परस्पर, सुंदर बना बनाव।।५२।।

काम करे सब ही चांदी का, ऐसी नारी खास।
कहीं ध्यान में हो बतलाओ, जाऊं उसके पास।।५३।।

यहां से निकट दिशा पश्चिम में; रजतमयी महलात।
सखी रहती रूपवती वहाँ, एक दक्ष अभिजात।।५४।।

पद्मसेन सुन विदा हुआ है, लेकर उससे सीख।
उस अटवी में उसी ओर, चल दिया होय निर्भीक।।५५।।

चित्त प्रसन्न हुआ कुमार का; रजत महल अवलोक।
देखत पहुँच सप्तम मंजिल, द्वार चौबारा चौक।।५६।।

सुखासन पर बैठी रमणी, मानों शशि समान।
बोला नाम कहो क्या बाला, बोली मिष्ठ जबान।।५७।।

आगत महानुभाव आने का, कारण दो बतलाय।
तब तो पद्मसेन ने सारा, स्वप्न दिया दरसाय।।५८।।

यही प्रतिज्ञा मेरी पहिले, मुझे करो स्वीकार।
उसके बाद बताऊंगी मैं, बातें सविस्तार।।५६।।

पूर्ण करुंगा मैं प्रण तेरा, रख पूरा विश्वास।
अब मैं कहूँ परिचय अपना, की युवति अरदास।।६०।।

कहते रुपवती मुझ को मैं, पुरोहित की संतान।
विद्याबल से किया सभी यह, चाँदी का निर्माण।।६१।।

इच्छित रजतमयी रचने की है, शक्ति भरपूर।
अब तो प्रियतम आप, प्रिया मैं हुई, करी मंजूर।।६२।।

सुख से रहे वहां पर दोनों, बहुत परस्पर हेत।
रजत काम करने का कीना, दंड मार संकेत।।६३।।

प्यारी तुम्हें पता हो तो बतलाओ, उसका धाम।
जो कर सकती हो तेरे सम, सब सोने का काम।।६४।।

नाथ ! पधारो दक्षिण में, मही अति दूर नजदीक।
महल नजर आयेगा आगे, सुवर्ण का रमणीक।।६५।।

कनकावती सहेली मेरी, अद्भुत रूप रसाल।
पद्मसेन प्रयाण किया है, सुन प्यारी मुख हाल।।६६।।

सीधा उसी महल में पहुँचा, जिसमें मंजिल सात।
प्रतिज्ञा पूरण करने की, कही कडकावती बात।।६७।।

सचिव सुता मैं जानु विद्या, कंचन का निर्माण।
करूं आपकी इच्छा जैसे, दंडा मार निशान।।६८।।

पद्मसेन खुश होकर बोला, वाक्य तेरा स्वीकार।
इच्छित काम करे कोई ऐसी, है मुक्तावली वार।।६६।।

तब ललना कर जोड़ वीनवे, सुनिए प्राणाधार।
पूर्व दिशा में आप पधारो, सफल करो अवतार।।७०।।

निर्धारित पथ गमन किया है, सत्वर राजकुमार।
मुक्ता महल मनोहर देखा, विस्मित हुआ अपार।।७१।।

शीघ्र सातवें मंजिल पहुंचा, बैठी कन्या एक।
मणिमुक्ता के भूषण तन पर–धारण किये अनेक।।७२।।

परी उतर का आई मानों, स्वयं स्वर्ग से चाल।
करे मनन है अजब विश्व में, कर्मों की टकसाल।।७३।।

हे सुनयना ! कौन पिता मां, कौन नगर बीच वास।
इस अटवी के मध्य महल में, क्यों कर लिया निवास।।७४।।

मुक्तावली मधुर वचनों से, बोली बन गंभीर।
पहिले अपना हाल कहो, हे कटिधारक शमशीर।।७५।।

देश कलिंग कंचनपुर मांही, पृथ्वीसिंह नरेश।
तस सुत पद्मसेन मैं आया, लेकर बात विशेष।।७६।।

बोली बाला राजकुंवर से, सुनना होकर शाँत।
मेरी क्या घटना चारों की कह दूं आद्योपान्त।।७७।।

सिद्धपुर पाटण शिरोमणि, अरिमर्दन नृपाल।
पूरण ज्ञाता न्याय नीति का, रय्यत का रखवाल।।७८।।

सुसज्जित हो एक दिवस मैं, राजसभा में आई।
पूज्य पिता ने सादर मुझको; अपने पास बिठाई।।७९।।

निमित्त ज्ञान का ज्ञाता इतने, सभी बीच में आया।
कर सम्मान योग्यासन पर, महिपती उन्हें बिठाया।।८०।।

इस कन्या का बने कौन वर, कहिए पंडित राज।
अनुभव द्वार देख मनन कर, कहे सुनो सिरताज।।८१।।

वैश्य सचिव और पुरोहित पुत्री, चौथी राजदुलारी।
इन चारों का बने एक वर, श्रेष्ठ पुरुष बलकारी।।८२।।

पिता स्वप्न को सफल बनाने, आवे एक युवान।
कैसा स्वप्न उसे आयेगा; उसका किया बखान।।८३।।

सुना हाल पंडित के मुख से, हमने किया विचार।
सिद्ध कर विद्या काम सुधारे, ले उसका आधार।।८४।।

अटवी में यह महल बनाये, विद्या बल से चार।
देख रही हम राह आपको, प्रतिपल नयन पसार।।८५।।

मन में हमने जो प्रण ठाया, पूर्ण हुआ है आज।
मिले दर्श शुभ आज आपका, सफल हुआ सब काज।।८६।।

काम हमारे से लेना हो, करना दंड प्रहार।
आप हमारे बीच समस्या गुप्त रहे सरकार।।८७।।

चारों ही कन्याएं मिल ले पद्मसेन को संग।
आई हैं अपनी नगरी में, दिल में धरी उमंग।।८८।।

अपने अपने मात–पिता को, सारी बात बताई।
श्रेष्ठ समय में राजकुंवर संग, चारों को परणाई।।८६।।

सुख पूर्वक प्रमदा संग, रहता राजकुंवर ससुराल।
स्वकृत शुभ कर्मोंदय से, ही फली मनोरथ माल।।६०।।

एक समय रजनी के अन्दर, आई घर की याद।
परिवार से मिलना करना, पितु इच्छा आबाद।।६१।।

चारों श्वसुरों से स्वेच्छा, कही जब राजकुमार।
तब तो उन्हें रोकने के हित, बहुत करी मनुहार।।९२।।

नहीं माना तब विदा किया है; दे हयगय धनमाल।
मात–पिता दी सीख सुता को, चलना उत्तम चाल।।९३।।

प्राणेश्वर की आज्ञा पालन, करना बिन विश्राम।
सास–ससुर की सेवा करना, लेना जिनवर नाम।।९४।।

शुभ मोहरत में चारों ही ले, ललनाओं को लार।
पद्मसेन प्रस्थान किया है; करवाते जयकार।।९५।।

अब पीछे की बात बताऊं, कपटी कर कपटाई।
अश्व माल लेकर के भागे, पद्मसेन के भाई।।९६।।

वे तीनों ही जाकर ठहरे, एक नगर के बीच।
कुव्यसनों में खोई पूंजी, कर संगत नर नीच।।९७।।

सब धन खो लौटे घर बाजू, अघ का यही प्रभाव।
देखा आडम्बर युत उनने, पथ में पड़ा पड़ाव।।९८।।

लघु बांधव का है यह वैभव, देख हुवे हैरान।
तीनों सोचे इतने धन की, कहां पर मिली खदान।।९९।।

बांधव कहो कहां पर पाया; आनंद का अंबार।
सरल स्वभावी राजकुंवर, कही बात विस्तार।।१००।।

सुन सब घटना तीनों के डर, उभरी ईर्ष्या आग।
कूप किनारे बैठे जाकर, तन मराल मन काग।।१०१।।

करे प्रशंसा तीनों उसकी, खेले चौपड़ खेल।
देख उसे गफलत में दीना, कूआ मध्य धकेल।।१०२।।

सब यह काम बना गुपचुप से, भेद न कोई पाया।
अधम कार्य ये करके तीनों, तुरत लौटकर आया।।१०३।।

कर दुष्कर्म बने फिर राजी, जो दुष्टातम नीच।
पाप पिण्ड भरता दुःख भोगे, उभयलोक के बीच।।१०४।।

निजपुर बाहिर आकर तीनों, ठहर गये आराम।
सुना भूप ने सुत आये हैं, कर सिद्ध सारा काम।।१०५।।

पुरपति पुर बाहिर आया है, ले पूरा परिवार।
स्वागत करने को पहुँचे हैं, सहस्त्रों ही नर–नार।।१०६।।

एक बड़े मैदान बीच में, मंडप किया तैयार।
यथास्थान सबको बैठाया, कहुं पिछला अधिकार।।१०७।।

पद्मसेन जब पड़ा कूप में, ध्याया नवपद ध्यान।
संकटहारी मंगलकारी, जग में मंत्र प्रधान।।१०८।।

मंत्र प्रभावे उसे मिला है, नीर मध्य आधार।
पुण्य प्रभावे आल न आया; उसके किसी प्रकार।।१०६।।

बीती रात सूर्योदय आया, लेने इक नर नीर।
उसने उसे निकाला बाहिर, कर सुन्दर तदबीर।।११०।।

अद्भुत लक्षण रूप विलोकी, आश्चर्य हुआ अपार।
कहिए पडे कूप में कैसे; उत्तम कुल सिणगार।।१११।।

सारी बात उसे बतलाई, फिर माना उपकार।
वेश किमती तन का भूषण, दे दिया उसे उतार।।११२।।

वेश परिवर्तन कर अपना, कुंवर चला तत्काल।
निज नगरी के बाहिर पहुँचा, नव निर्मित पंडाल।।११३।।

उपस्थित जनता के आगे, बोले राजकुमार।
देखो पूज्य पिता का सपना, होता है साकार।।११४।।

तांबावती आदि चारों से, बोला मोटा भ्राता।
तांम्र, रजत, सोना मुक्ता का, करो वृक्ष अभिजात।।११५।।

यह नहीं आज्ञा निज स्वामी की, है कोई बड़ा प्रपंच।
कहां है प्राणनाथ चारों ने, देखा सारा मंच।।११६।।

मालूम होता इन धूर्तों ने, रचा भयंकर जाल।
अब तो सावधान हो देखें, क्या कर सके सियाल।।११७।।

चारों बैठी रही मौन धर, जैसे सुनी न बात।
उठो शीघ्र सब आज्ञा पालो, कह रहे तीनों भ्रात।।११८।।

कई बार के कहने पर भी, दिया न उनने ध्यान।
लगा ठिकाने राजकुमारों के, दिल का अरमान।।११६।।

कोपा भूपति जनता सारी, हंस–२ करे मखोल।
अब क्या करना सोचे तीनों, धर कर हाथ कपोल।।१२०।।

पद्मसेन अविलोक विचारे, कर मेरे संग जाल।
आये यश लेने को किन्तु, अघ प्रगटा तत्काल।।१२१।।

बात बिगड़ भ्राताओं की, लेना इसे सुधार।
पद्मसेन ने हुक्म दिया है संकेतानुसार।।१२२।।

करो वृक्ष–स्कंध ताम्र, का, तांबावती तैयार।
रुपावती रजत शाखाऐं, रचो शीघ्र विस्तार।।१२३।।

कनकावती करो सोने के, सब पत्ते अभिराम।
मुक्तावली करो अब तुम, फल मुक्तामयी तमाम।।१२४।।

चारों ने सब काम किया है, खा डंडे की मार।
विस्मित हुआ विलोक भूपति, और सभी नरनार।।१२५।।

पद्मसेन की करी प्रशंसा, स्वप्न किया साकार।
राजा ने रैयत के सम्मुख, दिया राज्य का भार।।१२६।।

करके सबसे क्षमा याचना, पृथ्वीसिंह नरेश।
ले संयम कर शुद्ध साधना, पद पाया अखिलेश।।१२७।।

पद्मावती जो थी अपमानित, मिला उसे सम्मान।
पद्मसेन को राज्य मिला, यह स्वकृत पुण्य महान।।१२८।।

रिद्धि सिद्धि मिले पुण्य से, साता मिले शरीर।
मिले धर्म से अविचल आनंद, कथन किया महावीर।।१२६।।

मां बेटे ने श्रावक व्रत किया, समय देख स्वीकार।
अनशन करके गये स्वर्ग में, सिद्ध आगे वननार।।१३०।।

क्रियाशील गुणवंत प्रतापी, हुकमीचंद मुनीश।
बैले–२ किया पारणा, वर्ष अखण्ड इक्कीस।।१३१।।

तस पाटानुपाट पंचमें, मुनीश्वर मन्नालाल।
आगम ज्ञाता कीनी धारण, जिनने यश जयमाल।।१३२।।

जैनाचार्य श्री खूबचंदजी, शोभे षष्टम पाट।
सरल स्वभावी शांत दांत, जिनका आदर्श विराट।।१३३।।

तास कृपा से रचनाकीनी, यह मैंने तैयार।
मुनि हजारीमल कहे होता, धर्म से जय जयकार।।१३४।।

उन्नीसौ ऊपर एकाणु, आचारज के संग।
किया चौमासा मंदसौर में, पाया सुख सुचंग।।१३५।।

१०.अभयकुमार

(नवरंगत में)

अभय कुंवर बुद्धि के सागर, श्रेणित सुत न्यायी गुणवान।
संयम निर्मल, पाल के लिया अनुत्तर विजय विमान।।टेर।।

इन्द्रदत्त व्यवहारी नन्दनी, नंदा रूपम रूप भरी।
श्रेणिक राजा, नगर वेना तट में रहे व्यवहार करी।
अभय कुंवर जब आये गर्भ में, अभय पडह की चित्त धरी।
करी वश करके, भप से मिल सब आशा पूर्ण करी।।१।।

(तर्ज–शेर)

छोटी उमर में कुंवर थे, श्रेणिक तब निज घर गये।
पीछे से अभय कुंवरजी, विद्या कला सब पढ़ गये।।
जब खेलते थे खेल, मांगत दाव लड़कों ने कहा।
चल जा घरे बिन बापके क्या मांगता हमसे यहाँ।।२।।

(तर्ज–द्रोण)

सुन वचन उदासी, चढ़ा क्रोध घर आया।
महाराज भेद माता को जनायाजी।।
उस वक्त मात, प्रीतम के हाथ का पत्र बतायाजी।
बांचते पत्र दिल हर्ष रोम हुलसाने।
महाराज सलाह मिलने की विचारीजी।
माताको साथ ले चले, तुरत संग फौज सवारीजी।।३।।

(तर्ज–तिकड़िया)

चलके आये नंदी ग्राम, अच्छा बाहिर देख आराम।
ठहरे लेके सुन्दर धाम, करते बुद्धि विचार।
श्रेणिक राजा जाने उस वक्त, दिना हुक्म किताय सख्त।
हाकिम ब्राह्मण को कमबख्त, दण्डो लूटो कर दो ख्वार।।४।।
अर्जी कामदार की मानी, करके सलाह कला ये ठानी।
हाथी तोल कर मंगानी, भेजो हुक्म दिया।
मिलके सभी ग्राम लोक, सोचे दिलमें उपयोग।
मिल गया; अभय कुंवर का योग, पत्र नजर किया।।५।।

(तर्ज–गजल)

देके दिलासा नाव में, हस्ती को चढ़ाया।
जल में ले जाय तुरत रंग चिह्न कराया।।
गज को उतार रेती भरके, तोल दिखाया।
राजा के पास भेज, तोल पत्र लिखाया।।६।।

(तर्ज–वशीकरण)

नृप कहे कहो किस तरह तोलके लाया।
कहा एक विदेशी कुंवर हमें समझाया।।
कुछ दिन बाद एक एलक तोल भिजवाया।
घट बढ़ नहीं होवे हुक्म सख्त फरमाया।।७।।

(तर्ज–हिलूर)

सब मिलकेजी, कुंवर के पास चल आवे, तब कला कुंवर बतलावे।
बकरे को जी चंगा माल खिलावे, सिंह पिंजर पास बंधावे।
मंगवायाजी भेज दिया नव धाना, राजा अति अचरज माना।
फिर भेजाजी कुक्कट ये फरमाना, बिन कुक्कट युद्ध सिखाना।।८।।

(तर्ज–दोहा)

कुंवर कहे रख सामने, दर्पण कला सिखाय।
भेज दिया नृप खुश हुआ, फिर एक पत्र लिखाय।।
हुक्म हुआ वर वालु के, डोरे बट भिजवाय।
कुंवर नमूना की लिखी, सुण विस्मित नर राय।।६।।

(तर्ज–सखी छन्द)

एक दिन फिर हुक्म सुनाया, नन्दी ग्राम का कूप मंगाया।
सुन के लोक सभी घबराया, चली अभय कुंवर पै आया।
कुंवर कहे तुम क्यों मन शंको, तुमरो बाल न करसी बांको।
लिखो खेडा का कूप भड़कना, यह नहीं आता इसीसे है लिखना।।
एक कूप को भेजो वहां से, उसे बांध के ठेले यहां से।
वांची पत्र हुआ नृप राजी, जानी अभय कुंवर की बाजी।।१०।।

(तर्ज–मिलत)

बुद्धिवंता के संकट टाले, पर उपकारी कुंवर सुजान।
बिना अग्नि से खीर बनाके, भेजो हुक्म ऐसा वरणा।
सुन घबराने, कुंवर से अर्ज करे कैसा करना।।
अच्छे चांवल भींजा जलमें ले बरतन में भरना।
गल जाने से, उसे सुखे चूने पे जा धरना।।११।।

(तर्ज–शेर)

पीछे से दूध मिलाय के, तैयार कर भेजी त्वर।
चकित चित राजा विचारे, कुंवर बुद्धि से भरा।।
भेजा सुभट को देखिये, कैसा जो लड़का हैं वहाँ।
आते सुभट को देख चढ़ गये, जांबू तरु ऊपर जहां।।१२।।

(तर्ज–द्रोण)

कहे सुभट जम्बू फल पक्के हमें भी खिलाओ,
म. पूछे गरम की शीतलजी।
दो गरमा गरमी कहे मसल के डाले तरु तलजी,
दे फूँक करी रज दूर सुभट फल खावे।
महाराज बहुत क्या है गरमाईजी।
पहचान कुंवर है यही गया दिलमें शरमाईजी।।१३।।

(तर्ज–तिकड़िया)

कीना दिलमें कुंवर ख्याल छलना नगर जन भूपाल,
भाड़े करके रथ विशाल, संग सुभट लिया।
दासी चाकर है भाड़े, रथ के अन्दर एक बैसाड़े,
सरहद वख्त कोल कर ठाडे; दाम चूका दिया।।१४।।

बनके आये जवेरी सेठ, भूषण रत्न मणि के रेठ,
पहुँचे आय जवेरी पेठ, मिले बांह क़ो पसार।
पूछे कहो माल क्या लेना, चाहिये रत्न जड़ित का गहणा।
डब्बे खोल परख लेना, कहे कुंवर विचार।।१५।।

(तर्ज–भजन)

लेना जंचाय माल यह विचार हमारा।
रथ देख कहे सेठ भरोसा है तुम्हारा।।
उठ दूसरी दुकान से ले माल उधारा।
लेके अनुक्रम तुरत नन्दी ग्राम सिधारा।।१६।।

(तर्ज–वशीकरण)

रथ जाने लगा जब दिवस रहा है थोड़ा।
पूछ व्यापारी सेठ कहो किस ठोरा।।
कहे सुभट कौन है सेठ को हम क्या जाने।
दे दाम कौल कर लाया किराणे गहाने।।१७।।

(तर्ज–हिलुर)

यों सुनवेजी व्यापारी हुए उदासी, देख रथ मे एक दासी।
हंस बोलीजी, हम नहीं किसे पिछाना, सून सेठ सभी घबराना।
सब मिलके जी आये पास राजाके, कहे लूट गया ठग आके।
जग हांसीजा घर का माल गुमाया, ठग ऐसा नजर नहीं आया।।१८।।

(तर्ज–दोहा)

पडह बजायो शहर में दोनों हुक्म सुनाय।
जो कोई ठग ठावो करे, सम्माने तस राय।।
कोटवाल बडो गह्यो, धूर्त पकड़ने काज।
प्रसरी पुरमें वारतां हर्षित चित्त महाराज।।१६।।

(तर्ज–सखी छन्द)

सुनी अभय कुंवर जन वाणी, कोटवाल ठगन चित्त ठानी।
संग सुभट लेई पुर आया, सुन्दर वनिता का वेश बनाया।।
नौकरों को बिठाये दूरा, भूषण वसन सजे तन पूरा।
मध्य निशा मांहे, रम झम करती, देखी कातवाल तिहां फिरती।
देखी रूपने अचरज पायो, पूछन बात पास चल आयो।
कौन किस काज कहां को जावा, छोड़ी शंका हमें बतलाओ।।२०।।

(तर्ज–मिलत)

देख क्रिया का रूप पुरुष परिणाम फिरे विसरे शुद्ध ज्ञान।
मधुर वचन से कहे आज मुझको प्रीतम ने अपमानी।।
निकल चली हूँ, खास मरजाने को दिलमें ठानी।
कोटवाल कहे चलो मेरे घर मौज करो तुम मनमानी।
खुशी होय सो, हुक्म कीजै चाकर अपनो कर जानी।।२१।।

(तर्ज–शेर)

घर पास खोड़ा देख के, पूछे कहोजी ये कहां।
चोर व्यभिचारी पकड़ के, पांव भर देते यहां।।
हमको भी तो दिखलाइये, इसमें रह सकता किस तरह।
पग घाल के दिखला दिया, कहे निकल जाता है अरे।।२२।।

(तर्ज–द्रोण)

खीली जमाय के हाथ मोगरी दीनी,
महाराज ठीक मजबूत जमाकेजी।
निज सुभट बुलाय पट बदल कहे गुल शोर मचाकेजी।।
कोई दौड़ो धूर्त को पकड़ लिया खोडे में।
महाराज ! लोक जितने सुन पायाजी।
ले दंडे ताजने हाथ दौड़ पासे चल आयाजी।।२३।।

(तर्ज–तिकडिया)

मिल गये सुभट लोक उस बारे, लाठी मुट्ठी लात प्रहारे,
सिरपे पड़ते है पेजारे, बाजे फड़ा फड़ी।
दु:ख से रोवे जार जार, सुनत कोई नहीं पुकार,
कीना कोतवाल की ख्वार, हो गयी कुन्दी बड़ी।

लेके सुभट आपके साथ, चलके आये रातमरात
प्रजा लेके दीपक हाथ
पहचान लिया, पूछा भेद बहुत शरमाना।
सबने फैल धूर्त का जाना, तोकी घर के अन्दर आना
नारी सेक किया।।२४।।

(तर्ज–गजल)

राजा से सुबह जायके सब हाल गुजारा।
आय न धूर्त हाथ पिटाना है बिचारा।।
राजाने उसी वक्त, बीड़ा पुर में फिराया।
दिल में उमंग धर के कामदार उठाया।।२५।।

(तर्ज–वशीकरण)

नगरी में फैल गई बात कुंवर ने जाणी।
चल आये तुरत अवधूत रूप वर ठानी।।
तन भस्म तिलक सिंदूर कश्यो लंगोटो।
तुम्बी कर चिमटो कडो हाथ में सोटो।।२६।।

(तर्ज–हिलूर)

मुख आगेजी, धुनी रची उस मांही। भस्मी से द्रव्य छिपाई।
रस्ते में जी बैठे दृढ़ आसन ठाई। करे नमस्कार जन आई।
नहीं चाहेजी, भेंट भए निर्लोभा। पसरी पुर में गुन शोभा।
जानी निर्गुनजी द्रव्य उठा चिमटे से। धन माल लुटा रहे ऐसे।।२७।।

(तर्ज–दोहा)

कामदार जब जानियो, सिद्ध पुरुष कोई आय।
करामात घूणी विषे, सेव किया मिल जाय।

अर्धनशा चल आवियो, कर दण्डीत प्रणाम।
पग चम्पी विधी से अर्ज करे सिर नाम।।२८।।

(तर्ज–सखी छन्द)

तुम सिद्ध पुरुष गुन परे, मुझ संकट दुःख कर दूरे।
करामात कुछक बताओ। मुझको निज दास बनाओ।।
अवधूत कहे सुन बच्चे। दुनियादार कोल के कच्चे।
मंत्र साधन नहीं बन आवे। फोगट आके मगज पचावे।
कहे सचिव कही योही करसुं।।
पग हुकूम बिना नहीं धरसूं। पक्का कर अवधूत सुनावे।
विधि पूर्वक मंत्र बतावे।।२६।।

(तर्ज–मिलत)

लोभ पापका बाप लालची, होके ठगते पुरुष महान ।
जोगी कहने से दाढ़ी मूंछ सिर केश मुंडा, मुख शाम करे।
तन भस्मी लगाई, रासभलिण्ड की माल हाथ धरे।
पद्मासन कर जपो बतावे ॐ ह्रीं श्रीं कार वरे।
रुण्ड मुण्ड स्वाहाः। जपो शुद्ध भाव से तुरत सब काज सरे।।३०।।

(तर्ज–शेर)

दिन सवा प्रहर आवे जहाँ तक, मौन कर बैठो यहाँ।
धूनी के सन्मुख देखना; मनको न भटकाना कहाँ।।
राजा प्रजा वश लक्ष्मी होके रहे लौण्डी सभी।
साधन करो तुम मंत्र तब हां रहे नहीं कुछ भी कमी।।३१।।

(तर्ज–द्रोण)

मैं शिव को पूजा चढ़ाय तुर्त आता हूँ,
महाराज सचिव को यों भरमायाजी।

ले वस्त्र भूषण आप ग्राम नन्दी चल आयाजी।
जपे मंत्र अचल मन सचिव हुआ है सवेरा।
महाराज लोक जुड़ गये हजारों जी।
यह कुण यह कुण कर रहे, जरा सन्मुख न निहारे जी।।३२।।

(तर्ज–तिकड़िया)

पूरा जाप किया परधान आया सवा प्रहर दिनमान,
देख नजर उठाकर आन सब हासी करे।
दिलमें कामदार शरमाया, जोगी अभी तक नहीं आया,
जाना ठगने काम बनाया, राते आयो घरे।
नौकर जाके श्रेणिक पास, बीतक करी अरदास,
सुनके आई सब को हांस, मूरख दोनों जने।
राजा भरी सभा में बोले, दोनों ठगा गये हैं भोले,
नहीं है और कोई मुझ ताले, मोसे काम बने।।३३।।

(तर्ज–गजल)

राजा ने दिल गरुर भरे वचन उचारे,
सुनके कुंवर खुश होके नगर मांय पधारे।
ठग को पकड़ने राय गस्त गिर्द फिरे हैं,
कीधो रजक को रूप वस्त्र पोट धरे हैं।।३४।।

(तर्ज–वशीकरण)

कहे ड्योडीवान हुंशियार कौन है आता,
राजा कारज कहूं वसन धोबने जाता।
कौमुदी महोत्सव काज उतावल म्हारे,
नृप महल पास सर उसमें वस्त्र पखारे।।३५।।

(तर्ज–हिलूर)

तूरी चढकेजी, राय फिरे हुशियारे। आते लख रजक पुकारे,
काई दौड़ोजी, ठग पैठा सरवर में, नृप दोड़ा उसी अवसर में।
हंडिया रखजी, कहे ये जल में जाता उसका सिर प्रगट दिखाता,
भरमा गयेजी उतर अश्व से हेटा, करना चाहें ठग से भेंटा।।३६।।

(तर्ज–दोहा)

वस्त्र भूषण अश्व को, रजक आपनी जाण,
देकर खड्ग संभाल के, कूद पड़ा राजान।
पिछे अभय कुंवरजी, हय पर हो असवार,
दौड़ी पास आय के, कहे रहना हुशियार।।३७।।

(तर्ज–सखी छन्द)

ठग सरवर मांहि छिपाना। होगा इधर उसी का आना।
छलबल करके कहेगा हूं राजा। शोभित रूप मेरे सम ताजा।
बेली चाली है मुझसे मिलती। खबरदार करो मत गलती,
लेना पकड़ जाने मत देना, तकलीफ न हो मुझ कहना।
रखना पहरे में सघली राते, हाजिर करना सभा में प्रभाते,
यों कही नन्दी ग्राम चल आवे। सोते सुख भर नींद घुर्रावे।।३८।।

(तर्ज–मिलत)

एकएक से अधिक जगत में, भूल के मत कोई करो गुमान ।
श्रेणिक राजा जल में तैरता जाता धर हिम्मत दिल में,
नीर हिलोरे हांडली आधी, आधी जाती जल में।
राय कह रे निष्ठुर दुष्ट महाधूर्त चोर फिरता छल में,
अब नहीं छोडूं खडग से, मार डालूं इस ही पल में।।३६।।

(तर्ज–शेर)

जाता कहां तू भाग के, हरगिज मैं छोडूंगा नहीं,
यो बोलता तरगया, नजदीक हंडी आ गई।
कर क्रोध मारा खडग, हंडी फूट के टुकड़ा हुआ,
चमका है राजा चित्त में, मुझ को भी धूर्त ठग गया।।४०।।

(तर्ज–द्रोण)

तिर आया बाहर नहीं देखा अश्व धोबी को।
महाराज चला ड्योडी पै आयाजी।
हुशियार सुभट ठग जान पकड़ पहरे में बिठायाजी।
कहे राजा मुझे ठग गया धूर्त सुन भाई।
महाराज मैं हूं श्रेणिक लो देखीजी।
बक–२ मत कर चुप रहे, फजर बिगड़ेगा शेखीजी।।४१।।

(तर्ज–तिकड़िया)

ठगकी करामात पहचानी, समझी बैठ गया चुप ठानी,
मौसम सर्द हवा और पाणी। कोमल काया घणी।
नहीं है ओढन को एक तार, थर थर धूजे तन उस वार,
करता दिलमें सोच विचार, बात कैसी बनी।

ज्यों त्यों गुजर करी है रात, मुश्किल कुशल हुई प्रभात।
ओलख लिया सुभट पुर नाथ, करे फिकर बड़ी।
आया महेल मांही महाराज, सोचे धूर्त सिरताज।
प्रगट करना चाहिये आज, कीनी, कला खड़ी।।४२।।

(तर्ज–गजल)

सूखे कुवे में मुद्री डाल, पडह फिरावे।
ले हाथ में बाहिर रहि कला जो दिखावे।
सन्मान द्रव्य दे उसे प्रधान बनावे।
नगरी के लोक पच रहे पर हाथ ना आवे।।४३।।

(तर्ज–वशीकरण)

यह बात प्रगट जा सुभट कुंवर को सुनाई।
सोचे जाहिर करने को कला उपजाई।
मैं भी प्रसिद्ध होने की धूम मचाई।
रहना न गुप्त चल आये नगर के मांही।।४४।।

(तर्ज–हिलूर)

कुंवर ने जी पास होज खुदवाया।
जल उसमें तुरत भरवाया।
गोबर लेजी, मुद्रिका ऊपर नखाया। तृण जलाके उसे सुखाया।
जल भरता जी तिर ऊपर को आया। कुंवर ने हाथ फैलाया।
ले मुद्रिकाजी पत्र एक लिखवाया। उसमें रख नजर कराया।।४५।।

(तर्ज–दोहा)

परदल जय सुत प्रथम तिथ, परणी गये विसराय।
मृग वध वाद्य सलील हद, जनमें हम सुख माय।।
श्रेष्ट दान मुझ नाम है, भेंटन को उत्पात।
मुझरो लीजे कीजिये, गुन्हा माफ सब तात।।४६।।

(तर्ज–सखी छन्द)

लेइ पत्र नरेश वांचे। भेद समझ देह रोमांचे।
हरषित चित्त मिलन उमायो। दौड़ी कुंवर चरण सिर ठायो।
शिर चूम के अंक बिठायो। देखी नंद परम सुख पायो।
कर आडंबर राणी ने लावे। दस दिन लग महोत्सव ठावे।

दियो माल बुलाय व्यापारी। सन्मानी प्रीति वधारी।
पदवी सचिव कुंवरजी को दीधी। न्याय कीर्ति जगत प्रसिद्धि।
साम दाम दण्ड भेद कला में, कुशल पुन्य तरु के फल जाण।।४७।।



११. सुश्रावक जिनदास-चरित्र

—दोहा—

पार्श्व—पदाम्बुज—मन—मधुप—सौरभ लीन सदाय।
मगन निरन्तर भ्रमत है, दुविधा दूर हटाय।।१।।
ज्यां के शुभ उपदेश से, तिरण भवोदधि तीर।
त्याग और वैराग को, पभणे धारण धी र।।२।।

ढाल १ ली

तर्ज—शिक्षा दे रही जी, हमको रामायण.

श्रावण कर लीजिये जो, प्यारे आगम ज्ञान प्रवीन।।टेर।।

आगम ज्ञान अथाग अनूपम, अक्षय आनन्द रूप।
अतीत, अनागत, वर्तमान में, वर्ते एक अनूप।।१।।

नहीं आस्था उन पै उसका, हैर पूरण दुर्भाग।
ऐसा है दुर्मतिनर उसका, संगत देना त्याग।।२।।

जो सूरज पै धूल उछाले, पड़ै उसी पै आय।
इसी भाँति जन—वचन उथापक, रुले चतुर्गति मांय।।३।।

जिन—वाणी का जो श्रद्धालु, धारे नियम उदार।
कैसा भी संकट सहलेता, डिगता नहीं लिंगार।।४।।

श्री जिनदास विवेकी श्रावक, सुन्दर तस आख्यान।
'मिश्री मुनि' कहे श्रोताजन तुम, सुन लेना धर ध्यान।।५।।

ढाल २ जी

तर्ज–धर्म पै डट जाना.

धर्म से रंग जाना, छोटी बात नहीं है।। टेर।।

शहर शौरिपुर था सुखकारी, जिसकी रौनक अहा ! निराली।
वसते बड़े बड़े व्यौपारी, न्याय से धन पाना।। छोटी.।।१।।

राजा दिल का बड़ा विलाला, उसकी शोभा जग में आला।
करते परजा की प्रतिपाला, मन्त्रीश्वर गुन वाना।। छोटी.।।२।।

श्रावक, श्री जिनदास सयाना, उसका कहाँ लो करें बखाना।
जिसने जीवा–जीव को जाना, दयालू है स्याना।। छोटी.।।३।।

सहायक दुखियों का है पूरा, वो तो सत्य शील में सूरा।
सारे दुर्व्यसनों से दूरा, आन पै मर जाना।। छोटी.।। ४।।

सुन्दर शीलवती सेठानी, भक्ता थी वा सिया समानी।
निर्मल, जरा नहीं अभिमानी, विविध देती दाना।। छोटी.।।५।।

दम्पति एकान्तर तप करते, द्वादश श्रावक के व्रत धरते।
गहरे गुन चुन–चुन के भरते, खजाने धन नाना।। छोटी.।। ६।।

सारा शहर, देश गुन गाते, खाली आते पै नहीं जाते।
सगरे सज्जन जिसे सराते, मुख्य सबने माना।। छोटी.।। ७।।

–दोहा–

धन, तन, जन पुनि धर्म–युत, आन मान अ–समान।
उन सम उनविरिया उठै, अवर सेठ नहिं आन।।१।।

त्यागी बड़ भागी तपी, रागी धर्म–रसाल।
आदर दे अवनीश अति, न्यायी निपुण निहाल।।२।।

ढाल ३ जी

तर्ज--काच की किंवाड़ी मांये लोह खट को.

आँखड़ल्यों रो तारो व्हालो सब जन को।
दान में लुटाते खुले--हाथों धन को।।टेर।।

सेठ सादगी को शहरो, गुणी गमखाऊ गहरो,
लेवे गुरु--भक्ति लहरों, वश राखे मन को।।आं.।।१।।

ज्यों लो दान नहीं देवे, तो लो कण नहीं लेवे,
बिना नियम न रेवे, तन नहीं तन को।।आं.।।२।।

लायक छोटो--सो है लालो, बच्चो हंस--सो दयालो,
हाथों हाथ ही हुलरालो, पक्ष प्यार--पन को।।आं.।।३।।

देव गुरु की है महर, वहै आनन्द की लहर,
सारो सरावे है शहर, कल्पवृच्छ वन को।।आं.।।४।।

करे धर्म की दलाली, सब जीवों की रुखाली,
मन रहे खुशियाली, रंग नाना रन को।।आं.।।५।।

--दोहा--

कही कर्म--गति गहन जिन, पलटत जैसे पौन।
प्रबल जु वेग--प्रवाह को, रोक सके कहो कौन।।१।।

ढाल ४ थी

।।तर्ज--प्रस्ताना से उतरी परी.।।

श्रावकजी की दशा फिरी, आय अचानक विपद परी।।टेर।।

ज्हाजों डूबी सिन्धु मजार, आग लगी जहाँ थे कोठार,
देनेवालों की नियत गिरी।।श्रावक.।।१।।

चारों ओर से हो रहि हानी, सेठ अशुभ दिन लिया पिछानी,
तंग दस्ति आ जबर मिरी।।श्रावक.।।२।।

कारोबार बंध जब करियो, कर्जो नहिं किनको शिर धरियो,
केई मित्र आ अर्ज करी।।श्रावक.।।३।।

म्हां सब थांरा शंक न लावो, लेलो रकम रु विणज बढ़ावो,
कहे सेठ नहिं लूं दमड़ी।।श्रावक.।।४।।

एकान्तर उपवास करावे, नियम लिया सो पूर्ण निभावे,
'मिश्री' कहे तस धन्य घड़ी।।श्रावक.।।५।।

—दोहा—

मुखड़ा पै मुसकान है, दुखड़ा पै ना ध्यान।
दृढ़ता तास निहार के, मिल दे सारा मान।।१।।

ढाल ५ मी
तर्ज-बन्हा उमराव.

पिया म्हारा, अर्ज करूं कर—जोड़,
जिण पै ध्यान दिरावो हो, म्होरा भरतार।।

पिया म्हारा, साधन नहिं कोई ओर,
कीकर गुजर चलावों हो, म्हो.।।१।।
पिया म्हारा, बिक गयो साज समान,
गेहणा गांठा सारा हो।।म्हो.।।

पिया म्हारा, आप पूरा परेशान,
भूखों मर हुवा कारा हो,।।म्हो.।।२।।

पिया म्हारा, लूगो पड़ियो शरीर,
धीरज किण–विध धारू हो, म्हो.।।

पिया म्हारा, अतिथि देखि दिलगीर,
व्हांने किम जिमाडू हो, म्हो.।। ३।।

पिया म्हारा, आप पधारो म्हारे पीर,
मैं छूं सबने व्हाली हो, म्हो.।।

पिया म्हारा, देसी धन, कन, चीर,
मेलेला नहीं खाली हो, म्हो.।। ४।।

पिया म्हारा, इतरो कांई आलोच,
व्हांने आप पिण साज्या हो, म्हो.।।

पिया म्हारा, बनो उद्योगी, तज सोच,
सहाय लेवे बड़ राज्या हो, म्हो.।। ५।।

गौरी म्हारी, ओछी बुधो करी आज,
वेण इसा क्यों आले है, म्होरो घर नार।।

गौरी म्हारी, घर री खोवे लाज,
लागी किणरे चाले है।।म्हो.।। ६।।

गौरी म्हारी, वणी वणी रा सब लोग,
विगड़्यो आँख चुरावे है, म्हो.।।

गौरी म्हारी, देवे ना एक छदाम,
ताना और सुनावे है, म्हो.।। ७।।

गौरी म्हारी, दुःख में धीरज धार,
ए दिन पिण बह जासी है, म्हो०।।

गौरी म्हारी, स्वारथियो संसार,
मेणियों पछै सुणासी है, म्हो.।। ८।।

गौरी म्हारी, मतना मुझे डिगाव,
लाभ नाही सुणलीजे है, म्हो.।।
गौरी म्हारी, कर्मों रो है स्वभाव,
ध्यान उणी पै दीजे है, म्हो.।।६।।

दोहा वाजिंद री राग में

हाँ रे सुन बोली, हे नाथ ! बात क्या कर रहै।
हाँ रे सगो सगों रो साथ सदा ही दे रहै।।
हाँ रे करो परीक्षा राज ताज शिर माहरा।
पीयर केरो प्रेम होवेगा साहरा।।१।।

हाँ रे मत कर जिद हकन्हाक माजनो जावसी।
हाँ रे तूँ गिण दे–दे गाँठ कोड़ी नहीं पावसी।।
हाँ रे तुज मन राखण हेतु जावूँ मैं सासरे।
हाँ रे फिर दीजे मत दोष रहै धन आसरे।।२।।

ढाल ६ ठी

तर्ज–लावणी.

जब सेठ चल्यो ससुराल आप उपवासी २।
वनिता मोदक च्यार बनाया खासी।
होसी पारणो पंथ कंथ परकासी २,
क्यों करे प्रिया तूँ फिकर होनी हो जासी।।१।।

टार सकै कुण ओर गौर तूँ कर रे २,
ओ धन्य धन्य है सेठ धीरज को धर रे।।टेर।।
पाणी पात्र पिण साथ कोथलो साथे २,
ओ पैदल चाल्यो जाय इशारे माथे।

जीवन में यो जोग प्रथम दिखलाते २,
पिण अंजस रत्ती मात्र नहीं वे लाते।।
काँटे भागे रेत लगे ठोकर रे।।ओ.।।२।।

दिन–भर चाल्यो खूब थक्यो अनपारी २,
भूखो प्यासो साथ नहीं असवारी।
अस्त होत दिन–नाथ रात अँधियारी २,
वो पौषो दीनो ठाय भाव शुध धारी।
झूले सम्यक् ज्ञान शान्त–रस सर रे।।ओ.।।३।।

सूर्योदय के होत पौषध व्रत पारी २,
कीवी समायिक शुद्ध दोष सब टारी।
नोकारसि उपरान्त धोवन कर त्यागी २,
करण पारणो, मोदक काढे व्हारी।
दान दियों बिन करूँ असन कीकर रे।।ओ.४।।

हे प्रभो ! दास का नियम आजलो रक्खा २,
मैं सत्य धर्म का मजा खूब ही चक्खा।
हे कृपानाथ ! इण टेम देवो मत धक्का २,
कृपा आपकी होत नियम रहे पक्का।
'मिश्री' सम या टेर सुनी जिनवर रे।।ओ.।।५।।

ढाल ७ मी
तर्ज–जी रे गाड़ी खड़ो रे गुजरात री.

जी रे जितरे जो जंघा–चारण मुनिवरू,
जी रे मास खमण तप वारु हो।
अभिग्रह दिल धारियो, तपस्या को पौषो करियो,
सामायिक करने आवे सामने।।१।।

जी रे च्यार मोदक व्है पल्ले बाँधिया,
जी रे च्यारों स्कंध पालन–वारो हो।
इमरत–सी बोली, प्रतिज्ञा पूरण हो–ली,
तो ले गोचरिया करसूँ पारणो।।२।।

जी रे गगन–गति सूँ हेठा आविया,
जी रे चाली जतनों री ज्यांरी हो।
धर्मों रा धोरी, मोह ममता ने मोड़ी,
गयवर–सा मलपत श्रावक भालिया।।३।।

जी रे हर्ष्यों हियड़ा में हद–बिन सेठियो,
जी रे सनमुख दौड़ी ने आयो हो।
स्तवना कर भारी, लायो निज स्थान तिवारी,
अभिग्रहधारी मुनि किया पारणो।।४।।

–दोहा–

चारों मोदक दान में, दिये सेठ गुणवंत।
संत संचर्‍या व्योम में, सेठ लियो निज पंथ।।१।।

आयो उत्सुक होय ने, निज सासर की पोल।
धुर मिलिया धण रा पिता, ओलख लिया अडोल।।२।।

ढाल ८ मी
तर्ज–दादरा।।

धन रे मिजाज मत राखो रे जिगर में,
राखो रे जिगर में, पड़ोला डगर में।। धन रो.।।टेर।।
धन तो बनावे गोला साथ नहीं देला,
भेला भी कमाया तो भी देवे ना जगर ने।।१।।

धनवानों ने लागे नहीं शिक्षा,
कौन जगावे कोई सूतोड़ा मगर ने।।२।।
दान पुन सामायिक पौषा नहिं होवे,
सुगुरु दर्शन नहीं करे रे फजर में।।३।।

मात, तात, भ्रात, बेटा, भानजी ने भायला,
लोभीड़ा रे एक नहीं आवे रे नजर में।।४।।
गरीबों सूँ जोड़े माया खून व्हाँरो चूँसकर,
तो भी व्हाँ सूँ डोडा चाले गेंद री गजर में।।५।।

धन रा नशां मे सेठ जमाइ न जाणियो,
वाणियो वण्यो है पक्को छातीरो वजर में।।६।।
मुजरो जमाई कियो हाथ दोनां जोड़कर,
सेठ ने मालुम जद हुइ रे हजर में।।७।।

ढाल ६ मी

तर्ज—हां सगीजी ने पेड़ा भावे.

हाँ सेठ बोल्यो है तड़की, भूत खईश जिसो वो भिड़की।
बिन जोगी वो बात कही, बिजली—सी कड़की रे।।सेठ.।।टेर।।

भला जनमिया थे निर्भागी, पूंजी सारी मारगा लागी।
दाग दियो थे सात पीढ़ी ने, वण्या निरागी रे।।सेठ.।।१।।

बुरा दिखावण क्यों इत आया, आछा सारा लोग हँसाया।
दान पुन्न ए कीधोड़ा, कांइ आडा आया रे।।सेठ.।।२।।

कहे जमाई मैं नहिं खाई, किणरी पूँजी मैं न डुबाई,
मेणी री कांइ बात, रहै किम एह रखाई रे।।सेठ.।।३।।

मैं नहीं आतो लाखों बातों, काम चलाऊँ मैं खुद हाथों।
तो भी तनया तोरी भेज्यो, आधी रातो रे।।सेठ.।।४।।

रकम उधार सहायता कारण, मैं आयो छूँ सुनिये वारण।
चारण सी नहीं चाह, खुशमद करूँगा न धारण रे।।सेठ.।।५।।

–दोहा–

जावो आप दुकान पै, मैं आवूँ वन जाय।
म्हो सूँ जो भी बनसक्यो (तो) देसूँ काम बनाय।।१।।

ढाल १० मी
तर्ज–किसपै तूँ गुमराया रे.

स्वारथियों संसार, भरोसो क्या भाई।
गर नहिं हो इतवार, देखलो अजमाई।।टेर।।

चलकर आया खास दुकाने, आदर कुछ भी मिला न व्हाँने,
पैसे किसको पहिचाने,
कुन करे सार सँभार, भले हो जमाई।।स्वा.।।१।।

नींब–तरू–तल बैठक खाना, व्हाँ पै श्रावक आसन ठाना।
नहीं कोई उसको बतलाना,
है पैसे का प्यार अरे दुनियों मांई।।स्वा.।।२।।

इतै सेठजी स्वयं पधारे, लड़कों से वो सलाह विचारे।
आया जमाई घरे अपोंरे,
पूँजी दिवी विगार, भेजा है यहाँ बाई।।स्वा.।।३।।

मदत इसे देनी या नांही, जो इच्छा सो दो बतलाई।
सुन लकड़ों ने कीवी मनाई,

नहीं देने में सार, कहे च्यार।।स्वा.।।४।।

जार, जमाई, जाट, भानजा, रेबारी, सोनार, नागजा।
नट, भट, जूवाबाज, झूठजा,
नहिं माने उपकार, कहा नीति मांही।।स्वा.।।५।।

घर का धन सब हाथों खोया, आधा पीछा कुछ नहिं जोया।
यहाँ पै अब आकर के रोया,
देंगे सो कर छार, माँगेगा फिर आई।।स्वा.।।६।।

सेठ कहे सच्चा है कहना, देने से उलटा दुःख लेना।
चुप्प चाप होकर के रहना,
चला जासी निज द्वार, ढाल मिश्री गाई।।स्वा.।।७।।

—दोहा—

तात, जात की वारता, सुनकर खास मुनीम।
हृदय वेदना; अनुभवी हहो ! स्वार्थ निस्सीम।।१।।

पटक्या कूँची चौपड़ा, लो संभालो सेठ।
अहल गमाया हूं दिवश, करके तोरी वेठ।।२।।

गंजा शीश सँवारना, करे क्लीब का ब्याह।
वैसे शाहा पद आपको, टुक शोभे है नांह।।३।।

ढाल ११ मी
तर्ज—घुड़ला री.

सेठों ! तजो मिजाज, ओ नहीं रेवेला जी २ ।। टेर।।

लाखीणो लायक नर आयो, बड़ो पावणो मन में भायो।
जिसकी रखो न लाज, लगत कहीं केवेला जी २।।१।।

थाँ सरखा नौकर था व्हाँरे, केइ पेट भरता घर लारे।
आज न रह्यो अनाज, खर्च किम स्हेवेला जी २।।२।।

साज देवणो वाजब थाँने, जटे न भोजन पुरस्यो भाणे।
निदेला सब लोक, धिकारा देवेला जी २।।३।।

कुलदेवी ने पूछ लिरावो, वा केवे उतनो ही दिरावो।
बाँधो प्रेम की पाज, नाम जग रेवेला जी २।।४।।

बड़ो गिनायत घरे पधारे, बात समय की हृदय विचारे।
यह है पहिला काज, बुद्धि से वेवेला जी २।।५।।

—दोहा—

जची बात मन सेठ के, बैठो जा सुरी थान।
चोखे चित सूँ पारियो, एकासण तस ध्यान।।१।।

ढाल १२ मी

।। तर्ज—पनजी मूंडे बोल.।।

अम्बा आई रे २, आ आधी—रात रा सेठ बुलाई रे:।।टेर।।

हुयो चाँदणो, गयो अँधारो, दिव्य रूप दरशाई रे।
सेठ ऊठ कर पाँवों पड़ियो, शीश झुकाई रे।।अम्बा.।।१।।

सुरी कहे क्यों याद करी मुज, अड़्यो काम कंइ आई रे।
पिण सुणले पुनवानी थारी, .गई विलाई रे।।अम्बा.।।२।।

पूँजी पेला विले लागसी, इज्जत रेगी नांही रे।
सेठ सुणी थर थर तब धूज्यो,(आ) कंई फुरमाई रे।।अम्बा.।। ३।।

मैं तो आप भरोसे झूँ झूँ, सदा रह्या वरदाई रे।
कोप करो मत, झिल्यो न जावे, सेवक तांई रे।।अम्बा.।। ४।।

माता मो–पर महर राखिये, बालक जाण सदाई रे।
"मिश्री" कहे दिन नहिं तेरा,–कौन सहाई रे।।अम्बा.।। ५।।

—दोहा—

कर न सकूँ मैं मदद कुछ, पून्य गया परवार।
तो भी एक उपाय है, करले धर का प्यार।।१।।

ढाल १३ मी

।।तर्ज–अस्सी रुपैया ले कलदार.

आयो जमाई करले सार, तो बना रहेगा कारोबार।।टेर।।

चार व्रत मारग में देखो, निपजाया सेणो सरदार।।आ.।।१।।
सामायिक, उपवास और सुन, कर पौषध दियो दान उदार।।आ.।।२।।
अशुभ दिहाड़ा पूरा होग्या, अब हो जासी जय जयकार।।आ.।।३।।
याते चौथो हिस्सो उससे, कर नरमाई ले ले सार।।आ.।।४।।
जो दे देवे सो भाग्य योग से, तो सुधरे थारो जमवार।।आ.।।५।।
इतनी कहि देवी गई पाछी, रात गई ऊगो दिनकार।।आ.।। ६।।
ध्यान पार 'मिश्री' घर आयो, भेलो हुवो सभी परिवार।।आ.।। ७।।

—दोहा—

कही सेठ पुत्रों– प्रते, देवी हंदी वाय।
सब कहे दे दो तातजी ! भय मोटो दरशाय।।१।।



ढाल १४ मी

तर्ज-म्हारे घरे पधारो जी २

श्रावक जी बेला को पौषो, पाल समायिक ठाई।
बेनोई बोलावण सारू, आया च्यारों भाई।।१।।

जल्दी घरे पधारो जी क, जल्दी घरे पधारो जी क।
भाभोसा जोवे वाटड़ली म्हाँ, अर्ज गुजारों जी।।टेर।।

सामायिक आणे सूँ कपड़ा,—पहिन साथ में जावे।
सुसराजी सूँ करके मुजरो, ऊभोड़ा, फुरमावे।।जल्दी.।। २।।

क्या आज्ञा है राज प्रकाशी, श्वसुर कहे तिणवारी।
जितरी रकम आपरे च्हावे, ले जावो इणवारी।।जल्दी.।।३।।

मूँगा मोला आप पाहुणा, बाई लाड़की म्हारे।
इण घर में है सीर ठेठरो, दूजा थाँरे लारे।।जल्दी.।।४।।

एक अर्ज है म्हारी छाँने, मन्जूरी कर लीजो।
लाभ लियो मारग में उणरो, चौथो हिस्सो दीजो।। जल्दी.।। ५।।

श्रवण करत जिनदास नयन में, इकदम लाली छाई।
नहिं बोलण रो फेम सेठजी ! आ कांई फुरमाई।।जल्दी.।।६।।

भोजन भक्ती करी न तिल भर, नहिं दीधो सम्मान।
उणरो अमरष मैं नहिं आण्यो, सूँप्यो नहीं मकान।।जल्दी.।। ७।।

हद करदीनी धर्म—बेचणे, मुजने करो तैयार।
रंग ! बढ़ाओ म्हारो माजनो है, थांने धिक्कार।।जल्दी.।। ८।।

म्हारे धन री नहीं चाहना, गाढ़ो करने राखो।
आ नहीं है, कंगाल हो जावो, बोया रा फल चाखो।।जल्दी.।। ६।।

'मिश्री' कहे यो मोटो मानव, इतनी कह कर चाल्यो।
धर्मवीर धीरज मन धारी, रह्यो न किनको पाल्यो।।जल्दी.।।१०।।

—दोहा—

तीखे मन तेलो करी, जाय जमाई जाम।
आडो फिरियो आयके, वह मुनीम तिण ठाम।।१।।

ढाल १५ मी

तर्ज—मत भूलो रे, मत भूलो कदा.

म्हां पै महर करो २, रुको थोड़ासा हूंकारो भरो।।टेर।।

घरे पधारो दास पिछान, पारणो कर, करजो प्रस्थान।। म्हाँ।। १।।
आप लायक तो छूँ नहीं सेठ, तदपि भोजन की लेवो भेंट।। म्हाँ।।२।।
करे जिनदास अर्ज मतिमान, तेला रा कीना है पचखान।। म्हाँ।।३।।
जिणसूँ माफी दो बगशाय, धर्म—राग भरियो मन—मांय।। म्हाँ।।४।।
हु मुनीम री आली आँख, जावतड़ो ने न सकियो झाँक।। म्हाँ।।५।।
तज मुनिमायत स्वयं दुकान, खोल लिवी इसड़ो गुणवान।। म्हाँ।।६।।
चल्यो जिनदास निजी गृह ओर, साँझ समै आयो उण ठौर।। म्हाँ।।७।।
पौषो कर सूतो जिनदास, 'मिश्री' धर्म सब पूरे आस।। म्हाँ।।८।।

—दोहा—

पौषध पारी सरस—मन, दी सामायिक ठाय।
शक्राधिप निज ज्ञान से, देख्यो श्रावक तांय।।१।।

ढाल १६ मी

तर्ज–सूरों ने लागे वचनों रो ताजणो.

सुरपति अवलोक्यो दृढ़ श्रावक भणी, देव सभा में दाख्यो हाल।
कठिन करणी ने रहणी एकसी, दानी निर्मानी परम कृपाल।।१।।
धन धन धन जीवन, विरला वसुधा में श्रावक एहला।।टेर।।
विकट स्थिति में अधुना आगयो, तदपि व्रत पाले निरतीचार।
हिरणागमेषी जावो शीघ्र ही, सेवा बजावो घर कर प्यार।।२।।
अवसर मत चूको, इसड़ी सेवा तो मुश्किल सूँ मिले।।टेर।।
वचन स्वीकारी सुर उत पौंचियो, आई सामायिक पैस्या वसन्न।
खाली हाथों सूँजो घर जावसूँ, विलखो हुयजासी वनिता मन्न।।३।।

–कवित्त–

घर से रवाने जब हुवो थो सासर ओर–
नारी की कथन धार करी नहीं देर मैं।
पौंच्यो उत, करतूत देखली, उठारी सब,
मान नहीं दियो पिन छाय रयो जैर मैं।।
खाली हाथ जासूँ घर बालक निरास होंगे,
कामनी करेजे दुःख होसी हिये हेर मैं।
अशुभ करम जोर तापै नहीं चाले म्हारो,
एक ना उपाय सूझे अहो ! इण वेर में।।१।।

–ढाल चालू–

कंकर री ग्रंथी बांधी सेठजी, चालत सुर शक्ती कर के ताम।
अधर पहुँचायो घर से सन्मुखे, इतनी कर सुरवर जावे ठाम।।४।।

वनिता विलोकी आई साम्हने, सेठ झेलाई ग्रंथी हाथ।
भोजन पेली ग्रन्थी मत खोलजी, दूजी मंजिल में सूतो साथ।।५।।

वनिता विचारी ग्रन्थी देखली, रत्न पचरंगा सब अनमोल।
सारो घर लूँटी लाया सेठजी, दया आणी नहीं हियड़े तोल।।६।।

देणो ओलम्भो भोजन बाद में, रत्न कुँवर ने देकर एक।
बेचण भेज्यो है पास मुनीम रे, देखी मुनीमजी कियो विवेक।।७।।

—दोहा—

किसो कुँवर पुनवान है, जिसो न और जहान।
इसो रत्न घर में मिले, विसो न देख्यो आन।।१।।

ढाल १७ मी

तर्ज— वीरा ! लूम्बा झूम्बा होय आइजो.

कुँवरसा ! रत्न ले जावो, पाछी आ अरज करावो जी।।टेर।।
नहीं सौदागर है इसड़ा, यह रत्न खरीदे जिसड़ा जी।।कुँ.।।१।।
कोई बड़ो सेठियो आसी, वो इणरो मोल चुकासी जी।।कुँ.।।२।।
कहे लाल रत्न यहीं रखना, है आपजुम्मे ही बिकना जी।।कुँ.।।३।।
भोजन समान भिजवाना, नहीं देर जरा करवाना जी।।कुँ.।।४।।
मैं भेजूँ आप पधारो, मुनीम कहे घर प्यारो जी।।कुँ.।।५।।
सामान आया मन च्हाया, सेठानी भोजन बनाया जी।।कुँ.६।।
जा लाल ! तात ले आवो, भोजन ठण्डो न करावो जी।।कुँ.।।७।।
यह ढाल सतरमी सागे, कहे 'मिश्री' सेठ—सा जागे जी।।कुँ.।।८।।

—दोहा—

पुत्र, पिता असनालये, आय गये अविलम्ब।
ठाट देख भोजन तणो, आयो अधिक अचम्ब।।१।।

ढाल १८ मी

तर्ज–ना छेड़ो गाली दूंगी रे.

आ कर रही क्या सेठानी रे, इसको नहिं जरा विचार।।टेर।।

ये कर्ज पराया लाती, मुझको यह माल खिलाती,
नहिं वापिस देन सँगवाती रे, कुण कैसी मुज साहुकार।।ये.।।१।।

भोजन कर देना ठपका, यह सहूर सीखा है कब का,
है देना पराया अबका रे, मुझे बचा बचा किरतार।।ये.।।२।।

भोजन के बाद भवानी, वा पूछ रही मृदु–वानी,
पीहर से क्या सहनानी रे, मुज लाये ही भरतार।।ये.।।३।।

गठरी में माल घना है, वो दीना प्रेम सना है,
सब चाहू जना जना है रे, तुम्हें माने हिय के हार!।ये.।।४।।

सुन बोला सेठ सुज्ञानी, नादान बनी सेठानी,
गठरी पै यह इठलानी रे, इसमें है कंकर भार।।ये.।।५।।

इसके जु भरोसे कर्जा, करके क्यों चाहती हर्जा,
मैं कई दफे तुझे वर्जा रे, नहीं रखती ख्याल लिंगार।।ये.।।६।।

नहीं सुना आजलो ताना, निज गौरव रखा सयाना,
क्या दिल में तैने ठाना रे, हो पति–भक्ता तूँ नार।।ये.।।७।।

–दोहा–

प्यारी पटकी पोटली, प्राणेश्वर लो पेख।
तात दियो धन एतलो, ओलम्बो नहीं एक ।
जीवन में जाणी नहीं, कपट भरी तव
विस्मय है इण वात रो, आज ।।

ढाल १६ मी
तर्ज--गिणगोर री.

प्यारी म्हारी, पीहर ऊपरे इतना मतना पसरो जी।
इतना मतना पसरो म्हारी करी फजीती सुसरो जी।।टेर।।

टको एक दीयो नहीं लाडी ! आडी बाताँ काडी जी।
सूवण ने नहीं जगा समर्पी, आँखों दूणी चाडी जी।।प्या.।।१।।

लोटी भर पाणी नहीं पायो, भोजन री कांई आशा जी।
म्हारो धर्म खरीदण व्हायो, इसड़ा किया तमाशा ही।।प्या.।।२।।

हाथों थारे भोजन जाम्यो, तेलो कर मैं आयो जी।
पाछो पारणो अठे आयने, थारे आँगण पायो जी।।प्या.।।३।।

थांने राजी राखण खातिर, कंकर बाँधी लायो जी।
धर्म प्रतापे रत्न बण्या है, वीतक तुम्हें सुणायो जी।।प्या.।।४।।

साची मान अथवा तूँ झूठी, मैं मिथ्या नहीं भाखी जी।
शासन--रक्षक देख देवता, बात अपोंरी राखी जी।।प्या.।।५।।

सत्य मान सुन्दर कर--जोड़ी, माफी पियु से मांगी जी।
धन्य धन्य है धर्म आपरो, धन्य धर्म रा रागी जी।।प्या.।।६।।

बिन आज्ञा मैं गठरी खोली, एक रत्न ले लीनो जी।
लाल सँगाते मुनीमजी को, रत्न अमोलख दीनो जी।।प्या.।।७।।

सभी बात का आनन्द होग्या, कारोबार बढ़ायो जी।
दान प्रतापे सेठ सहाब रो, सुयश सूर्य सम छायो जी।।प्या.८।।

सारो देश नगर गुण गावे, मिश्री मुनि दर्शावे जी।
आखिर धर्म का फल है मीठा, आगम स्पष्ट सुनावे जी।।प्या.६।।

–दोहा–

दिन पलटत देर न लगे, निश्चय लीजो मान।
तीन दशा इक दिवस में, सूरज तणी सु–जान।।१।।
विद्या तन धन जन पुनी,–होय राज्य को जोर।
टरे न रेखा कर्म की, करलो युक्ति करोड़।।२।।

ढाल २० मी

तर्ज–ख्याल की.

कर्मों रो झोली, इकदम आवे है टाल्यो ना टले।।कर्मों.।।टेर।।
श्रावकजी रे सासरे स–रे, बनी अनोखी बात।
चोर खजानो नृपनो चोर्‍यो, आकर आधी रात जी।।क.।।१।।
वो धन सूँप्यो सेठ ने सरे, चौड़े हुआ दिन चार।
राजा, घर धन जब्त कियो अरु, दीना बार निकार जी।।क.।।२।।
तस्ती दीनी आकरी सरै, गहणा, कपड़ा खोस।
हुकम नहीं कोई भी रखणे रो, नृपनो पूरण रोष जी।।क.।।३।।
अन्न रो आखो नहीं आसनो, कित वाहन री बात।
भूखा प्यासा घणा उदासी, बारे जावे साथ जी।।क.।।४।।
सोचे सभी कठीने जावां, सहारो रह्यो न एक।
बाई सूँ मिल आघा जासों, शल्ला करी सब छेक जी।।क.।।५।।
शहर व्हार श्रावक नी कोठी, सन्मुख मारग चाले।
हीनावस्था सासरियों की, नयनों सेठ निहाले जी।।क.।।६।।
महदाश्चर्य ? अहो ! मन सोची, दौड़ अगाड़ी आया।
आवो, पधारो, मत शर्मावो, थें म्हारे मन भाया जी।।क.।।७।।
देख लायकी जामाता की, लाज्यो सब परिवार।
शाले समय हृदय में 'मिश्री', एह बीसमो ढार जी।।क.।।८।।

—दोहा—

कर खातर, बहु मान दे, अपर हवेली मांय।
डेरा सर्व दिराविया, वस्त्राभूणष तांय।।१।।
भोजन भक्ती करण हित, भामिन से कहि भौन।
सा कहे है किण काम का, दो दाधा पर लौन।।२।।

ढाल २१ मी

तर्ज–मास खमण रो मुनि रे पारणो.

पागलपनो प्यारी तूँ कर रही रे, थारो तो नियम रही है मूल से।
बातों छोटी तो मन सूँ वीसरो रे, शूलों पर खूब बिछावो फूल रे।।१।।
उत्तम मानव रो उत्तम भावना रे, ओछापन दिल में आणे नायरे।।टेर।।
बाई जीमायो सारा साथने रे, आखिर सुणायो यो सन्देश रे।
दिन ओ सुपना में थाँ जाणियो रे, पिण पायो है कर्मों कर पेस रे।।उ.।।२।।
मान अणूँ तो कांइ कामरो रे, सोचोनी हृदय बीच खचीत रे।
खावो खर्चों ने नीती न्याय सूँ रे, धन्धो करोनी होय न चीत रे।।उ.।।३।।
सारा सज्जन तो माफी माँगली रे, नवलो तिण पूर ही कियो निवासरे।
धर्म ओलखियो बाई–योगथी रे, सारों रे वर्ते लील विलास रे।।उ.।।४।।
भार सम्भलायो श्रावक पुत्रने रे, दम्पति आतम–ध्यान रमाय रे।
सुर पद पाया परम प्रमोद सूँ रे, मुक्ति महाविदेह में जाय रे।।उ.।।५।।
कथा सुरंगी श्रावक धर्म पै रे, निर्मित कीनी तर्ज इकीश रे।
लेश्या राशी ने नभ दृग वर्ष में, अगहन तेरस शुकल रवीश रे।।उ.।।६।।
सुगुरु श्री बुधमल कृपया लही रे, ठीकर वास देश मेवाड़ रे।
शुकन कथन सूँ 'मिश्रीमल मुनी' रे, जिनवर आज्ञा शिर पै चाड रे।।उ.।।७।।

१२.'हँश 'वच्छ' कुँवर का चरित्र

पुण्य प्रकाश

—दोहा—

प्रणमूं श्री शासनपती, वर्द्धमान जिनराज।
जंगम तीर्थ सतगुरु, पूर्ण करियो काज ।।१।।
पुण्य बड़ो संसार में, संकट में दे साज।
सब सुख पाया पुण्य से, हंसराज बछराज।।२।।

तर्ज ख्याल की :—

पाया सब सम्पत पूर्व पुण्य से, बछराज कुंवरजी।।टेर।।

जम्बूद्वीप के भरत में सरे पुर पइठाण प्रधान।
वन वाडी करि शोभतो सरे प्रत्यक्ष देव विमान।
सरिता बहे गोदावरी सरे लोक वसे पुण्यवान हो वछ।।१।।

नलवाहन नर देव वहां का खाग त्याग परचंड।
नारि तीनसौ आठ भूपके मानित रयण करण्ड।
बान्धव बावन वीर राय की सेवा करत अखण्ड।।२।।

एक समय सेजां में राजा सूता सुख भर नींद।
सूर्योदय के अवसरे सरे देखा सुपन नरिन्द।
कणियापुर पाटण में पहुँचा आप होयके बीन्द।।३।।

भूप कनक भ्रमकी वरकन्या हंसावली सुनाम।
परण सजोड़े सेज में सरे भोगरह्या आराम।
लोक जुड़्या दरबार में सरे क्यों न पधारे स्वाम।।४।।

तिण अवसर मनकेशर महते जाय जगायो भोप।
जागत नृत तलवार खेंच के धायो करके कोप।
कहां गई प्रिय हंशावली सरे सब सुख किया अलोप।।५।।

मंत्री चिन्ते स्वप्न विलोकी पड़े भरम में भूप।
धीरज धरिये नाथ आपको परणाऊं सद्रूप।
एक माह की अवधि मांगी दोय मास दिया सूंप।।६।।

अकल उपावी मनकेशर ने नगरी के चउंद्वार।
विविध वस्तु संग्रह करीसरे मांडी सत्तु कार।
देश देश का जोगी जंगम मिले अनेक प्रकार।।७।।

पूछ ताछ करता थकांसरे एक विदेशी आया।
तिण कणियापुर हंसमुखी का सारा भेद बताया।
प्रमोदित हो मन्त्री इनको भूप समीपे लाया।।८।।

मिष्टावात मिश्रीवत् सुनके हुआ अधिक आनन्द।
राज भुलाके निज वीरों को सजित हुआ राजिन्द।
सूचक अरु मन्त्री को संग ले किया पयान नरिंद।।६।।

चलते चलते मास तीसरे पहुँचे तिहां नरेश।
स्वर्ग भवन जो नगरी देखी पाम्या हर्ष विशेष।
दरवाजे पे सलखूमालन माला करी प्रवेश।।१०।।

सरस शकुन से रंजित होके नृप मुद्रा बखसाय।
मालिन हर्षित हो दोनों को लेकर निजधर आय।
यहीं रहो महाराज सदा दासी पे करुणा लाय।।११।।

राजा मन्त्री फिरे शहर में मालिन कहें कथन्न।
राज्य सुता अष्टम् चौदश को मारे पुरुष रतन्न।
राज फिरो हो नगर में स, पण करजो तन्न जतन्न।।१२।।

नगर बाहिर देवी कंकाली ताके बली चढ़ाय।
दुखी हुआ सब लोक राय पण रोक सके तसु नांय।
सुन कंपायो भूपती सरे यह तो जबर बलाय।।१३।।

मनकेशर दी धैर्यतासरे आप विराजो य्यांही।
मैं सब तरह उपाय रचीने निश्चै दूं परणाई।
मन्त्री आ देवी को नमनकर पाछे रह्यो लुकाई।।१४।।

सन्ध्या समय पधारी कुंवरी त्रिया पंचसे लार।
धरत पांव मन्दिर में मन्त्री करी जोर ललकार।
हट दुष्टण तूं निकल इहां से नीच कुपातर नार।।१५।।

सुन कुंवरी चमकी मन मांही देवी कोपी आज।
क्या सेवा में कसर पड़ी है धमकाई किस काज।
महर करो मातेश्वरी सरे क्यों हो गई नाराज।।१६।।

तूं हत्यारी पापणीसरे मारया पुरुष प्रधान।
मैं नहीं राजी तुझ भक्ती से निकल निपट नादान।
मुझ आसण जो भींट लिया तो खो बैठेगी प्राण।।१७।।

कर नरमाई कुंवरी बोली सुन माता विरतंत।
मैं पूर्वभव पंखणी सरे वन तरु वास वसंत।
हुआ अग्न उत्पात नीर मिस छोड़ गयो मुझ कंत।।१८।।

मुझसंतति के साथ जली मैं पती सम्भाली नांई।
इस भव पंखी चरित देखि मैं जाती स्मरण पाई।
इस कारण मैं पुरुष घातिनी हो गई इस भवमांई।।१९।।

तूं मरगई जिस बाद हुआ क्या सो भी जाणे हाल।
बड़ी कठिन से नीर लेयके आया पंखी चाल।
तुझ देखी मोहवश ज्वाला में पड़के मरा अकाल।।२०।।

सुनत वचन मूर्छित हो कुंवरी पड़ी धरणी धसकाय।
मुझ कारण प्रीतम जल मरियो मैं क्या जाणुं माय।
अब नहीं मारु हाय कभी मैं किया जबर अन्याय।।२१।।

करके नमन सिधारी कुंवरी प्रगट हुआ परधान।
स्वामी कारण साहस किया माता करिये कल्यान।
तुष्टमान देवी हुई सरे मांग मांग वरदान।।२२।।

इच्छित चित्र करण विधि मांगी दी देवी उसवार।
खुशी होय मनकेशर आके भेट्या नृप चरणार।
दरसाया सब हाल भूप सुन हर्षित हुआ अपार।।२३।।

विविध भांत चित्राम बनाके बैचे मांड दुकान।
हुआ बहुत परसिद्ध बात गई राज सुता के कान।
सखी भेज निज महल बुलाया दिया खूब सन्मान।।२४।।

नर पशु देवी देवता सरे हूबहू रूप लसंत।
लिया मौल कुंवरी फिर बोली सुन चित्रक गुनवंत।
कर चित्रित मुझ महल को स मैं देख्यूं द्रव्य अत्यन्त।।२५।।

भूपति का आदेश लेयकर लग्यो करन चित्राम।
नल दमयन्ती चरित अलेखा लंका–रावण राम।
सुवर्ण मृग लीला लिखीसरे सीता हरण तमाम।।२६।।

पंचाली का हरण पद्मरथ कर पाया संताप।
सरवण रूप बनावियो सरे कावड़ में मां चाप।
कंश वंश विध्वंश हुआ यों कृष्णचन्द्र परताप।।२७।।

सतियों में सिर मौर अन्जना वीर पुत्र हनुमान।
चन्दन अरु मलियागिरी सरे सायर नीर सुजान।
चारों बिछुड़ गये कर्मों वश चित्र लिखा परधान, व.।।२८।।

नेमनाथ तोरण चढ़े सरे पशुओं करी पुकार।
करुणा सागर रथ पलटाया तोड़ा कंकण हार।
राजुल से हुआ मुग्ध गुफा में रह नेमी अणगार, व।।२६।।

हथिनापुर का राज्य खोदिया पांडव बने जुआरी।
तेरह वर्ष विकट दुख भोगा वन में वक्त गुजारी।
कीचक कौरव कुल क्षय कीन्हा नर जिन्दगानी हारी, व.।।३०।।

काशी बीच बेचदी तारा हरिश्चन्द्र अवधीश।
स्वयं श्वपाक सदन पै रहकर नीर भरा निज शीश।
गिरिवर से प्रहलाद गिराया सहाय करी जगदीश, व.।।३१।।

जिनकल्पी मुनि के नैनों से दीन्हा कुशग।
निकाल दूरभागन सासू दिया संकट सुभद्रा पै डाल।
नगरी का दरवाजा खोला मिटा भ्रम्म ततकाल, व.।।३२।।

आये देव स्वर्ग से लेवन मेगरथ का इम्तहान।
खुद काया को काट बचाया पारावत का प्रान।
परम दयालु प्रगट हुवे वो शांतिनाथ भगवान,. व.।।३३।।

परमेष्टिका मन्त्र एक खाने में मन्त्री लाया।
इसी पसाये मैनासुन्दर पति का रोग मिटाया।
श्रेयांस कुंवर ने आदिनाथ को सेलड़ी रस बहराया.व।।३४।।

बन वाड़ी सरवरपुर पाटण पशुगण ऽनेक प्रकार।
पंखी पंखिन घर किया सरे नव पल्लव सहकार।
दावानल रचना रची सरे मनकेशर तिणवार।।३५।।

पानी लेवण गयो पंखियो पीछे मरगई प्यारी।
पंखी आय प्राण तज दीना रचना लिखदी सारी।
लक्ष मोहर बिदा किया अब निरखत राजकुमारी।।३६।।

देख देख हर्षित हो हो कहे चित्रकार गुणवंत।
दावानलपे नजर पड़ी जहां पूर्वभव विरतंत।
यह तो मेरा चरित हाय मुझ कारणे जलियो कंत ।।३७।।

हा ! मुझ प्रीतम पोपट प्यारा थे क्यों बाली देह।
देव बिछोवो डारियो सरे तूं पहुँच्यो किस गेह।
मैं नहीं जाणी बालमा स थें रख्यो अपूर्व नेह।।३८।।

कहां हमारा नाथ बसे मैं जाय मिलूं इसबार।
कंत बिना जीवूं नहीं सरे मरस्यूं धोंस कटार।
बिल बिल करती पड़ी धरणपे शुद्ध न रही लगार।।३९।।

सखियां मिल वायु करे सरे चन्दन लेप लगाय।
मन्त्र तन्त्र के जाण नगर में सबको लिया बुलाय।
किया बहुत उपचार राजवी मूर्छा उत्तरी नांय।।४०।।

एक सखी कहे चित्रकार कर गयो कोई करतूत।
असली में वो डाकणो सरे खील गयो मजबूत।
सुनके नरपति कोपियो सरे जूं कोपे जमदूत।।४१।।

दासी लार सवार होयके जोया घर घर द्वार।
माली मन्दिर मिल गयो सरे खेंच निकाल्यो बहार।
दुष्ट कौन कर्त्तव्य रचा स तूं चल बेगो दरबार ।।४२।।

कुंवरी पे कामण किया सरे थे पापी चण्डाल।
कर उनको झट व्हाल नहीं तो पहुँच गयो तुझकाल।
करुं सचेतन चलो उसे मैं मन्त्र कान में घाल।।४३।।

ले गये कुंवरी पास कान में कही पूर्वभव बात।
सुनत तुर्त ऊठी अरु बोली करके आंश्रुपात।
ये मुझ घटना थें किमजाणी कहां हमारा नाथ।।४४।।

ज्ञान योग मैं जाणूं बहिनी सब तेरो विरतन्त।
पुर पइठाण भूप नलवाहन है तेरो वर कंत ।
त्रिशत साठ अन्तेउरी सरे सुरपति देख लजंत।।४५।।

हंसावली हर्षित हुई सरे दीनी भली बधाई।
मुझे मिलादे उसी साथ मैं गुण भूलूंगी नांई।
धर धीरज उन संग तुझे मैं निश्चय दूं परणाई।।४६।।

एकाएकी भूप को स मैं ले आस्यूं एक मास।
सवरा मण्डप रचना करजो होके अधिक हुलास।
ईश्वर किरपा से सब तेरी सफल फलेगी आश।।४७।।

क्रोड़ द्रव्य दे विदा किया राजा से मिलिया आय।
एक मास में ब्याव आपका हो जासी महाराज।
सुण आणंद्यो महिपति सरे मन्त्री का गुण गाय।।४८।।

कुंवरी को आनन्द में देखी हुलसाया परिवार।
मात पिता से कन्या बोली स्वयंवर करो तय्यार।
देश देशान्तर खबर भेजके तेड़ो राजकुमार।।४६।।

सुन नरपति हर्षित हो तेड्या राजा राजकुमार।
अंग बंग सौरठ कुरुमालव मगध मरुगांधार।
आया मह मण्डान बधाया सबको कर सतकार।।५०।।

मण्डप की रचना रचीसरे कनक भरम नृप आप।
क्षिण क्षिण कुंवरी कर रही सरे नलवाहन का जाप।
हाल पता नहीं नाथका सरे करने लगी विलाप।।५१।।

चित्रकार ने दगा किया है बीतन आया मास।
और किसी को नहीं परणूं मैं करस्यूं जीवन नाश।
इतने में मनकेशर चलके आया कुंवरी पास।।५२।।

नलवाहन को ले आया हूँ खुशी हुवो तुम ब्हैन।
सुन आनन्द से हियो उमगियो भर आया दोइ नैन।
मंडप में दोउ पास रहिजो कुंवरी बोली बैन।।५३।।

राजकुमारी मंजन करके सजिया तन सिनगार।
रमझम करती आई पद्मनी सखियन के परिवार।
भोगी भंवर विलोकने सरे मुर्छित हुये अपार।।५४।।

भाग्य बिना या भामिणी सरे कैसे मिले दयाल।
मंत्री कर संकेत बताया नलवाहन भूपाल।
देख प्रेम पूरित हो सुन्दर छिटकाई वरमाल।।५५।।

सब राजों ने शोर मचाया फूट गई तकदीर।
युद्धारम्भ कर दिया भिड़ा नलवाहन ले शमशीर।
किया पराजय सर्वको सरे एकाएक बडवीर।।५६।।

पूछन से परगट हुआ सरे सब राजा नरमाया।
जोरावर जामात देख नृप रोम रोम हुलसाया।
परणाई हंसावली सरे दीन्हा दत दिल चहाया।।५७।।

विदा होय आया निज नगरी कर उत्सव मंडान।
महल पधारे राजवी सरे देता पुष्कलदान।
सुपने को सच्चा कियासरे मंत्रीमती निधान।।५८।।

चन्द्र सूर्य का स्वप्न देख राणी दो नन्दन जाया।
ज्येष्ठ नाम वछारज दिया लघु हंसराज कहलाया।
सुर नभ में कहे गुप्त राखके; करजो यत्न सवाया।।५९।।

पंच दिवस का पुत्र मायकी गोदी थकी छिनाय।
मनकेशर को सूंप दिया तुम करजो इनकी सहाय।
पंच धाय प्रोहित सुत संग दे दिया विदेश पठाय।।६०।।

बावन वीरा बात न जाने किया कृत्य भूपाल।
माता झूरे झूरणा सरे कब देखूं मुझ लाल।
गजपुर में कुंवरों की कीन्हीं प्रछन्न पणे प्रतिपाल।।६१।।

पन्द्रह वर्ष सुवय में हो गये शूरवीर दुरदन्त।
राणी के आग्रह से राजा बुलवा लिया तुरन्त।
शुभ उत्सव कर लिया नगर में तातचरण परसंत।।६२।।

आश्चर्य हुआ सर्व को ये कब जनमे राजकुमार।
किस कारण अलगा किया रसे सब दिल पड़ा विचार।
प्रेमातुर अति हो रही सरे माय करण को प्यार।।६३।।

प्रात मातके मिलनका सरे लग्न बहुत श्रीकार।
ज्योतिषियों को दान मानदे बिदा किया सरकार।
एक थाल में भोजन किन्हा पिता पुत्र तिहुँ लार।।६४।।

गेंदरत्न दे खेलन भेजा नदी नर्मदा तीर।
एक तरफ रहे दोनों भाई दूसर बावन वीर।
सरत लगाई जो हारे सो पिये चरण का नीर।।६५।।

प्रथम खेल में वीर हार गये जीते दोनों बाल।
बिलखित हुवे सर्व कहे प्रगटे हम छाती पर साल।
शक्ति के मन्दिर में जाके प्रगट करी तत्काल।।६६।।

इन दोनों को मार नहीं तो तेरा करा दुहाल।
मारण से मरता नहीं सरे करदूं देश निकाल।
हंस हाथ से गेंद छीन के देवी दिया उछाल।।६७।।

पड़े फिकर में दोनों भाई अब क्या करें हिसाब।
पिता पूछसी गेंद कहां है देंगे किसो जवाब।
गेन्द गया है राजभवन में लेगा कोइक दाब।।६८।।

हंस कहे तुम यहीं रहो सब मैं लाऊं इण साथ।
वच्छराज कहे क्षिण भर वहां पर रुकमत जाना भ्रात।
मात तीन सो साठ जिन्हों से मत करना कोई बात।।६६।।

राज भवन में हंस सिधायो पहुँच्यो डोडी द्वार।
दासी लख रानी से बोली यो कुण देव कुमार।
रानी रीस करी ललकारा यहां क्यों खड़ा गमार।।७०।।

भूपति देखि ठार मारसी इण कारण जा दूर।
दासी कहे तुम सूरत जैसा झलक रह्या मुख नूर।
दीखे तुम सुत सारिखो सरे निर्णय करो हजूर।।७१।।

देखत ही हंसावली सरे रोम रोम विकसंत।
छूटी स्तन से धार दूध की कांचू कस टूटन्त।
छाती से चिपका लियो सरे मुक्ता मेघ झड़न्त।।७२।।

पन्द्रह वर्ष वियोगणी सरे सब दुख गये विलाय।
वच्छराज कहां रह्या मात परभात मिलेगा आय।
लग्न बिना मिलना नहीं स यूं ज्योतिषी गये बताय।।७३।।

मैं मिलने नहीं आया जननी गेंद सोधने काज।
सीख समर्पो मातजी सरे ज्यूं रह जावे लाज।
प्रेम पोष दी सीख चला आगे इक सुनी अवाज।।७४।।

पूछे कुंवर भवन यह किसका तब दासी उचरन्त।
महारानी लीलावती सरे नृप का प्रेम अत्यन्त।
भीतर जाके हंसकुंवर माता के पाय पड़न्त।।७५।।

रानी देखत रूप मनोहर विकल हुई तिणवार।
भोग अन्ध हुई भामणी सरे नस नस जग्यो विकार।
इस नर साथ विलास होय तब गिनूं सफल अवतार।।७६।।

कुंडल युगल कर्ण में चमके गल बिचव नवसर हार।
सुन्दर बदनी सरस बनी भर मुक्ता मांग लिलार।
कटि मेखल कंचनतणी सरे पग नैवर झणकार।।७७।।

तज आसण सन्मुख आ ऊभी हाव भाव दरसाती।
नव पल्लव ज्यों नैन कुंवर पे सींच रही मदमाती।
कर प्रीति प्राणेश्वर प्यारा हिय से लहर जणाती।।७८।।

हंश कहे माता मैं दीन्हा तेरे चरण में शीश।
क्या अपराध हुआ सो कहिये नहीं दीनी आशीश।
कुणमाता तूं मुझ बालेश्वर जोड़ मेलि जगदीश।।७६।।

कुंवर कहे मैं गेन्द सोधता आया यहां पर चाल।
रानी कहे मुझ पास गेन्द है दिखलाया तत्काल।
करले मुझसे भोग फेर मैं देस्यू गेन्द निकाल।।८०।।

सोच समझकर बोल मात मोटे कुल चढ़े कलंक।
पूज्य पिता की पद्मनी स मुझ माता हुई निशंक।
पुत्र साथ अविचार बोलतां दिल में धरिये शंक।।८१।।

रानी कहे आकार एक है मात वधू सुत बाप।
आदेश्वर अरिहन्त कहाया बहिन परण गये आप।
प्रजन कुंवर ने वेदरवी का समझा नहीं कुछ पाप।।८२।।

तूं क्या मेरे पेट पड़ा है मैं सोकीली माय।
रूप देख तेरा ललचाणी अब क्यों जीव जलाय।
देख दया दुखणी तणी सरे देस्यूं राज दिलाय।।८३।।

कुंवर कोप कर बोला माता अभी झरे मुख नाग।
पश्चिम दिन कर उदय होय अरु चन्द्र बिखेरे आग।
न्याई नर अन्याय कृत्य से करत नहीं अनुराग।।८४।।

|करि निराश देख अब रचना मेलूं यमके तीर।
कुंवर झपट गिंदू ले चलियो रोती रही अखीर।
काय विलूरी आपणी सरे फाड़या चोली चीर।।८५।।

अधो मुखी एकान्त पड़ी जा होय कोप में लाल।
रइणी में राणी के महलां चल आय भूपाल।
देखत ही आश्चर्य हुआ सरे पूछन लागा हाल।।८६।।

तूं पटराणी क्यों रिशाणी कौन किया तृसकार।
सुसराजी तुम अलग रहो मैं हंसकुवर की नार।
सुन चित चमक्यो राजवी सरे यह क्या ? दुष्टाचार ।।८७।।

नाश जाय मुझ माय बाप का परणाई इण स्थान।
तूं मर तेरा पुत्र मरो क्यों बतलाई आन।
पुत्र माय की सेज चढ़े इस कुल की महिमा जान।।८८।।

रानी वचन विचार बोल तूं क्यों दे अभ्याख्यान।
चोली चीर बदन बतलाया देख नाथ धर ध्यान।
नीच नीचता कर गयो सरे छोडूं पल में प्रान।।८९।।

दुष्टन की करतूत समय वश भूप किया विश्वास।
कुल खंपन ये पुत्र नहीं है निर्विवाद बदमास।
भृत्य भेजके मनकेशर को शीघ्र बुलायो पास।।९०।।

हंस वच्छ मम शत्रु आये चढ़े माय की सेज।
क्षिण भर जिन्दा रखिये नाहीं दे यम द्वारे भेज।
सुन चमक्यो महतो मन मांहीं नाथ हुए क्यों तेज।।९१।।

तिरिया चरित अनेक करे प्रभु कुछ तो हिये विचार।
चरिताली झूंठा कर दीना नैवर पड़त सुनार।
प्रबल पुण्य से प्राप्त हुआ ये पुत्ररत्न श्रीकार।।९२।।

राजा राणी पास आय फिर भांत भांत समझाई।
सुन बोली दोनों पुत्रों की जो थें जान बचाई।
तो निश्चय लो जान आज ही मरुं कटारी खाई।।६३।।

सदर हुक्म मारण का राजा दीन्हां मन्त्री ताई।
मन्त्री राणी पास आयके करी बहुत नरमाई।
राणी बोली दोनों के संग तुझ मृत्यु भी आई।।६४।।

सुन धसकायो मन्त्री मनमें अब बोलन नहीं सार।
मर्द नार की करे गुलामी ये उल्टा संसार।
ले परवाना आवियो सरे ज्यां दोउ राजकुमार।।६५।।

मनकेशर मुख हाल सुनत ही दोनों पड़े धरन्न।
नीर बिछोई माछली सरे जैसे तड़फत तन्न।
बार बार मुर्छित हुवे सरे दारुण दुःख मरन्न।।६६।।

बारह रत्न बांध के पल्ले दोय तुरंग दे लार।
दोनों को परदेश निकाल्या मन्त्रीश्वर कर प्यार।
महता के पग मस्तक धरिया तूं जीवन दातार।।६७।।

नयनां जल बरसावता सरे छोड़ंता निश्वास।
हंसावली माता की मनमें रही मिलन की आश।
कर्म किया उल्टे मुख पीछा होता जाय हतास।।६८।।

मनकेसर कहे हिम्मत रक्खो मिलसी सम्पति आय।
दोय कोस पहुंचाके फिरियो लुब्धक के घर जाय।
मृगलोचन लेके रानी को दिया देख हुलसाय।।६६।।

किसतर मारा क्या कुछ बोला हां बोला हंसराज।
रानी की जो कहन मानता तो नहीं करता आज।
रुदन करन रानी लगी स क्यों मारा किया अकाज।।१००।।

मन्त्री सुन समझयो मन मांही सर्व कर्म दुष्टन का।
भांड किया राजा को जग में खुला भेद कपटन का।
अब दोनों बान्धव ने लीन्हा रस्ता विकट वन का।।१०१।।

पर्वत विषम डरावना सरे मानुष नहीं देखाय।
सिंह धडुके जोरसे सरे कायर डर मर जाय।
रोझ सर्प भालू भमे सरे करत पुण्य बल सहाय।।१०२।।

अटवी बहु लंघन करी सरे लगी हंस को प्यास।
घबराया वट वृक्ष देखके क्षिण भर किया निवास।
वच्छ कहे तुम यहीं रहो मैं जल की करुं तलास।।१०३।।

वच्छराज गयो पानी लेवन. जंगल महा विकराल।
इधर उधर जोवत नहीं पाये चढयो वृक्ष की डाल।
सारस शब्द श्रवणकर पहुँच्यो एक सरोवर पाल।।१०४!।

निर्मल देख्यो नीर पान कर सींचन किया शरीर।
कमल पत्र का पोयण भरके ले चलियो बडवीर।
हंसकुंवर तलविल रह्यो सरे जलदी पावो नीर।।१०५.।।

सूतो हाथ शीश तल देके लगा नींद का अंश।
वड कोचर से सर्प निकल के दिया हिये में डंश।
नील वरण तन हो गयो सरे हुओ हंस बिन हंस।।१०६।।

वच्छराज पानी ले आया देख लटकती नाड़।
मूर्छित हो धरणी पड्यो सरे देकर. लम्बी डाड।
तन पछांट झूरे घणो सरे कौन बंधावे गाढ़।।१०७।।

मात श्री के उदर से सरे लीन्हा जन्म सजोड़।
कभी अलग नहीं रह्या लालजी चल आया इस ठोड़।
रे बन्धव तूं कहां गयो सरे मुझको वन में छोड़।।१०८।।

जो सांभलसी मायड़ी सरे मरसी पेट पछाड़।
जननी के मनमें रह जासी करन पुत्र का लाड।
उठ बन्धव पीछा घर चाला अबतो आंख उगाड़।।१०६।।

सेज सुंहाली पोढ़तो सरे पड्यो भूंइ पर वीर।
सरस अद्वार वांछित भोगवतो आज मिला नहीं नीर।
हज्जारां हाजिर हो रहता पण रुठी तकदीर।।११०।।

अहो वन झाड़ पहाड़ सबी तुम देख रहे मुझ ताय।
मैं दुखियारा हो रहा सरे तुम्हें दया नहीं आय।
कर करुणा आओ सब मिल बन्धव को देओ उठाय।।१११।।

बन्धव बल से सदा निडर थो कौन सके मुझ गंज।
रोयां राज मिले नहीं सरे कुछ कम किन्हों रंज।
ले खधें सागर तट आयो बांध्यों बड़ की ब्रंच।।११२।।

दोनों हय ले चालियो सरे आयो कुन्ती सहेर।
तुरंग रत्न को बैंच खरीदूं चोखो चंदन हेर।
बन्धव को दूं दाग जायके. करुं नहीं क्षिण देर।।११३।।

पीछे पंखी गरुड़ आयके बैठो बड की डाल।
गरल पड़त मुख हंस के सरे विष उतर्यो तत्काल।
होय सचेतन देखियो सरे कुण बांध्यो चण्डाल।।११४।।

बन्धव तोड़ उतरियो नीचो सरवर देखा पास।
प्रेम सहित पानी पियासरे मंझन किया हुलास।
चौथमल कहे ग्रन्थ का सरे अर्द्धा हुआ समास।।११५।।

हंस फिरे अब ढूंढतो सरे कहां हमारो भाई।
यम घर जैसा अरण्य में सरे केम गयो छिटकाई।
करत पुकार जोर से वन में पता मिले कछु नांई।।११६।।

किहां गयो रे वीर म्हारा तूं जीवन आधार।
के कोई वनचर भख्यो सरे के पथ भ्रम्म विहार।
दुःख में दुःख उत्पन किया सरे रे विधि तुझ धिक्कार।।११७।।

व्याकुल चित फिरतां बन मांही दीठो तरु तल संत।
ज्ञान चरण दर्शन गुण सागर तपसी महिमा वंत।
विधि से वंदन करके पूछे वीरा को विरतंत।।११८।।

तुझ बंधव कुन्ती गयो सरे चन्दन लेवन काज।
छः महिने में तुझे मिलेगा फरमाया मुनिराज।
अपूर्व आनन्द दिया सरे तुम जग तारन जहाज।।११६।।

नमस्कार कर हंसकुंवर अब कुन्ती नगरी आयो।
पंचक योजन नगरी देखी रोम रोम हुलसायो।
हाट घाट बाजार फिर्‌यो बन्धव को पतो न पायो।।१२०।।

एक कबाड़ी केल्हण मिलियो रखियो पुत्तर करके।
तिनके पांच पुत्र संग ईंधन लाय सदा सिर धरके।
अब सुनिये सब कहुँ हाल मैं वच्छराज कुंवर के।।१२१।।

चन्दन विक्रिय किहां मिले सरे पूछत फिरे वजार।
मम्मण नामा सेठ देखके बुलवायो उसवार।
गादी पर बैठाके पूछा कारण कहा कुमार।।१२२।।

बन्धव झारण कारणे चन्द की पड़ी जरूर।
धर जाऊं तुम पास तुरंग दो बारह रत्न हजूर।
पीछो आके दाम चुकाऊं कर कारज दस्तूर।।१२३।।

चन्दन दीन्हा सेठ कुंवर ले आयो सरवर ठोर।
मुरदा तो दीखे नहीं सरे कौन ले गया चोर।
चारों दिशा विलोकने सरे करने लागा शोर।।१२४।।

को जन्तू भक्षण किया सरे गयो दाग बिन भ्रात।
चरण चिन्ह बन्धव के जैसा दीखे यह क्या बात।
मानुष को दीसे नहीं सरे पूछे किनके साथ।।१२५।।

पीछो आयो कुन्ती नगरी मम्मण सेठ दुवार।
हाल सुनाके चन्दर सुंप्यो दो मुझ रत्न तुखार।
वस्तु अपूर्व कैसे देदूं कीन्हा सेठ विचार।।१२६।।

यो परदेशी बाल अकेलो कोइक दूं शिर आल।
युक्ती रच इस पुरुष का सरे रख लेऊं सब माल।
इस धन कारण हाय अधरमी करे कर्म चण्डाल।।१२७।।

चन्दन लेकर घोड़ा दीन्हा बोला सेठ वचन्न।
ले जाना दो घड़ी बाद घर पड़िया आप रतन्न।
अश्वारुढ़ हो कुंवर चल्यो तब किया शोर दुर्जन्न।।१२८।।

अरे रे दोड़ो यह कोई तसकर मुझ घोड़ा ले जाय।
पुलिस सिपाही आय कुंवर से लीना तुरंग छिनाय।
मुश्की बन्धन बांधने सरे मारण लगा बलाय।।१२९।।

प्रभो कर्म की रचना कैसी कितना संकट और।
पेश किया भोमीश्वर आगे सेठ कहे यह चोर।
अश्व निकाल्या दुष्ट हमारा बचे पुण्य के जोर।।१३०।।

चोर चिन्ह दर्शत नहीं यो नर भाग्यवन्त देखाय।
नगर लोक यों करी अरज नृप के पण आई दाय।
सेठ कहे मत छोड़ो स्वामी इस धाड़ायती तांय।।१३१।।

जो इनको प्रभु मुक्त करोगे लेसी कई घर लूट।
इस कारण धर दो सूली पै सब दुःख जावे छूट।
नहीं तर मैं पुर से निकलूंगा इसमें नहीं को झूंठ।।१३२।।

मम्मण मन राखन दी आज्ञा मारण कारण ईश।
कृष्ण बदन कर खर बैठायो पलाश पत्र धर शीश।
करे रुदन बछराज कुंवर हा ! रुष्ट हुआ जगदीश ।।१३३।।

कौन मरण मुख से अब राखे देख रहे सब लोग।
बल थो मुझ बन्धव को पूर्ण जिनको पड्यो वियोग।
दोष नहीं को सेठ का सरे पूर्व कृत्य फल भोग।।१३४।।

लइ चलिया शमशान लखा बिच कोतवाल की नार।
पति से कहे यह पुरुष रत्न है रखो पुत्र कर प्यार।
बालक हत्या कर दुर्गति का क्यों खोलत हो द्वार।।१३५।।

सुन तिरिया के वचन तुर्तही फेर दिया सब जन्न।
मैं ही अकेला मार देऊंगा घर लाया परछन्न।
निर्भय हो सुख से रहो सरे करने लगा जतन्न।।१३६।।

पुष्पदन्त मम्मण सुत चाल्यो विदेश वाहण बैठ।
भरी अठारह जहाज एक नहीं हिले गई सब चेंट।
ज्योतिषि जन बुलवायने सरे कारण पूछे सेठ।।१३७।।

विबुध कहे कोई थापण दाबी जिनसे चले न जहाज।
इते सुनी तलवर ने निज घर रख लीनो बछराज।
यो पीछे दुःख देगा पापी पहिले करुं इलाज।।१३८।।

लेकर भेंट भूप पा आयो सुन स्वामी मम बात।
कोटवाल उस पुरुष को सरे किया नहीं निर्घात।
निज नन्दन करके घर रखिया धरी हुक्म पै लात।।१३९।।

अब मैं निकलूं नगर छोड़के, के उस नरकों नाथ।
पुष्पदन्त मुझ पुत्र विदेशां जाय दीजिये साथ।
ले तलवर से बछराज को दिया सेठ के हाथ।।१४०।।

जहाज बिठाय पुत्र से बोला आजे इसे डुबोय।
चली जहाज सागर में उतरै लालनद्वीप विलोय।
शुभ नगरी सनकावती सरे देख हर्ष चित होये।।१४१।।

भूप भेंट वैपार चलाया करने लगा कमाई।
अश्व तणो पाण्डू कर थाप्यो वच्छराज के तांई।
ओढ़न कम्बल निरस अहार दे रखे हाजरी मांही।।१४२।।

उस नगरी का न्यायवन्त वर कनकसेण महाराया।
तास नन्दिनी चितरलेखा कंचन वरणी काया।
तुरि चढ़ जाता वच्छराज कुंवरी के नजरां आया।।१४३।।

यो नर रत्न शिरोमणी सरे शुभ लक्षण है अंग।
दासी भेजी भाव जणाया नाथ परण मुझ संग।
जो निराश क़र गये आप शिर करुं प्राण का भंग।।१४४।।

दे आशा आगे चला सरे आनन्द हुआ अपार।
कहे पिता से सवरा मंडप करिये वेग तैयार।
कर रचना मंडप की तेड्या छत्रपती सरदार।।१४५।।

पुष्पदन्त और वच्छराज पण आया मंडप मांय।
कुंवरी कर श्रृंगार सहेलियां संग चाल वहां आय।
सूरत लख कुंवरी तणी सरे आश्चर्य पाया राय।।१४६।।

सब नरपत उलंघन करके वर कीना वच्छराज।
अकल हीण सा कामणी सरे रंच न दीसे लाज।
रंक गले माला ठवी सरे। छोड़ सर्व सरताज।।१४७।।

माला छीनण लगे राजवी कुंवरी बोली बोल।
मैं वर कीन्हा देखने सरे तुम सब फूटे ढोल।
इच्छा हो जिनको परणूंगी क्या तुम लीनी मोल।।१४८।।

कुंवरी परण गई संग इसके दे हथलेवे हाथ।
मुख २ निन्दा करने लागा तब कन्या के तात।
पुष्पदन्त से पूछे यो नर कहां बसे क्या जात।।१४६।।

पुष्पदन्त कहे यह है मेरा तन्तीपाल सईश।
सुनत आग भभकी भूपत के बोला करके रीश।
रे कुल खंपन दुष्टन तेरा फूटा विश्वावीश।।१५०।।

क्या गुण देखा इस खंजर में कुछ तो देती ध्यान।
हजारों नर बीच गंमाया विमल वंश का मान।
जग अपवाद थकी डरुं सरे नहिंतर लेलूं प्रान।।१५१।।

मेरी तर्फ से मन गई पुत्री निकल नगर से बहार।
ले पति को कुंवरी चली सरे निंदे लोक बजार।
बाहिर आ झूंपी कर बसिया भामण अरु भरतार।।१५२।।

कंत कहे सुन कामणी सरे दुःख लीना शिर आप।
अन्न वस्तर बिन तुझे हुवेगा पग पग पे संताप।
के विधि रुष्ट हुई तुमपे या उदय हुआ तुझ पाप।।१५३।।

तूं मुझको चिन्तामणि जाणे मैं हूँ काच समान।
जा पीछी तुझ पिता पास वो परणासी सुलतान।
क्यों दुःख देखे मुझ संग सजनी कहन हमारी मान।।१५४।।

पदमन मूर्छित हो छटकाई सररर आंश्रुधार।
हिरदे भेदक वचन कभी मत बोलो प्राणाधार।
तूं परमेश्वर तुल्य नाथजीं इस भव में भरतार।।१५५।।

पतिवरता प्रिय मिली भाग्य से खुशी हुओ वछराज।
पण राजा की रीश गई नहीं रह्या कलेजा दाज।
चार मुष्टि मल्ल तेड़िया सरे वच्छ मारने काज।।१५६।।

तन मर्दन मिस नश चुका के करजो ढीला अंग।
वंचन शीश धर चल्या अभी कर देस्यां हड्डी भंग।
कुंवर पास आ बोला करिये मर्दन तेल सु चंग।।१५७।।

झूरन लागी राजकुमारी यह परपंच विचार।
कुंवर धीरता दी इतने तो ऊठे योधा चार।
एक एक कर से दो दो को दीन्हा धरती डार।।१५८।।

भयभीत होके गये भूप से यो नर तेज बलिंद।
हम तो जीवित पीछे आये सुन चमक्यो राजिंद।
अश्व फिराते गिर मर जावे तबी कटेगा फंद ।।१५६।।

वन क्रीड़ा करने नृप निकले लोक थोक संग मांही।
नर मारण तुरि लाय सूंपियो वच्छराज के तांही।
भाग्यवंत समझ्यो मुझ मारण कर्त्तव्य रचा अन्याई।।१६०।।

होत सवार पवन वत् बाजी ले चलियो आकाश।
हां अब मरियो सब यों बोले कुंवरी पारही त्राश।
पण युक्ती से अश्व उतारा धरा भूप के पास।।१६१।।

बिलख बदन राजा हुआ सरे यो कोई सुर अवतार।
भाग्य बड़ा कुंवरी तण सरे किया रत्न भरतार।
मन्त्री भेद चित्रलेखा का दीन्हा रंज निवार।।१६२।।

तुम पर रिझ्यो राजवी सरे मत कर सोच लगार।
पुन्यवन्त प्रीतम यह तुझको मिला भाग्य अनुसार।
भेद श्रवण करने की इच्छा कौन वंश दिनकार।।१६३।।

कर जोड़ी कहे कामणी सरे सुन साहब अरदास।
मैं दासी तुम चरण की सरे लोक करत सब हांस।
इस कारण कुल आपका सरे कर दीजे परकाश।।१६४।।

वनिता आग्रह करन लगी तब मांड्यो कुंवर रुदन्न।
क्यों कायरता धरी नाथ मैं सेवुं आप चरन्न।
को जग में आधार हामरे तन धन तुम अर्पन्न।।१६५।।

हे प्यारी मुझ रुदन हुआ है पूर्व बात सम्भाल।
पुर पइठाण नगर सुखकारी नल वाहन भूपाल।
जन्म दिया हंसावली सरे दो नन्दन सम काल।।१६६।।

वच्छराज मुझ नाम हंस लघु विधि ने दिया विदेश।
पन्द्रह वर्ष बाद घर आये किया विमाता द्वेष।
फिर चलिया कर दिया कर्म ने दण्डक वन परवेश।।१६७।।

मैं पानी लेवन गया सरे बन्धव छोड्या प्रान।
चन्दन हित कुन्तीपुरी आया मम्मण सेठ दुकान।
ले चन्दन पीछा गया स तो वीरा का न निशान।।१६८।।

सेठ धरोहर दबन करी मुझ उल्टा चोर बनाया।
पुष्पदन्त तस पुत्र मुझे ले इस नगरी में आया।
तुझ संग मेरा ब्याह हुआ ये सारा जिकर सुनाया।।१६९।।

सुन चरितावली आद्य अंत हुलसित गई राजा पास।
सुन रोमांचित होय पिता पुत्री को ली विश्वास।
दे माफी बड़भाग्यनी सरे मैं दीन्ही बहु त्रास।।१७०।।

पग अलवाणो भूप दौड़ के भेट्या जाय दामाद।
मैं दुःख दीन्हा बहुत आपको क्षमा करो अपराध।
मिला रत्न चिन्तामणी सरे प्रगटे पुण्य अगाध।।१७१।।

पुष्पदन्त को द्रव्य लूटलो हुक्म दिया नृप आप।
कुंवर कहे सुख दुःख कर्मों का कर दीजे प्रभु माफ।
राज धरे मम सम्बन्ध हुआ ये इनका ही परताप।।१७२।।

सिनगारी सनकावती सरे आनन्द घर घर द्वार।
गजारुढ़ कर लीन्हा पुर में देखत लोक बजार।
निरख रही बहु कामण्यां सरे मन मोहन दीदार।।१७३।।

जाचक जनको तुष्टित करके कीन्हा महल निवास।
अर्द्धराज राजा दिया सरे बहु विध दासी दास।
निज भामण के संग भमरजी कर रहे भोग विलास।।१७४।।

बन्धव खटके सदा हिये में क्षणिक न पामे क्षेम।
कुन्ती नगरी किहां रही सरे अब मैं जाऊं केम।
पुष्पदन्त तिण अवसर आके कहे भूप से एम।।१७५।।

अब मैं जाऊं कुश्ती नगरी सुनत कुंवर हुए त्यार।
कहन करी ससुरे घणीसरे मानी नहीं मनुहार।
कान्ता मात पिता समझा को होगई प्रीतम लार।।१७६।।

अष्ट करोड़ का दिया दायजा बैठा जहाज मुझार।
मात पिता कहे पुत्री रहीजे पति आज्ञा शिर धार।
एक भाव सुख दुःख में राखे वो पतिवरता नार।।१७७।।

जहाज चलो दरियाव बीच अब सुनो कर्म का ख्याल।
पुष्पदन्त पदमण को देखी ललचायो चण्डाल।
कुंवर मार के इस महिला से भोगूं भोग रसाल।।१७८।।

पंच दिवस पूर्ण हुआ सरे चलता सिंधू मांय।
रइणी में कहे अहो वच्छ यो मच्छ अजब देखाय।
देखत धक्का मार दुष्ट सागर में दिया गिराय।।१७९।।

नव पद स्मरण करत कुंवरजी चढ्या मगर की पूठ।
शब्द सुनत ही सुन्दरी सरे तत क्षण आई ऊठ।
कंत हाल देखत मुरछाणी लीन्ही विधाता लूट।।१८०।।

मुहूर्त अन्तर हुई सचेतन रोवत झारमझार।
भर भादव ज्यों नेत्र सरे पड़त अखंडित धार।
ए बालम कैसी करी सरे मुझ अबला के लार।।१८१।।

दया करो साहेबा सरे मत जावो छिटकाय।
मैं दुखियारी एकली सरे कौन करेगा सहाय।
तुझ पहले मैं नहीं मरी सरे विधि के घर अन्याय।।१८२।।

कंत विहूणी कामणी सरे कर रही विरह विलाप।
मैं पूर्व भव पापणी सरे कौन कमाया पाप।
गरभ गलाय पुत्र बिछोया दीन्हा सौक सराप।।१८३।।

पर धन दबन किया दुःख दीन्हा दे सति के शिर आल।
पत्र पुष्प फल भूरिया सरे कोड़ी सरवर पाल।
ग्रंथी भेदन कर कोई का लीन्हा द्रव्य निकाल।।१८४।।

के वन दावानल दिया सरे के मैं करी शिकार।
शीलवरत खंडन किया सरे लोपी कुल की कार।
क़े भामण भरतार के सरे दिया बिछोवा डार।।१८५।।

पति बिन अब जीऊं नहीं सरे करुं प्राण का नाश।
चन्द्रलिहा सहेली तब बोली बाइजी रख सहास।
पालो शील धर्म तप साधो कटसी सब दुःख फास।।१८६।।

दमयन्ती पदमावती सरे सीता द्रोपदी नार।
कलावती मलियागिरी तारां एकल रही हौंश्यार।
तो सब सम्पत आ मिली सरे मत कायरता धार।।१८७।।

देव कहे आकाश में सरे सुन सतवन्ती वैन।
वच्छराज जीवित मिल जासी धार हमारी कैन।
तुम पहले कुन्ती नगरी में पहुँचेगा सुख चैन।।१८८।।

सुन सुल्ताणी सुन्दरी सरे पुन्य करेगा सहाय।
पुष्पदन्त बोला सुन प्यारी वच्छ मस्यो जल मायं।
मुझ से प्रीति कर सुख लेणी मो सम दूजा नांय।।१८६।।

मन इच्छित भोजन करो सरे नित्य नई पोशाग।
मुझ संग भोगो भोग सलूणी खुला तुम्हारा भाग।
सुन दुर्जन का वचन सती के लगी कलेजे आग।।१६०।।

मुझ प्रीतम पटक्यो इस पापी देख वक्त का मोल।
चलो आपका घर दिखलाओ छः महिना मत बोल।
सुन रंजित हो लग्यो नाचने कल निकलेगी कोल।।१६१।।

वच्छ मच्छ के पृष्ट बैठ के चलियो साहस धीर।
सात दिवस के अन्तरे सरे पहुँच्यो सायर तीर।
भामण की चिन्ता घणी सरे होय रह्यो दिलगीर।।१६२।।

कुन्ती नगरी बाहिर आके सूतो बागमुझार।
तरुवर नव पल्लव हुआ सरे पुन्य योग उसवार।
जन मुख सुणी बधामणी सरे आई मालन नार।।१६३।।

उपवन निरखन लगी मालनी आनन्द का नहीं पार।
चन्दन वृक्ष तले तिण देखा कुंवर अमर अवतार।
पद्म चिन्ह पग तल में चमके भाग्यवन्त आकार।।१६४।।

चरण चम्पके तुरत जगाया ऐ पुन्यवन्त सुजान।
एकाएकी कौन आपके तन उत्तम अहलान।
निराधार मैं मात एकेला कर्म थकी हैरान।।१६५।।

तब मालन झूरन लगी सरे पूछे कुंवर हवाल।
पांच पुत्र छड्डा मुझ प्रीतम सर्व मरे सम काल।
पुत्र होय तुम रहो हमारे घर में बहु धन माल।।१६६।।

वच्छराज मालन घर आया करती यत्न अनेक।
पण हिरदे तीक्ष्ण लग्यो सरे वनिता को दुःख एक।
अब वरनन चित्तरलेखा का सुनियो धार विवेक।।१९७।।

वाहन आया कुन्ती नगरी खबर गई पुर माय।
सुनत बधाई सेठ सिधायो लोक थोक मिल आय।
क्रोड़ां को धन परणी पदमन देख सर्व हुलसाय।।१९८।।

उत्सव कर लीन्हा निज मन्दिर आये कमा कर जहाज।
पुष्पदंत आगम की सुनली मालन मुख वच्छराज।
मिलजासी मुझ प्रेमदा सरे मिटी सर्व दुःख दाज।।१९९।।

पुष्प कांचुवो कुंवरं बनायो कोरया अक्षर तन्त।
कुशल क्षेम सागर तिर आया वच्छराज तुझ कंत।
दूर नहीं हूँ माननी स़ मैं मालन धरे नचिंत।।२००।।

गजरा हार शीश का भूषण कुंवर बनाया खास।
हर्षित हो मालन ले चाली आई सेठ अवास।
सेठ कहे जा दे कुल वधुको पहुँची कुंवरी पास।।२०१।।

प्रीतम बिन सब त्याग हमारे पुष्पनकाऽलंकार।
ऊंचा नीचा करत मालनी कुंवरी रही निहार।
देख हरुफ प्रियवर का प्यारी उपनो हर्ष अपार।।२०२।।

वालेश्वर मालन घर वसिया नहीं मिलिया मुझ आय।
मोह चक्र में विह्वल हो गई पड़गई मुरछा खाय।
विलख बदन हुई मालनी सरे धूजन लागी काय।।२०३।।

लोक आय कहे डोसी डायन लागी पिंड जरुर।
मालन को मारन लगे सरे पापण रोक फितुर।
पिंड छोड़ तिरिया का नहीं तो करस्यां हड्डी चूर।।२०४।।

उड़ा होश मालन का सोचे जगा भवान्तर पाप।
इतने कुंवरी ऊठ मिटाया मालन का सन्ताप।
माता यह कंचूकुण कीन्हा सो परकासो साफ।।२०५।।

मालन कहे मुझ पुत्र बनाया कान्ता कन्त सुजान।
प्रेम शब्द सति अंकित कीन्हा लेकर नागर पान।
मुर्छित हो रही कमलनी सरे प्राणेश्वर बिन भान।।२०६।।

सुन हिरदेश आप बिन मैंने छोड़ा सरस अहार।
मृतक तुल्य मैं होरही सरे तजा सर्व श्रृंगार।
दुखियारी हूँ नाथ आप बिन सूनो सब संसार।।२०७।।

बांधत बीड़ो बून्द नैन से छटक पड्यो तिण वार।
मालन के हाथे दियासरे ऊपर मुद्रा चार।
सदा मात तुझ पुत्र हाथ का लाजे कंचूहार।।२०८।।

पति पत्नी का पत्र पढ़त ही लगी प्रेम की मार।
निसंशय या सति शिरोमण सब गुण की भण्डार।
अब सुनियो श्रोता चित देके हंस कुंवर अधिकार।।२०९।।

पुष्पदन्त के संग सिधायो बच्छराज परदेश।
तिण अवसर कुन्ती नगरी का कर गया काल नरेश।
पुत्र नहीं अब राज पाट के करिये किनके पेश।।२१०।।

हस्ती मुख माला ठवी सरे फिरता नगर बजार।
कब्बाड़ी केल्हण दरवाजे ऊभा हंसकुमार।
धर माला गल बीच उठाके कीन्हा शीश सवार।।२११।।

हंसराज राजा हुआ सरे फेरी सर्वत आन।
सब जन को वल्लभ हुआ सरे सूरज केसी शान।
विरह बान बन्धव का हिरदे खटक रह्या बलवान।।२१२।।

वच्छराज की कथा कहे को तो देऊं अर्द्धराज।
सात दिवस डोंडी फिरी स तब कुंवरी सुना अवाज।
भेजो मुझको पालखी प में कथा सुनाऊं आज।।२१३।।

सेठ वधु को शीघ्र ले आवो हुक्म दिया सरकार।
पुष्पदन्त हर्षित हुआ सरे मिली विचक्षण नार।
कथा कहेगा राज मिलेगा तुष्ट हुआ करतार।।२१४।।

सेठ सकल परवार से सरे आया सभा मुझार।
नगर निवासी सेठ हजारां जुड्या बीच दरबार।
भूप कहे बोलो मत कोई नहीं तर पड़सी मार।।२१५।।

परदे भीतर प्रेमदासरे बोली सुन राजान।
यादव कुल नरवर नलवाहन पुरवरपुर पईठाण।
तुम जननी हंसावली सरे दो नन्दन कुल भान।।२१६।।

पन्द्रह वर्ष रहे परदेशां पीछा निज घर आया।
सौकमात ने जाल रची नृप मारण हुक्म लगाया।
मनकेशर दो तुरंग सोंपके फिर परदेश पठाया।।२१७।।

भयकारी अटवी में आया प्यास लगी तुम तांय।
बड़ बंधव गये नीर काज तुमको अहि दन्शा आय।
तरु लटका चन्दन ले आया नहीं देखत अकुलाय।।२१८।।

रतन अश्व मम्मण रख लीन्हा दीन्हा उल्टा आल।
सूली देवत राख लिया घर कोटवाल किरपाल।
सुन शाहजी का चहरा बिगड़ा पगट्या थाप पराल।।२१६।।

खलबलिया सब लोक सेठ यो नीच कर्म चण्डाल।
रखे दुष्ट की सौबत मांही अपणा होय कुहाल।
सन्ने सन्ने सभी निकलिया दोनों रह्या कुचाल।।२२०।।

फिर कैसी हुई वच्छराज की सो कहिये विस्तार।
पुष्पदन्त परदेश गया तुम बंधव को लेलार।
सनकावत्ती नगरी में आके लगा करन वैपार।।२२१।।

मैं परणी तुझ भ्रात साथ मुझ राजकुमारी जान।
देख मुझे आशिक हुआ सरे पुष्पदन्त नादान।
सागर के अधबिच प्रीतम को पटक दिया बेईमान।।२२२।।

मुर्छित हो धरणी पड़्यो सरे हंसराज तत्काल।
बन्धव अब कैसे मिले सरे कीन्हा रुदन्न कराल।
ले आओ कोई खड्ग दुष्ट की करदूं आज हलाल।।२२३।।

सेठ पुष्प दोनों घबराये अब नहीं रहे पिरान।
मधुर बचन ललना तब बोली धीरज धर राजान।
क्षेम कुशल है बन्धव तेरा तुझे मिलेगा आन।।२२४।।

व्यर्थ आश्वासन मुझको देवे सर बिच किम जीवंत।
सत्य कहूँ है इस नगर मे मालन घरे वसन्त।
धन्य मात थें सब दुःख भेट्या भावजपद प्रणमन्त।।२२५।।

हंस दौड़ मालन घर हुआ आया भेट्या बन्धव पाय।
इस आनन्द का कथन करण की कवि में शक्ति नांय।
घर घर हुआ बधामणा सरे हर्ष हिये नहीं माय।।२२६।।

कर आडम्बर महलां आया दिया दान बहुमान।
पति पदमन दोनों मिल्या सरे फलिया पुण्य प्रधान।
सुनो जिकर अब सेठ का सरे श्रोताजन धर ध्यान।।२२७।।

सेठ पुत्र दोनों को राजन् सूली हुक्म चढ़ाया।
वच्छराज कहे दोष इसी में नहीं किसी का भाया।
जैसा कर्म किया भव अन्तर तैसा नाच नचाया।।२२८।।

जीवत दान अर्पके करिये फिर जैस दिल च्हाय।
द्रव्य लूट काला मुंह करके खर ऊपर बैठाय।
देश बहार कीन्हा अब झूरे कर्त्तव्य का फल पाय।।२२६।।

माबित भेटन लगी लालसा शीघ्र किया प्रस्तान।
चतुरंग सेना संग लेय के आया पुर पइठान।
डेरा दीन्हा बाग में सरे देख विमल चौगान।।२३०।।

भेजा भृत्य भूप पै आया बोल वचन विराम।
बाग तुम्हारे आके ठहरे वीर पुत्र है नाम।
करलो उसे प्रणाम जायके–के करिये संग्राम।।२३१।।

सुन नरपति कोपातुर होके लै सैना चढ़ आया।
भिड़ गये दोनों पुत्र पिता का पल में पांव डिगाया।
रंज हुआ राजा के दिल में अब तो राज गंवाया।।२३२।।

मनकेशर कहे नाथ आजका दिवस बड़ा श्रीकार।
सोच करण का समय कौनसा आनन्द हुआ अपार।
हंसराज वच्छराज कुंवर ये निरखो नयन पसार।।२३३।।

देख नरेश्वर मग्न हुआ बहु चले मिलन को आप।
पुत्र पिता के पड़े चरण में लीन्हा छाती चांप।
बात सुनी हंसावली सरे दौड़ा करन मिलाप।।२३४।।

मोह कर्म की छाक चढ़ी अति देख हंस वच्छराज।
सौलह वर्षो की विरहानल शान्त हो गई आज।
किहा हिया से प्यार मातजी कर कर मधुर अवाज।।२३५।।

मनकेशर के शीश नमाया पूर्ण तुझ उपकार।
जीवित दान दिया तुम होवें उऋण किस परकार।
करी सजावट नगर की सरे खड़ी कलश ले नार।।२३६।।

धन ज्यों द्रव्य बरसावता सरे आया महल मुझार।
मात तीन सो साठ भी मिल किया दोउ का प्यार।
लीलावती के चरण में सरे झुक झुक किया जुहार।।२३७।।

नरपति कोप्यो इण चरिताली झूंठ रच्यो पाखण्ड।
ले उठ्यो तलवार आज मैं मार करुं शतखण्ड।
दोनों कुंवर नम्रता करके छोड़ायो तस पिण्ड।।२३८।।

नित प्रति नाटक होवता सरे मिला सर्व सुखभोग।
समय देख धारण किया सरे राजा राणी योग।
शिवसुख पाया साश्वतासरे काट कर्म का रोग।।२३६।।

पुष्पवती गुण सुन्दर मदना रत्नवती सुखकार।
परणा दीनी हंसराज को राजकुमारी चार।
गान्धर्व सुर जैसा सुख भोगे दिन दिन जय जयकार।।२४०।।

फिर कालान्तर परवस्या सरे धर्म घोष ऋषिराय।
हंस वच्छ वन्दन गया सरे सुन वाणी हुलसाय।
पूर्वभव पूछा करी सरे तद मुनिवर फरमाय।।२४१।।

रहता धन पुर नगर में सरे दो बान्धव कठियार।
दुःख से करता जीविका सरे पूर्व पाप अपार।
लूखी सूखी भाखरी सरे ले गये वन्न मझार।।२४२।।

भुक्त करन को दोनों बैठे तिण अवसर अणगार।
पन्थ भूल चल आये वहां पै दोनों दे सतकार।
भोजन दीन्हा भावसे सरे कीन्हा भव निस्तार।।२४३।।

उस पुण्योदय तुम हुए सरे नलवाहन के नन्द।
यथा तथ्य निर्णय किया सरे ज्ञानवन्त योगिन्द।
श्रावक वृत धारण किया सरे मेटन भव दुःख फंद।।२४४।।

हंसराज गये कुन्ती नगरी राज करत सुख चैन।
वच्छराज पइठाण प्रजा को पालत है दिन रैन।
जीव दया का पड़ह बजाया दीपाया मग जैन।।२४५।।

अन्त समय आलोचन करके लीन्हा अणसण धार।
सनतकुमार सुरलोक में सरे हुआ देव अवतार।
एक भवान्तर मोक्षनगर का पासी सुख श्रीकार।।२४६।।

भव्यजनों इस चरित्र का सरे ग्रहण करो कुछ सार।
दुःख सुख पूर्व संचित मिलता यह निश्चय अब धार।
तप संयम आराधन करके उतरो भव जल पार।।२४७।।

स्वल्प बुद्धि से किया उदीर्ण देख पुरातन ग्रंथ।
कम ज्यादा का मिथ्या दुष्कृत साक्षी सिद्ध अनन्त।
किया समर्पण चतुर संग के अपनाओ मतिवन्त।।२४८।।

घोर तपस्वी राज मुनिश्वर रोड़ीदासजी महन्त।
तत्पट पूज्य नरसिंघदासजी हुये बहुगुणि सन्त।
मानमलजी मेवाड़ बीच में हो गये महिमावन्त।।२४९।।

पूज्य एकलिंगदास गुरु के लगी चरण में प्रीत।
चौथमल को आप दिखाई जिन मारग की रीत।
ब्यांसी साल हुआ आनन्द से चर्तुमास संजीत।।वच्छराज।।२५०।।

